जैन भारती

नैतिक-आध्यात्मिक विमर्श की पत्रिका | महासभा का गौरवशाली प्रकाशन

मई 2015 • वर्ष 63 • अंक 5 • वार्षिक 200/-

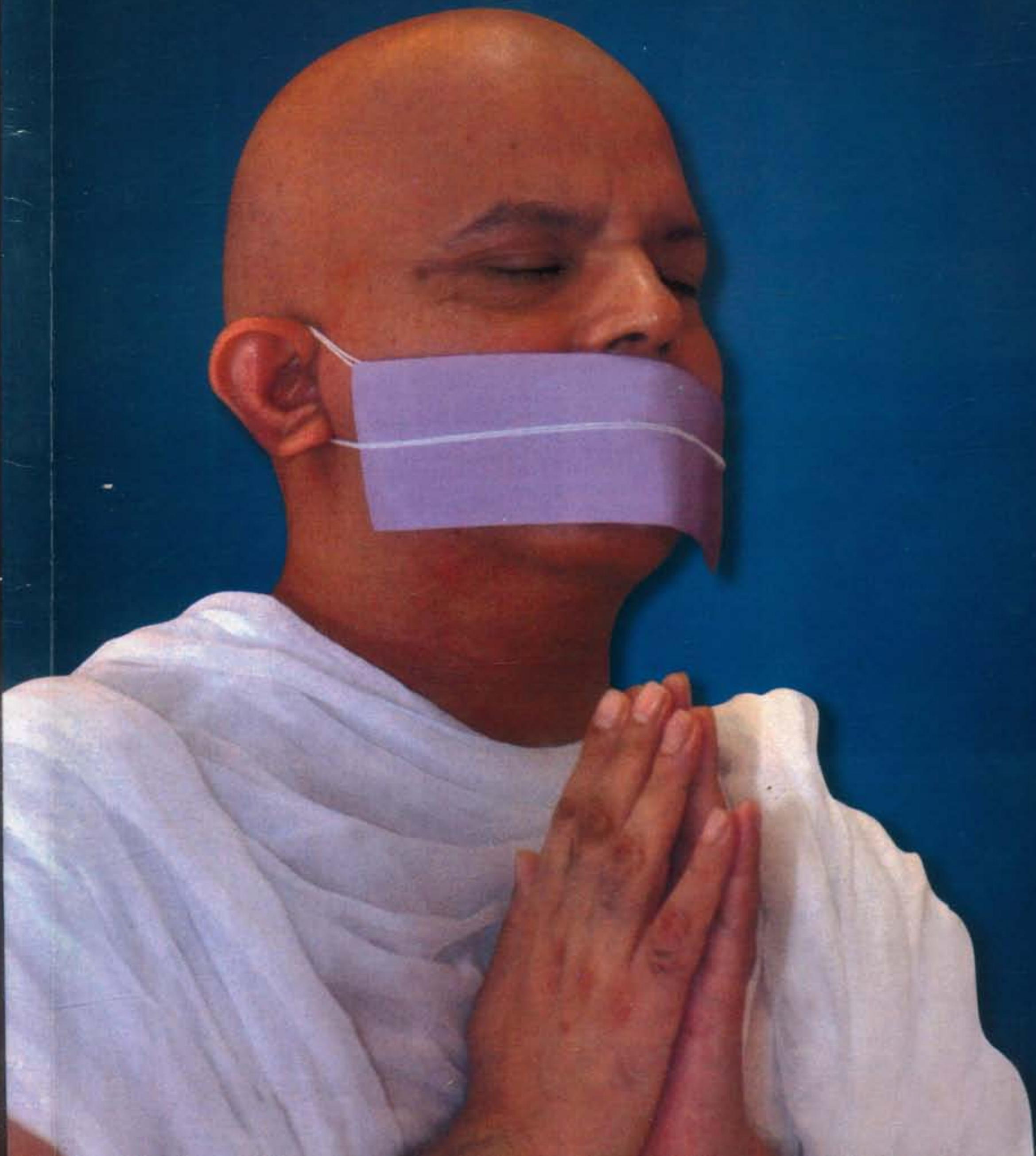

दिशा - परिवर्तन

आदमी बहुत सुनता है, किन्तु सब सुना हुआ दिशा-परिवर्तन करने वाला नहीं होता। कभी-कभी थोड़ा सुना हुआ भी मनुष्य की दिशा बदल देता है और उसका मार्गदर्शन करता है। दिशा-परिवर्तन हो जाने पर मनुष्य की दशा भी परिवर्तित हो जाती है। सम्यक दिशा में प्रयाण करने से लक्ष्य-प्राप्ति सुकर हो जाती है। वही गति श्रेष्ठ होती है, जो सही दिशा में होती है।

एक महानगर में एक नटमण्डली आई। राजसभा में नाटक के समायोजन का निर्णय हुआ। निर्धारित समय पर कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। नटी ने अपूर्व कौशल दिखाया।

रात के तीन प्रहर बीत गए। लोगों की आँखें अभी भी प्यासी थीं। राजा, राजकुमार, राजकुमारी और साधारण जनता – सभी नाटक देखने के इच्छुक थे। परंतु सभी कृपण। नट-समूह को किसी ने कुछ भी उपहार नहीं दिया। प्रोत्साहन के बिना नट और नटी का उत्साह मंद हो गया। थकी हुई नटी ने गाया – 'प्राणेशप्रवर ! अब थक गई हूँ। मैं नाटक से विराम लेना चाहती हूँ। पतिवर ! तुम जानो, क्या करना है ?'

अत्यधिक प्रेमपूर्वक बड़े नट ने कहा – 'प्रिये ! बहुत समय बीत गया, अब थोड़े समय के लिए रंग में भंग मत करो। रात बीतने वाली है, प्रमाद मत करो।'

दर्शकों में एक संन्यासी भी वहाँ बैठा था। वह अपने आसन से उठा और अपना रत्नकम्बल हाथ में लेकर आगे आया और उसने उसे उस नटी को उपहृत कर दिया। इधर युवराज भी उठा। उसने अपना स्वर्णकुण्डल नट को दे दिया। राजकुमारी ने भी अपना बहुमूल्य हार नटी को पहना दिया। यह सब देख राजा तो चकित रह गया। सभी लोग अवाक हो गए।

राजा ने राजकुमार से पूछा – 'मेरी अनुमति के बिना तुमने नट को स्वर्ण कुण्डल कैसे दिया ?'

उसने कहा - 'महाराज ! मैंने उसको क्या दिया ? उसने कितना बड़ा ज्ञान मुझे दिया है। मेरे मन में यह विचार आया कि राजा (पिताजी) को मारकर मैं राजा बन जाऊं। मैंने हत्या की योजना भी बना ली थी, किन्तु नट के 'बहुत समय बीत गया, अब थोड़े समय के लिए रंग में भंग मत करो' – वाक्य ने मेरे मन में परिवर्तन ला दिया। मैंने निर्णय कर लिया कि थोड़े समय के लिए पितृवध का जघन्य कार्य नहीं करूँगा।'

इसी प्रकार राजकुमारी ने कहा - 'मेरे मन में यह विचार था कि मंत्री-पुत्र के साथ चली जाऊँ। आपने मेरी शादी के विषय में कब चिन्ता की ? परन्तु नट का वाक्य सुनकर मैंने उस निर्णय को त्याग दिया।'

इसी प्रकार संन्यासी ने कहा - 'महाराज ! मैं संन्यास छोड़कर घर जाने को तैयार हो गया था, किन्तु नट का वचन सुनकर मेरा मन पुनः संयम में स्थिर हो गया।' कहा गया है –

ईंधन को हिलाने से आग जलती है, छेड़ा गया सांप फन दिखाता है। मनुष्य प्रायः क्षोभ से अपना बड़प्पन प्राप्त करता है।

आचार्य श्री महाश्रमण

वर्ष 63 | मई 2015 | अंक 05

जैन भारती

नैतिक-आध्यात्मिक विमर्श की पत्रिका
महासभा का गौरवशाली प्रकाशन

परामर्शक
डॉ. अवधेश प्रसाद सिंह

प्रधान संपादक
कमल कुमार दुगड़

संपादक
सुरेंद्र कुमार बोरड़

प्रकाशकीय कार्यालय
जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
3, पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट,
कोलकाता - 700 001
फोन : 033-2235 7956 / 2234 3598
फैक्स : 033-2234 3666
इमेल : info@jstmahasabha.org
वेबसाइट : www.jstmahasabha.org

आवरण : **बबलू फोटोग्राफर**

मूल्य : 20/-
सदस्यता शुल्क : वार्षिक 200/-रु.
त्रैवार्षिक 500/- रु.
दसवर्षीय 1500/- रु.

मुद्रक :
आकार अक्षर प्रेस प्रा. लि.
158 लेनिन सरणी, कोलकाता - 700013
मोबाइल : 9903211215 / 9830747699

अनुक्रम

संबोध		
संपादकीय		
परम पावनी वरद छाया		07
कैसे करें गरीबी का उन्मूलन	आचार्य महाप्रज्ञ	12
प्रज्ञा के अनुत्तर पुरुष – आचार्य महाप्रज्ञ	डॉ. मुनि मदन कुमार	17
शब्द साधक : आचार्य महाश्रमण	साध्वी विश्रुतविभा	20
त्राता बन धरा पर आए	साध्वी राकेशकुमारी बायतू	24
जैन परम्परा में अहिंसा का स्वरूप	समणी डॉ. सत्यप्रज्ञा	25
दीन, धर्म और भारतीयता	एस. बशीरुद्दीन	31
महात्मा कनफ्यूशियस		35
जैन दर्शन में छींक विचार	साध्वी डॉ. ललितरेखा खाटू	39
अपमान है आत्मशुद्धि का साधन		41
गीत	डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र	44
माँ, हाथ पकड़ लो	हरिश्चंद्र अष्ठाना 'प्रेम'	45
महासभा संवाद		49
अहिंसा यात्रा अमृत संदेश		55
ज्ञानशाला संवाद		64
सभा संवाद		66
विविध		78

भिक्खु दृष्टांत

हम ऐसा अन्याय नहीं करेंगे

स्वामीजी ने पाली में चतुर्मास किया। उस समय बावेचाजी ने दुकान के मालिक से कहा - 'तुम्हें दुगुना किराया देंगे, तुम यह दुकान हमें दे दो।' तब दुकान के मालिक ने कहा - 'अभी तो वहां स्वामीजी ठहरे हुए हैं, यदि तुम पूरी दुकान को रुपयों से पाट दो तो भी मैं वह तुम्हें नहीं दूंगा। स्वामीजी के विहार कर जाने के बाद भले तुम ले लेना।'

फिर बावेचाजी ने हाकिम जेठमलजी के पास जाकर अपने-अपने घर की चाभियां उनके सामने डाल दीं और कहा - 'या तो यहां भीखणजी रहेंगे या हम रहेंगे।'

तब हाकिम बोले - 'ऐसा अन्याय तो हम नहीं करेंगे। बस्ती में वेश्या और कसाई रहते हैं, उन्हें भी हम नहीं निकालते तो फिर भीखणजी को हम कैसे निकालेंगे।'

हाकिम ने दृष्टांत दिया - 'विजयसिंहजी के राज्य में मोती नाम का बनजारा था। उसके लाख बैल थे, इसलिए वह 'लक्खी बनजारा' कहलाता था। वह नमक लेने के लिए मारवाड़ में आता था। वह लोगों के खेतों को उजाड़ देता। तब जाटों ने राजा विजयसिंहजी के सामने जाकर पुकार की - 'मोती बनजारा हमारे खेतों को उजाड़ देता है।' तब राजाजी ने मोती बनजारे से कहा- 'जाटों के खेतों को मत उजाड़ो।'

तब मोती बोला - 'मैं तो आऊँगा तो ऐसे ही होगा।'

राजाजी ने कहा - 'ऐसे ही होगा तो फिर हमारे देश में मत आना। यदि हमारे पास नमक है तो दूसरे बहुत बनजारे आएंगे। हम किसी को अन्याय नहीं करने देंगे।'

इस दृष्टांत के आधार पर जेठमलजी ने कहा - 'तुम चले जाओगे तो दूसरे व्यापारियों को लाकर बसा देंगे किंतु साधुओं को निकालने का अन्याय हम नहीं करेंगे।'

तब बावेचाजी अपनी-अपनी चाभियां ले अपने-अपने घर चले गए।

अब हम तुम्हें दान नहीं देंगे

कुछ समय बाद बावेचा लोगों ने ब्राह्मणों से कहा - 'हम तुम्हें दान देते हैं, उसमें भीखणजी पाप बतलाते हैं, इसलिए अब हम तुम्हें दान नहीं देंगे।'

तब ब्राह्मण स्वामीजी के पास आकर बोले - 'हमें दान देने में आप पाप बतलाते हैं, इसलिए बावेचा हमें दान नहीं देते हैं।'

तब स्वामीजी ने कहा - 'तुम्हें बावेचा लोग पांच रुपये दें तो भी मुझे मनाही करने का त्याग है।'

तब ब्राह्मणों ने बावेचा लोगों से कहा - 'बापजी ने प्रत्येक ब्राह्मण को पांच-पांच रुपये देने का आदेश दिया है।'

यह सुन बावेचा लोग बहुत लज्जित हुए। ■

समन्वय मंच की अपेक्षा

आचार्य तुलसी

उज्ज्वल भविष्य का निर्माण हिंसा से कभी नहीं होता, यह सही है। उसका एकमात्र साधन अहिंसा और शांति है। अशांति के वातावरण में सृजनात्मक चेतना सो जाती है। इसलिए नव-निर्माण की कल्पना भी कुंठित हो जाती है। यह सच्चाई सर्वमान्य है। फिर भी हिंसा का आवेश इतना विकट हो गया है कि जल का छींटा देने मात्र से उसका उफान शांत नहीं होगा। उसके लिए हमें गंभीर चिंतन और प्रबल पुरुषार्थ करने की जरूरत है।

हमारी दृष्टि में हिंसा की शक्ति को क्षीण करने का एकमात्र उपाय है - अहिंसा का प्रशिक्षण। अहिंसा और शांति की चर्चा अधिक होती है। कोरी चर्चा और सिद्धांत से जीवन का व्यवहार नहीं बदलता अथवा बहुत कम बदलता है। व्यवहार को बदलने के लिए आवश्यक हैं - प्रयोग और प्रशिक्षण। हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि शिक्षा के साथ अहिंसा के प्रशिक्षण को जब तक जोड़ा नहीं जाएगा तब तक अहिंसा के व्यापक विकास की संभावना नहीं की जा सकती।

हम सब मिलकर एक ऐसी पद्धति का निर्माण करें, जिससे अहिंसा कोई आकार ले और आवेशपूर्ण जीवन व्यवहार को बदल दे। इसकी क्रियान्विति में समय लग सकता है पर इसका परिणाम ठोस आएगा।

आज हिंदुस्तान के सामने जो समस्याएं हैं, उनमें मुख्य हैं - जातीयता, प्रांतीयता, सांप्रदायिकता, हिंसा, आतंकवाद, अपहरण, अलगाववादी मनोवृत्ति, गरीबी, आर्थिक विषमता आदि। इनका समाधान कोई एक वर्ग या व्यक्ति नहीं कर सकता। केवल राजनेता, शासक या प्रशासन-तंत्र के लोग नहीं कर सकते। इनका समाधान करने के लिए एक समन्वय मंच की अपेक्षा है, जिसमें सभी वर्गों का प्रतिनिधित्व हो। राजनीति-क्षेत्र के लोग, धर्मगुरु, वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, समाजशास्त्री, शिक्षाशास्त्री आदि एक साथ मिल-बैठकर चिंतन करें। प्रत्येक समस्या के सब पहलुओं पर समग्रता से तटस्थतापूर्वक चिंतन कर राष्ट्र के समक्ष प्रस्तुत किया जाए। उससे एक सचाई प्रकट होगी और जनता को वस्तुस्थिति समझने का अवसर मिलेगा। ■

समस्या आतंकवाद की

आचार्य महाप्रज्ञ

अगर गहरे में जाकर देखें तो पता चलेगा कि विश्व की अर्थव्यवस्था आतंकवाद के लिए बहुत जिम्मेदार है। चालू अर्थव्यवस्था में धनी आदमी और अधिक धनी बन रहा है और गरीब और ज्यादा गरीब बन रहा है। गरीबी रोटी की समस्या तक जा पहुंची है। भूखे आदमी को अच्छे-बुरे किसी भी काम में लगाया जा सकता है।

आतंकवाद और हिंसा में बहुत बड़ा कारण है त्रुटिपूर्ण और न्यायरहित अर्थव्यवस्था। हिंदुस्तान की ही नहीं, पूरे जगत में ऐसी अर्थव्यवस्था चल रही है। आंकड़े बता रहे हैं कि अमीर-गरीब का अनुपात लगातार बढ़ता जा रहा है। पत्र-पत्रिकाओं में दुनिया के अमीरों का, उनकी तस्वीरों के साथ क्रमवार विवरण छपता है। लेकिन दुनिया में गरीबों का क्रमवार नाम नहीं आता। दुनिया का सबसे ज्यादा गरीब आदमी कौन है? क्या कोई बता सकता है? इस मामले में बड़ी प्रतिस्पर्धा है। ऐसे-ऐसे गरीब मिल जाएंगे, जो घोर नारकीय जीवन बिता रहे हैं। जिन्हें जीवन चलाने के लिए आवश्यक भोजन-पानी भी प्रतिदिन सुलभ नहीं हो रहा है। रोटी-पानी के अभाव में दम तोड़ने वाले लोगों की सूची कभी नहीं आई और शायद आएगी भी नहीं। क्योंकि भुखमरी से मरने वाले लोगों के आंकड़े राज्य सरकारें दबाती हैं। उनका हरसंभव प्रयत्न रहता है कि इस तरह की बातें कभी बाहर न जाएं। इसका तात्पर्य यह है कि ऐसा कोई चक्र चल रहा है, जो हिंसा और आतंकवाद को बढ़ाने में अपनी प्रमुख भूमिका निभा रहे है।

हिंसा और आतंक के अनेक कारण हैं। इसके भौगोलिक कारण हैं, राजनीतिक कारण हैं, सामाजिक कारण हैं और परिस्थितिजन्य कारण भी हैं। इसलिए इस विषय पर एक गहन अध्ययन की जरूरत है। आतंक और कुछ नहीं है, जो योजनाबद्ध हिंसा है, वही आतंक है। यह क्यों हो रहा है? इसका स्थायी रूप से समाधान खोजने के लिए निरंतर इस पर चिंतन की जरूरत है।

इस पर गहन सामुदायिक चिंतन हो, वैश्विक चिंतन हो कि इस समस्या को कैसे सुलझाएं। बड़े-बड़े राष्ट्राध्यक्ष इकट्ठे होते हैं। आतंकवाद को समाप्त करने की घोषणाएं होती हैं और वे कार्य रूप में परिणित नहीं होती, मात्र घोषणा तक ही सीमित रह जाती हैं। केवल घोषणा से समाधान नहीं होने वाला है। ■

संपादकीय

जिस विराट प्रकृति की गोद में मानव अपने जीवन का रस प्राप्त करता है, जिसकी क्रोड़ में खेलकर वह बड़ा होता है, जिसके आलोक से वह अपने जीवन की आभा प्राप्त करता है, जिसकी उष्णता से वह अपनी ऊर्जा प्राप्त करता है, जिसके जल से उसका प्राण और अन्न से शरीर संपोषित होता है, जिसके गगन-भेदी रहस्य-प्रासाद के दरवाजों से बाहर निकल कर शब्द-गंध-वर्ण-भाव के दूत मानव चेतना को सर्वथा जागृत करते हैं, उसी प्रकृति के रुष्ट होने पर कैसा अघटन घटता है, कैसी विडंबनाएँ आती हैं और मानव कितना लाचार और असहाय हो जाता है, इसका साक्षात प्रमाण 25 अप्रैल, 2015 को नेपाल में आए भयंकर भूकंप से मिलता है।

नेपाल में भूकंप की तबाही इतनी व्यापक पैमाने पर थी कि नेपाल और उसके आसपास के देश में चतुर्दिक तबाही मच गई। उसके प्रकोप से मानवता कराह उठी। हजारों लोगों की मौत और लाखों लोगों की आहतावस्था देखकर हर संवेदनशील व्यक्ति का हृदय करुणा से कराह उठा। वह एक ऐसी दशा थी कि पत्थर भी पिघल जाए और वज्र का हृदय भी टुकड़े-टुकड़े हो जाए। नेपाल में चारों ओर हाहाकार, क्रंदन, आर्तनाद और मर्मवेधी चीत्कार सुनाई पड़ रही थी। किसी को कहीं कुछ सूझ नहीं रहा था। आसपास के सारे रमणीक महल, नगर, स्थानक खंडहर बन गए थे। वहां के अनन्त वैभव, अपार ऐश्वर्य सब भूकंप की एक चोट से धराशायी हो गए। लोग इस अचानक आए विपदा से उबरने की कोशिश कर रहे होते कि फिर से दूसरा आघात आ जाता था। वे एक दुख रूपी समुद्र को पार नहीं कर पाते थे कि दूसरा दुखसागर सामने आ जाता था। बड़ी विकट स्थिति थी। बहुत सारे लोग कालकवलित हो चुके थे। बचे हुए लोग अपने प्रियजनों के लिए शोक कर रहे थे और संवेदनशील व्यक्ति दूसरों के असहनीय कष्ट को देखकर करुणा से भावविह्वल हो रहे थे। सचमुच जिस प्रकृति से जीवन मिलता है वही जब जीवनघाती हो जाए तो किसका सहारा लिया जाए।

लेकिन मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो हर स्थिति का मुकाबला करने का साहस रखता है। वह विकट से विकट स्थिति में भी अपना धैर्य नहीं खोता। अपने पहाड़ जैसे दुख को तिनके-सा समझते हुए दूसरों के तिनके समान दुख को पहाड़ मानता है और उसे दूर करने हेतु हर संभव प्रयास करता है। क्योंकि मृत्यु का आघात जिस करुणा के स्रोत को उद्वेलित करता है, वह करुणा ही सबसे बड़ी मानवीय निधि बनकर सहायता करने आ जाती है।

एक तरफ प्रकृति का प्रकोप तो दूसरी तरफ मानवता के मसीहा तेरापंथ धर्मसंघ के परम पावन आचार्य श्री महाश्रमण! भूकंप से धरती के साथ-साथ आचार्यवर का शुभ शरीर भी दोलायमान था, किंतु उनका मन अप्रकंपित, धीर और संयमित बना हुआ था। उन्होंने अपनी परवाह न करके पूरे संघ, समाज और मानवता के हितचिंतन में स्वयं को निवेशित किया और सबके प्रति मंगलकामनाएँ अभिव्यक्त कीं।

पूज्यप्रवर ने तेरापंथ समाज और महासभा सहित सभी तेरापंथी संगठनों को इस विकट घड़ी में मानवता की सेवा के लिए स्वयं को नियोजित करने तथा तन-मन-धन से भूकंप पीड़ितों को राहत पहुँचाने का पाथेय दिया। 3 मई, 2015 को तेरापंथ विकास परिषद ने आपदा राहत में सहयोग के संचालन का संपूर्ण दायित्व महासभा को प्रदान किया। परन्तु सभी केंद्रीय संस्थाओं की सक्रियता को ध्यान में रखते हुए 8 मई, 2015 को सभी संस्थाओं को राहत कार्य में सहयोग एवं योगदान करने हेतु स्वतंत्र कर दिया। महासभा नेपाल की पीड़ित मानवता की आपातकालीन सहायता के लिए तत्पर हो उठी। उसने नेपाल में तत्काल राहत सामग्री का प्रेषण किया। मानव सेवामूलक संस्थान जय तुलसी फाउण्डेशन द्वारा नेपाल के प्रधानमंत्री राहत कोष में किए जानेवाले संभावित सहयोग करने की जानकारी के तुरंत पश्चात महासभा और देश-विदेश में स्थित उसकी लगभग 551 सभाएं मानवहित के इस महान यज्ञ में अंशदान हेतु अपनी सर्वशक्ति से कार्य में जुट गईं। महासभा द्वारा संघ और समाज हित में किए गए कार्यों के लगभग 102 वर्षों के गौरवशाली इतिहास को देखते हुए तेरापंथ समाज का बच्चा-बच्चा जागरूक हो उठा है। अन्य समाज के लोग भी इस कार्य में महासभा के साथ योगभूत बन रहे हैं।

सभी सहयोगियों को जितना धन्यवाद दिया जाए वह कम है। यह जानते हुए भी कि प्रत्येक मानव का मानवता के प्रति यह परम दायित्व है, फिर भी धन्यवाद और आभार देने से हम स्वयं को रोक नहीं पा रहे हैं।

समाज की अन्य संस्थाओं मुख्यतः अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम आदि द्वारा चल चिकित्सालय के माध्यम से घायलों का उपचार के साथ-साथ कार्यकर्ताओं द्वारा खाद्य सामग्री के वितरण आदि के कार्य भी तत्परतापूर्वक किए जा रहे हैं।

लेकिन बहुत बड़ी संख्या में हताहत एवं पीड़ित लोगों की सेवा एक बहुत बड़ी जिम्मेवारी है। हजारों उजड़े घरों, स्कूलों, चिकित्सा केंद्रों एवं अन्य भवनों के नवनिर्माण का कार्य बहुत ही चुनौतीपूर्ण है। इसके लिए समुचित संसाधनों की आवश्यकता है। यह कार्य अत्यंत विशाल है, तथापि संपूर्ण समाज की समर्पित सहभागिता से इस पुनर्निर्माण के कार्य को पूरा करना और इसके लिए तेरापंथ समाज की सुदृढ़ क्षमता का सुनियोजन करना महासभा की जिम्मेवारी है, जिसके लिए वह गुरुकृपा और उनके आशीर्वाद से प्रतिबद्ध एवं कृतसंकल्प है।

महासभा द्वारा राहतकोष हेतु अर्थसंग्रह किया जा रहा है जिसे इस कार्य हेतु नियोजित किया जाएगा। संपूर्ण तेरापंथ समाज से निवेदन है कि वह अपने क्षेत्र के श्रावक समाज की एक बैठक बुलाकर प्राकृतिक आपदा में पीड़ित परिवारों को राहत पहुंचाने हेतु विचार-विमर्श करे और यथासंभव सहयोग करे।

हमारे लिए परम आह्लाद का विषय है कि आराध्य प्रवर आचार्य श्री महाश्रमण जी ससंघ काठमांडू में सुखसाता पूर्वक विराजमान हैं। आपदा की इस घड़ी में भी यह आत्मतोष का विषय है कि पूज्यप्रवर के आध्यात्मिक सुरक्षा कवच में समस्त चारित्रात्मा सुरक्षित एवं स्वस्थ हैं। हमारे साधर्मिक नेपाल में प्रवासित एवं विभिन्न क्षेत्रों से आगत समस्त भाई-बहन भी पूर्णतः निरापद हैं।

मुझे विश्वास है कि संपूर्ण तेरापंथी समाज भूकंप पीड़ितों की सेवा के इस महान यज्ञ में अपनी आहुति देकर मानवता के हितैषी होने का अपना दावा सिद्ध करेगा।

वह शरीर क्या जिससे
जग का कोई भी उपकार न हो।
वृथा जन्म उस नर का
जिसके मन में दया-विचार न हो।

कमल कुमार दुगड़

नेपाल में आए प्रलयंकारी भूकंप के संदर्भ में विशेष

25 अप्रैल, 2015 को प्रकृति अपने सहज स्वभाव को भूलकर अचानक क्रूर हो उठी थी। उसने अपनी उग्रता, निष्ठुरता और निर्दयता तीनों का क्रूर प्रदर्शन करते हुए एक तांडव नृत्य किया था, जो प्रलयंकारी था। ऐसा लगता था मानो समय संहारकाल बनकर सामने खड़ा हो और विवश प्राणी विकराल मुँह में प्रवेश कर रहा हो।

परम पावनी वरद छाया

विश्व मुकुट हिमालय की गोद में स्थित ऋषियों की तपोभूमि नेपाल जिस समय तेरापंथ के पुण्यात्मन परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण की पावन पदधूलि से पवित्र हो रहा था और नेपाल प्रवासी तेरापंथी श्रावक समाज अपने जीवन में परम पुण्योदय का अनुभव कर रहा था, उसी समय गोरखा भूकंप नाम की एक अकल्पित आपदा ने संपूर्ण हिमालय को हिलाकर रख दिया और उसकी विनाशलीला ने पूरी मानवता को दहला दिया।

दिनांक 25 अप्रैल, 2015 का वह काला दिन नेपाल के इतिहास में अमिट स्याही से लिखा जाएगा। उस दिन पूर्वाह्न 11.56 मिनट पर नेपाल के साथ-साथ भारत के बिहार, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, नई दिल्ली, सिक्किम, उत्तराखंड, ओडीशा, आंध्रप्रदेश, गुजरात आदि राज्यों के कुछ क्षेत्र और निकटवर्ती चीन एवं बांग्लादेश देश के कुछ भाग भयंकर भूकंप से दहल उठे। 1934 में नेपाल-बिहार में आए भूकंप के बाद यह सर्वाधिक शक्तिशाली भूकंप था, जिसे रियेक्टर स्केल के पैमाने पर 7.9 मापा गया। इसका नाभिकीय केंद्र काठमांडू से 50 किमी. दूर गोरखा जिले के बरपक गांव (लामज्यूंग) में था। इसका हाइपोसेंटर लगभग 15 किलोमीटर गहरा था। इस भूकंप से माउंट एवरेस्ट तथा लांगताङ घाटी से भूस्खलन हुआ, जिससे आधार शिविर के 19 व्यक्ति मारे गए लगभग 250 व्यक्ति लापता हो गए। इस भूकंप के कारण न केवल 8500 से अधिक लोगों की जान गई, बल्कि लाखों लोग घायल हुए एवं हजारों मकान नेस्तनाबूद हो गए। यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर घोषित की काठमांडू घाटी, काठमांडू दरबार स्क्वैयर, भक्तपुर दरबार स्क्वैयर, धरहरा टावर आदि धराशायी हो गए। लाखों लोगों का आशियाना छिन गया। कहीं-कहीं तो पूरे के पूरे गांव नष्ट हो गए। बड़ी-बड़ी हमारतें मलबे में तब्दील हो गई। पुराने मकान ताश के पत्तों की तरह ढहकर खंडहरों में परिवर्तित हो गए। मलबों के नीचे असंख्य लोग दबकर मर गए। कितने लोग अपंग हो गए। घायलों की हालत देखी नहीं जा रही थी।

प्रकृति का यह प्रकोप उसी दिन थमा नहीं, बल्कि प्रथम झटके के बाद प्रत्येक 15-20 मिनट पर हलके-हलके झटके आते रहे। अगले दिन 12.54 मिनट पर पुनः भूकंप आया, जिसका रियेक्टर स्केल पर माप 6.7 था। कई दिनों तक झटके आते रहे और 1 मई, 2015 तक 120 झटके महसूस किए गए। प्रकृति का प्रकोप अभी भी रुका नहीं है। प्रथम भूकंप के तीन सप्ताह बाद 12 मई, 2015 को पुनः नेपाल भयंकर भूकंप से दहल उठा। इस बार रिएक्टर स्केल पर उसकी माप 7.3 थी, जिसने पुनः नेपाल में 96 लोगों की जान ली और बिहार में दर्जनों लोगों की जान गई।

प्रलयंकारी भूकंप ने जिस समय अपना तांडव नृत्य शुरू किया उस समय परम पूज्य आचार्य काठमांडू स्थित बालमंदिर में प्रवास कर रहे थे। कोई कुछ समझ पाता, उससे पूर्व ही धरती तीव्र वेग से साथ डोलने लगी। एक कदम भी आगे चलना मुश्किल हो गया। पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल की इमारत का दक्षिणी हिस्सा देखते ही देखते धराशायी हो गया। भू-स्खलन से स्थान-स्थान पर गहरे गड्ढे को गए। मार्ग अवरुद्ध हो गए और जनजीवन ठप हो गया। आचार्यवर तत्काल भूमि पर विराजमान हो गए। आचार्यवर के आसपास उस समय करीब दस संत चल रहे थे। कुछ संतों ने उन्हें थाम लिया तो कुछ आचार्यवर के चारों ओर सुरक्षा घेरा बनाकर बैठ गए।

परम पावन आचार्यप्रवर कुछ समय पश्चात निकटस्थ पुलिस मुख्यालय के मैदान में पधारे। प्रायः सभी साधु-साध्वियां भी कुछ ही देर में इस परिसर में पहुंच गए। यदा-कदा भूकंप से धरती के थर्राने का क्रम जारी था और हर थर्राहट के साथ थर्रा रहे थे लोग।

इस विकराल घड़ी में भी आचार्यप्रवर आत्मस्थ थे। धरती के प्रत्येक प्रकंपन के साथ आचार्यवर का तन अवश्य डोल रहा था, किन्तु मन अडोल था, निश्चल था, अविचल था। उनकी वरद छत्रछाया में काठमांडू स्थित धर्मसंघ का प्रत्येक श्रद्धालु सुरक्षित था।

हालांकि सरकारी तौर पर भारी वर्षा और तूफान की चेतावनी दी जा रही थी। भयभीत लोग और भी घबरा रहे थे। आचार्यप्रवर का करुणामय हृदय इस भीषण आपदा के संदर्भ में बार-बार मुखरित हो रहा था। उन्होंने सभी को शांत और स्थिरचित्त रहने और व्याकुल जन समाज को धैर्य बंधाने हेतु धर्मसंघ के नाम दो संदेश प्रदान किए, जिनमें सभी चारित्रात्माओं के सकुशल होने की सूचना थी तथा सभी को समता भाव में बने रहने का निर्देश दिया गया था। पूज्यवर ने भूकंप में कालकवलित हुए लोगों के प्रति आध्यात्मिक संवेदना प्रकट की। उनके मंगल संदेश को सोशियल मीडिया के द्वारा प्रसारित करने का प्रयास किया गया। तेरापंथ धर्मसंघ के दूरस्थ सदस्यों में इस संदेश से कुछ निश्चिंतता का वातावरण निर्मित हुआ। आचार्यवर ने इस अवसर पर आगामी प्रवास आदि के संदर्भ में नीति-निर्धारण भी किया।

भूकंप के समय महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और अन्य चारित्रात्माएँ नेपाल के वीरगंज में प्रवासित थीं। वीरगंज में भी भूकम्प काफी तीव्रता से आया था, पर सभी सकुशल थीं। आचार्यवर के विशेष संदेश को प्राप्त कर सभी साध्वियां आश्वस्त हो गई। क्षेत्रीय दूरी और कठिन परिस्थिति में भी पूज्यवर का पावन संरक्षण सभी को प्राप्त था।

पूज्यवर की पावन सन्निधि में एक संगोष्ठी समायोजित हुई, जिसमें आगामी करणीय कार्यों के विषय में चिन्तन और निर्णय किए गए। इस विषम स्थिति में भी तेरापंथी श्रावक समाज की प्रगाढ़ भक्ति स्पष्ट दिखाई दे रही थी। सभी लोग अपनी परवाह किए बिना आचार्यवर, साधु-साध्वियों, समण-समणियों की सेवा में स्वयं को नियोजित किए हुए थे। सैकड़ों श्रद्धालु अपने जीवन एवं अपने परिजनों की चिन्ता छोड़कर पूज्य गुरुदेव और चारित्रात्माओं के कुशल मंगल की व्यवस्था में लगे हुए थे।

भूकंप के बाद नेपाल में राहत एवं बचाव कार्य युद्धस्तर पर शुरू हुआ। कई देशों से नेपाल को विभिन्न प्रकार से सहयोग किया जाने लगा। सर्वप्रथम भारत ने अपने त्वरित एवं भरपूर सहयोग की शुरुआत की। इसके साथ ही विश्व के अनेक देशों से जन-धन एवं संसाधनों द्वारा राहत कार्य में सहयोग किया जाने लगा।

महासभा के नेतृत्व में तेरापंथ समाज ने भी नेपाल के सहयोग में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

धन्य धरा नेपाल

भारत के उत्तर में बसा नेपाल अपने अनिर्वचनीय प्राकृतिक सौंदर्य एवं मनोहारी छटाओं के लिए विश्वविख्यात है। देवताओं का घर कहे जाने वाले नेपाल में अनेक महिमावान तीर्थस्थान हैं, जहाँ लाखों तीर्थयात्रियों को अपनी आस्था का अलौकिक आलंबन प्राप्त होता है। ऋषियों, सिद्धों एवं साधकों की तपोभूमि होने के कारण ही इसका नाम नेपाल हुआ। 'ने' नामक ऋषि ने काठमांडू स्थित एक पाल अर्थात गुफा में रहकर तपस्या की थी, तबसे इसे नेपाल कहा जाने लगा।

इसी पुण्य भूमि नेपाल में आज तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशवें आचार्य श्री महाश्रमण जी अपनी मानव हितकारी अहिंसा यात्रा के क्रम में धर्म एवं अध्यात्म की अंतःसलिला प्रवाहित करते हुए विराजमान हैं।

नेपाल की भौगोलिक विविधता अप्रतिम है। एक ओर यहां बर्फ से ढकीं पहाड़ियाँ और नयनाभिराम उपत्यकाएँ हैं, वहीं संसार की सबसे ऊँची 8 हिमशृंखलाएँ हैं, जिनमें संसार का सर्वोच्च शिखर सगरमाथा या एवरेस्ट अपनी उच्चता, उदात्तता और पवित्रता के लिए प्रख्यात है। वस्तुतः विविधाताओं एवं विभूतियों से भरपूर नेपाल एक दर्शनीय एवं देदीप्यमान देश है, जहाँ जाकर हर पुण्यात्मा को एक पावन परिसंतोष प्राप्त होता है।

आधुनिक नेपाल संघीय लोकतान्त्रिक गणराज्य के रूप में अपनी अस्मिता को प्रतिष्ठित करने में लगा है। नेपाल के उत्तर में तिब्बत है और दक्षिण, पूर्व व पश्चिम में भारत देश है। नेपाल 14 अंचलों, 75 जिलों और 5 विकास क्षेत्रों में विभाजित है। नेपाल की राजधानी और सबसे बड़ा नगर काठमांडू है। काठमांडू उपत्यका के अधीन ललीतपुर (पाटन), भक्तपुर, मध्यपुर और कीर्तिपुर नाम के नगर हैं। अन्य प्रमुख नगरों में पोखरा, विराटनगर, धरान, भरतपुर, वीरगंज, महेन्द्रनगर, बुटवल, हेटौडा, भैरहवा, जनकपुर, नेपालगंज, वीरेन्द्रनगर, त्रिभुवननगर आदि हैं।

नेपाल की कुल लम्बाई करीब 800 किलोमीटर और चौड़ाई 200 किलोमीटर है। नेपाल का कुल क्षेत्रफल 1,47,181 वर्ग किलोमीटर है। नेपाल भौगोलिक रूप से तीन भागों में विभाजित है - पर्वतीय क्षेत्र, शिवालिक क्षेत्र और तराई क्षेत्र। साथ में भित्री मधेस कहलाने वाले उपत्यकाओं का एक समूह पहाड़ी क्षेत्र के महाभारत पर्वत शृंखला व चुरिया शृंखला के बीच स्थित है।

कहा जाता है कि ईसा के 1500 वर्ष पहले इंडो-आर्यन जातियों ने काठमांडू उपत्यका में प्रवेश किया। तबसे यहाँ सभ्यता और संस्कृति का क्रमशः विस्तार हुआ। 250 ईसा पूर्व तक इस क्षेत्र पर उत्तर भारत के मौर्य साम्राज्य का आधिपत्य रहा और बाद में 4थी शताब्दी में यह गुप्तवंश के अधीन हो गया। 5वीं शताब्दी से लेकर 8वीं शताब्दी तक यहाँ बिहार के वैशाली के लिच्छवियों का शासन रहा। 879 में यहाँ नेपाल के नेवार जाति का शासन स्थापित हुआ। 1482 में यह राज्य तीन भाग में विभाजित हो गया - कान्तिपुर, ललितपुर और भक्तपुर। 1765 में गोरखा राजा पृथ्वी नारायण शाह ने नेपाल पर अपना शासन स्थापित किया। यहीं से आधुनिक नेपाल का जन्म माना जाता है।

1846 में तत्कालीन सेनानायक जंगबहादुर राणा ने अंदरुनी कलह को समाप्त कर नेपाल पर अपना आधिपत्य जमाया और वहाँ राणा शासन लागू किया।

राजा नाममात्र का रहा और वह स्वयं प्रधानमंत्री पद पर प्रतिष्ठित हुआ। प्रधानमंत्री पद को उसने वंशानुगत बना दिया।

1857 में ब्रिटिश शासकों के साथ सहयोग करके और 1923 में अंग्रेजों के साथ समझौता करके इसने अपनी प्रभुसत्ता बनाए रखी।

1940 के दशक के उत्तरार्ध में लोकतन्त्र-समर्थित आन्दोलनों का उदय होने लगा व राजनैतिक पार्टियां राणा शासन के विरुद्ध हो गईं। 1951 में भारत ने राजा त्रिभुवन को समर्थन करके सत्ता लेने में सहयोग किया, जिससे नई सरकार का निर्माण हुआ। इसमें आन्दोलनकारी नेपाली कांग्रेस पार्टी के लोगो की सहभागिता थी। राजा व सरकार के बीच वर्षों की खींचातानी के पश्चात 1959 में राजा महेन्द्र ने 'निर्दलीय' पंचायत व्यवस्था लागू की। 1989 के 'जन आन्दोलन' के फलस्वरूप संवैधानिक सुधार करने व बहुदलीय संसद बनाने का वातावरण बना और 1990 में कृष्ण प्रसाद भट्टराई अन्तरिम सरकार के प्रधानमन्त्री बने। नये संविधान का निर्माण हुआ। राजा वीरेन्द्र ने 1990 में नेपाल के इतिहास में दूसरा प्रजातन्त्रिक बहुदलीय संविधान जारी किया एवं अन्तरिम सरकार ने संसद के लिए प्रजातान्त्रिक चुनाव करवाए। नेपाली कांग्रेस ने राष्ट्र के दूसरे प्रजातन्त्रिक चुनाव में बहुमत प्राप्त किया तथा गिरिजा प्रसाद कोइराला प्रधानमन्त्री बने।

इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में नेपाल में माओवादियों का आन्दोलन तेज हो गया। मधेशियों के मुद्दे पर भी आन्दोलन हुए। अन्त में सन 2008 में राजा ज्ञानेन्द्र ने प्रजातांत्रिक चुनाव करवाए, जिसमें माओवादियों को बहुमत मिला और पुष्प कमल दहाल (प्रचण्ड) नेपाल के प्रधानमंत्री बने और मधेशी नेता रामबरन यादव ने राष्ट्रपति का कार्यभार सम्हाला। इसने 240 वर्ष पुराने राजशासन का अंत कर दिया।

10 फरवरी, 2014 को सुशील कुमार कोइराला नेपाल के पांचवे प्रधानमंत्री बने।

समाज तथा संस्कृति

नेपाल के 81 प्रतिशत नागरिक हिन्दू हैं। जाति के आधार पर नेपाल के उत्तरी भाग की ओर भोटिया, तामाङ्, लिंबू, शेरपा, महाभारत शृंखला में मगर, किरात, नेवार, गुरुङ् सुनुवार और भीतरी तराई क्षेत्र में घिमाल, थारू, मेचे, दनवार आदि जातियों की बहुलता है। यहाँ पर प्रवासी भारतीयों की संख्या भी पर्याप्त है। नेपाल की संस्कृति तिब्बत एवं भारत से मिलती-जुलती है। यहाँ की वेषभूषा, भाषा तथा पकवान इत्यादि एक जैसे ही हैं। हिमालयी भाग में गेहूँ, मकई, कोदो, आलू आदि का खाना और तराई में गेहूँ की रोटी का प्रचलन है। नेपाली सामाजिक जीवन की मान्यता, विश्वास और संस्कृति हिंदू भावना में आधारित धार्मिक सहिष्णुता और जातिगत सहिष्णुता नेपाल की अपनी मौलिक संस्कृति है। यहाँ के पर्वों में वैष्णव, शैव, बौद्ध, शाक्त सभ धर्मों का प्रभाव एक दूसरे धर्मावलंबियों पर समान रूप से पड़ा है। सभी धर्मावलंबी आपस में मिलकर उल्लासमय वातावरण में सभी पर्वों में भाग लेते हैं। नेपाल में छुआछूत का भेद न कट्टर रूप में है और न जन्म संस्कार के आधार पर ही है। उपासना की पद्धति और उपासना के प्रतीकों में भी समन्वय स्थापित किया गया है। नेपाल की यह समन्वयात्मक संस्कृति लिच्छवि काल से अद्यावधि चली आ रही है।

नेपाली लोग जितने ही पराक्रमी हैं उतने ही अनग्रहपरायण भी। वे किसी के मैत्रीपूर्ण व्यवहार को कभी नहीं भूलते।

पर्यटन की दृष्टि से नेपाल

लुबिनी महात्मा बुद्ध की जन्म स्थली है। यह बिहार की उत्तरी सीमा के निकट वर्तमान नेपाल में स्थित है।

जनकपुर नेपाल का प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है, जहां सीता का बचपन बीता था। मुक्तिनाथ वैष्णव संप्रदाय के प्रमुख मंदिरों में से एक है। ककनी काठमांडू शहर से 29 किमी. उत्तर-पश्चिम में स्थित है। समुद्र तल से 4360 मी. की ऊंचाई पर स्थित गोसाई कुण्ड झील नेपाल के प्रमुख तीर्थस्थलों में से एक है। धुलीखेल प्राचीन नगर काठमांडू से 30 किमी. पूर्व काठमांडू-कोदारी राजमार्ग के एक ओर बसा है। भगवान पशुपतिनाथ का खूबसूरत मंदिर काठमांडू से करीब 5 किमी. उत्तर-पूर्व में स्थित है। भागमती नदी के किनारे इस मंदिर के साथ और भी मंदिर बने हुए हैं। पशुपतिनाथ मंदिर के बारे में माना जाता है कि यह नेपाल में हिंदुओं का सबसे प्रमुख और पवित्र तीर्थस्थल है। रॉयल चितवन राष्ट्रीय उद्यान देश की प्राकृतिक संपदा का खजाना है। 932 वर्ग किमी. में फैला यह उद्यान दक्षिण-मध्य नेपाल में स्थित है। चाँगुनारायण मंदिर काठमांडू घाटी का सबसे पुराना विष्णु मंदिर है। भक्तपुर के दरबार स्क्वैयर का निर्माण 16वीं और 17वीं शताब्दी में हुआ था। इसके अंदर एक शाही महल दरबार और पारंपरिक नेवाड़, पैगोडा शैली में बने बहुत सारे मंदिर हैं। यह राजधानी की सामाजिक, धार्मिक और शहरी जिंदगी का मुख्य केंद्र है। नेपाल में 25अप्रैल, 2015 को आए विनाशकारी भूकंप ने सब कुछ बदल कर रख दिया। खूबसूरती की मिसाल स्वर्ण द्वार नेपाल की शान है। बेशकीमती पत्थरों से सजे इस दरवाजे का धार्मिक और ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्व है। काठमांडू घाटी के मध्य में स्थित बोधनाथ स्तूप तिब्बती संस्कृति का केंद्र है। 1959 में चीन के हमले के बाद यहां बड़ी संख्या में तिब्बतियों ने शरण ली और यह स्थान तिब्बती बौद्धधर्म का प्रमुख केंद्र बन गया। ■

भूकंप पीड़ितों की सेवा में भारत एवं विश्व के देश

भूकंप के बाद नेपाल में राहत एवं बचाव कार्य युद्धस्तर पर चल रहे हैं। कई देशों का सहयोग नेपाल को प्राप्त हो रहा है। इनमें भारत के अतिरिक्त जिन देशों ने सहयोग किया है उनमें अमेरिका, आस्ट्रेलिया, अल्जीरिया, आस्ट्रिया, अजरबैजान, बांग्लादेश, बेल्जियम, भूटान, ब्रुनई, कनाडा, चीन, कोलंबिया, चेक रिपब्लिक, डेनमार्क, एस्टोनिया, फिनलैंड, फ्रांस, जर्मनी, ग्रीस, हांग कांग, इंडोनेशिया, इरान, आयरलैंड, इजरायल, इटली, जापान, मलेशिया, मालदीव, मैक्सिको, मोनाको, नीदरलैंड, न्यूजीलैंड, नार्वे, पाकिस्तान, फिलीपीन, पोलैंड, कतार, रूस, सिंगापुर, स्लोवाकिया, स्लोवेनिया, साउथ अफ्रीका, साउथ कोरिया, स्पेन, श्रीलंका, स्वीटजरलैंड, स्वीडेन, ताईवान, थाईलैंड, टर्की, संयुक्त अरब अमीरात, यूनाइटेड किंगडम, वैटिकन सिटी, वियतनाम आदि देशों के साथ-साथ इंटरनेशनल फेडरेशन आफ रेडक्रॉस एंड रेड क्रेसेंट सोसाइटी, मेडिसिन सैन्स फ्रंटियर्स, यूरोपियन यूनियन आदि शामिल हैं। इन राज्यों ने नकदी राशि के साथ-साथ अनेक प्रकार की जीवन रक्षक सामग्री, औषधियाँ और अत्यावश्यक वस्तुएँ तथा राहत प्रदान करने वाले स्वयंसेवक प्रदान किए हैं।

भूकंप पीड़ितों की सेवा में तेरापंथ समाज

भूकंप से प्रभावित लोगों के लिए तेरापंथ समाज भी बढ़-चढ़कर संभागी बन रहा है और नेपाल के पुनर्निर्माण में सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

विश्व मजदूर दिवस पर विशेष

भारत जैसे विशाल देश में गरीबी भी अपनी विशालता के लिए प्रसिद्ध है। आजादी के लगभग 70 वर्षों बाद भी भारतीय मजदूरों की दशा में कोई उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हो पाया है। इसके मूल में जो भी है उनपर चिंतन की जरूरत है। हम मजदूरों को क्रूर व्यवस्था विरोधी बनने से रोकें, यही सभी के हित में है।

कैसे करें गरीबी का उन्मूलन

आचार्य महाप्रज्ञ

महावीर के अर्थशास्त्र पर एक गोष्ठी थी। उसमें बड़े-बड़े अर्थशास्त्रियों ने भाग लिया था। मैंने अपने भाषण के अंत में एक बात कही - 'मैं सभी अर्थशास्त्रियों से एक बात जानना चाहता हूं कि नक्सलवाद क्यों बढ़ रहा है? छीनाझपटी की घटनाएं क्यों हो रही हैं? इन्हें कहां से प्रेरणा मिल रही है? कश्मीर का आतंकवाद तो कुछ दूसरी तरह का है, किंतु देश के अन्य भागों में जो हिंसा की घटनाएं हो रही हैं, वे निश्चय ही किसी दूसरे देश के द्वारा प्रायोजित नहीं हैं। इनका कोई कारण है। अगर यह कारण समझ में आ जाए, इसका उत्तर मिल जाए तो फिर अध्यात्म और अहिंसा की बात आसानी से समझी जा सकेगी।

अहिंसा अध्यात्म का व्यावहारिक रूप है। अध्यात्म एक गंभीर विषय है। वहाँ आत्मानुभूति से लेकर परमात्म तत्त्व तक पहुँचने की प्रक्रिया का वर्णन है। हम उसके व्यावहारिक रूप पर विचार करें। उसका व्यावहारिक रूप है अहिंसा। करुणा, संवेदना, सहनशीलता आदि अहिंसा के ही कोण हैं। हमने तात्त्विक दृष्टि से यह स्वीकार किया है कि सब आत्माएं एक हैं। जो एकात्मवादी हैं, वे यह मानते हैं कि सब एक ही आत्मा के अंश हैं। हम चाहे एकात्मा को माने या अनेकात्मा को मानें, पर इसी आधार पर एक सिद्धांत की कल्पना करें तो वह सिद्धांत है मानवीय एकता का। अणुव्रत का एक प्रमुख सूत्र है मानवीय एकता। हम मानवीय एकता में विश्वास करें। किंतु अहिंसा अगर हमारे व्यावहारिक जीवन में नहीं आती तो मानवीय एकता का सिद्धांत खंडित हो जाता है।

हिंदुस्तान बहुत बड़ा देश है। विशाल आबादी है इसकी। सरकार बहुत प्रयत्न कर रही है कि देश में विकास की गति बढ़े। किंतु एक बड़ी कठिनाई है और इस कठिनाई का हमने साक्षात

अनुभव किया है। अहिंसा यात्रा के दौरान हम महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश, राजस्थान आदि प्रांतों में गए। अपनी पदयात्रा में औसतन दस-बारह किलोमीटर का मार्ग तय करते हैं। इस दौरान हम गांवों में गए, नगरों में गए और बड़े-बड़े शहरों में गए। लोगों में अहिंसा यात्रा का बहुत बड़ा आकर्षण रहा। इस यात्रा के क्रम में हम उन गांवों के लोगों से भी मिले जो हमारे निर्धारित यात्रा पथ में नहीं थे। लोग सुनते कि अहिंसा यात्रा आ रही है तो दूर से चलकर सड़क पर पहुँच जाते। इस तरह यह यात्रा एक व्यापक जनसंपर्क की यात्रा रही। इस यात्रा में हमने बहुत कुछ देखा, जाना और समझा। कह सकता हूं कि इस यात्रा में हमने जो देखा, उस पर गहराई से चिंतन किया, अध्ययन किया। बहुत निकटता से देखा तो समझ में आया कि सरकार जिस बात का जोर-शोर से ढिंढोरा पीटती है, वह सब बिलकुल नहीं है। स्थिति उससे बहुत भिन्न है। हम कोई बिल क्लिंटन नहीं थे कि 'रायला' जैसे किसी गांव को सजा-संवारकर प्रायोजित ढंग से पूरे रिहर्सल के साथ कंप्यूटर चलाती ग्रामीण महिलाओं को बीच में खड़ा कर सरकार और उसके मुख्य अधिकारी देश और प्रदेश की प्रगति की तस्वीर पेश करते। मैंने तो चूल्हे से लेकर चौबारे तक लोगों के घरों का निरीक्षण किया और पाया कि सरकार की ओर से जो कहा जा रहा है, वह सब भ्रामक है। स्थिति उससे बिल्कुल भिन्न है।

जो लोग समर्थ हैं, वे दूसरे असमर्थ लोगों की सहायता में आगे आएं। मानवीय एकता का यही एक सही रहस्य है। एक हाथ दूसरे हाथ को थामेगा तो यह शृंखला बहुत लंबी बनती जाएगी। सहयोग और सौहार्द की यह भावना समाज को हिंसामुक्त बनाने में अपनी प्रमुख भूमिका अदा करेगी।

लोगों ने इस बात को तो माना कि सरकार हम लोगों के लिए कुछ करती जरूर है किंतु वह हम तक पहुँचता नहीं है। मुझे राजीव गांधी की वह बात याद आ गई जो उन्होंने बड़ी ईमानदारी से एक बार कही थी कि हम गांव और गरीबों के लिए दिल्ली से एक रुपया भेजते हैं तो पंद्रह पैसे ही वहाँ तक पहुँचते हैं, पचासी पैसे बीच में ही हड़प लिए जाते हैं। उस बात को कहे हुए काफी साल बीत गए अब तो शायद दस पैसे भी नहीं पहुँचते होंगे।

भूख और गरीबी सबसे बड़ी समस्या है, सबसे बड़ा अभिशाप भी है। महामात्य चाणक्य ने लिखा है -

नास्ति क्षुधा सम शत्रुः

आदमी वस्त्र और घर के बिना रह सकता है, किंतु भोजन के अभाव में वह ज्यादा दिन नहीं रह सकता। आदिवासी क्षेत्रों की यात्रा में मैंने जनजातियों और वनवासियों के जो घर देखे, उन्हें घर कहा ही नहीं जा सकता। मात्र वृक्ष के पत्तों को लपेटकर बनाए हुए चिड़िया के बड़े घोंसले जैसे लगते थे। मैंने महाश्रमण से कहा कि बंगलों और बिल्डिंगों में रहने वाले लोगों को अगर एक दिन के लिए इन फूस के घरौंदों में रख दिया जाए तो शायद उन्हें अमीरी और गरीबी का फर्क मालूम हो जाए।

डॉ. राम मनोहर लोहिया एक बार दिल्ली में मेरे पास आए और बोले - 'मैं आचार्य तुलसी से मिलना चाहता हूँ।' उस समय आचार्यश्री हिंदू महासभा भवन में विराज रहे थे। डॉ. लोहिया प्रखर समाजवादी थे और लोगों की तरह उनके मन में भी यह बात थी कि आचार्य तुलसी सेठों और महाजनों के गुरु हैं। इसीलिए उन्होंने कभी आचार्यश्री से मिलना जरूरी नहीं समझा।

एक दिन अकस्मात वे आए और गुरुदेव से मिलने की इच्छा व्यक्त की। मुझे भी आश्चर्य हुआ। मैं आचार्यश्री के पास गया और कहा कि डॉ. लोहिया आपसे मिलना

चाहते हैं तो आचार्यश्री को भी आश्चर्य हुआ, किंतु उन्होंने स्वीकृति दे दी। डॉ. लोहिया को लेकर मैं आचार्यश्री के पास गया। दर्शन करते ही वे बोले - 'आचार्यजी! आप अणुव्रत आंदोलन के द्वारा समाज सुधार का बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। आपका व्यापक संघर्ष है। जगह-जगह भ्रमण करते हैं। आपको देश के लोगों की बदहाली पर भी थोड़ा ध्यान देना चाहिए।' उनके साथ लंबी चर्चा चली। चर्चा के बाद उन्होंने कहा - 'आप मुनि नथमलजी को मेरे साथ कुछ दिन के लिए भेजें। हम इनके साथ दूर-दराज के गांवों की यात्रा करेंगे और देश की वास्तविक स्थिति से इन्हें अवगत कराएंगे। पूरा अध्ययन करने के बाद हम आपको उसकी रिपोर्ट देंगे।'

हम समस्याओं को निकटता से देखें, लोगों के बीच में जाकर देखें कि कहां कमी है? अहिंसा प्रशिक्षण के हमारे कार्यकर्ता बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़ आदि प्रांतों में लोगों के बीच जाकर सही स्थिति का आकलन कर रहे हैं। इस क्रम में उनका संपर्क नक्सलियों के विभिन्न गुटों जैसे एम.सी.सी. और पीपुल्स वार ग्रुप संगठनों के लोगों से भी हुआ। उनकी आशंकाओं का निराकरण हुआ तो उन्होंने अहिंसा प्रशिक्षण कार्यक्रम की सराहना की और उसका अनुमोदन भी किया। निश्चय ही वे सिरफिरे और क्रूर हत्यारे नहीं हैं। व्यवस्था के प्रति उनका विद्रोह है। व्यवस्था को बदलकर उन्हें मुख्य धारा में शामिल किया जा सकता है। बंदूक से चुप नहीं कराया जा सकता। शक्ति से अगर सुधार हो सकता तो कभी का हो चुका होता।

भूखा आदमी अक्सर गलत लोगों के हाथ का मोहरा बन जाता है। हथियार उठाता है व्यवस्था के बदलाव के लिए फिर उग्रवाद के दलदल में फंसा तो वहाँ से निकलना मुश्किल हो जाता है। उग्रवाद और आतंकवाद 'वन वे' होता है। वहाँ जाने का रास्ता तो है, निकलने का नहीं है।

असम से चालीस लोगों का ग्रुप अभी प्रशिक्षण ले रहा है। यहां से प्रशिक्षण लेकर वे असम के विभिन्न क्षेत्रों को अहिंसा का प्रशिक्षण देंगे। वहाँ की समस्या अलगाववाद की है। उल्फा और अलग से बोडोलैंड की मांग करने वाले दूसरे संगठन वहाँ हिंसक गतिविधियां लंबे समय से चला रहे हैं। उन्हें विश्वास में लेकर उनके बीच भी ये लोग काम करेंगे। वे लोग कहते हैं कि इस तरह का उपक्रम उनके लिए बिल्कुल नया है। उन्हें न तो कभी अहिंसा का प्रशिक्षण दिया गया, न ही मानवीय एकता के संदर्भ में कभी कोई बात बताई गई। सबसे बड़ी बात तो यह है कि हम लोगों के लिए जीविकोपार्जन की कोई व्यवस्था नहीं की गई। बाहर के प्रांतों से जो लोग आए, वे अपने कारोबार चलाने लगे और हम लोगों की स्थिति गुलामों जैसी रह गई। अब इस स्थिति में हम रहने के लिए तैयार नहीं हैं। अपने राज्य के असली मालिक हम खुद बनना चाहते हैं।

शस्त्र आदमी का अंतिम विकल्प होता है। जब कोई दूसरा उपाय नहीं रह जाता तो आदमी मरने-मारने पर उतारु हो जाता है। देश के अशांत राज्यों में आज यही हो रहा है। इस संदर्भ में एक बात और कहनी है कि भूखा आदमी हर तरह का समझौता कर लेता है। उससे रोटी और पैसे के लिए आप उचित-अनुचित कुछ भी करवा सकते हैं। यह कहना भी गलत नहीं होगा कि भूखा आदमी अक्सर गलत लोगों के हाथ का मोहरा बन जाता है। हथियार उठाता है व्यवस्था के बदलाव के लिए फिर उग्रवाद के दलदल में फंसा तो वहाँ से निकलना मुश्किल हो जाता है। उग्रवाद और आतंकवाद 'वन वे'

होता है। वहाँ जाने का रास्ता तो है, निकलने का नहीं है। आतंकवाद के प्रशिक्षण कैंपों में भाग ले चुके आतंकवादियों से जो सुनने को मिला, वह कुछ ऐसी स्थिति की ओर संकेत करता है।

अहिंसा प्रशिक्षण के साथ हमने रोजगार प्रशिक्षण को भी जोड़ दिया है। क्योंकि 'हिंसा मत करो' मात्र इतना कहने से ही काम नहीं चलता। उनके सामने विकल्प भी प्रस्तुत करना पड़ता है। वह रोजगार प्रशिक्षण का कार्यक्रम काफी लोकप्रिय हुआ। गुजरात के सूरत शहर की उन बस्तियों में जहाँ आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों के झुग्गीनुमा आवास थे, वहाँ मोमबत्ती निर्माण आदि का कार्य होने लगा। इससे ऐसी बस्तियों का कायापलट जैसा हो गया।

शस्त्र आदमी का अंतिम विकल्प होता है। जब कोई दूसरा उपाय नहीं रह जाता तो आदमी मरने-मारने पर उतारु हो जाता है।

आसन, योग, ध्यान, प्राणायाम आदि के कार्यक्रम उन्हें मानसिक रूप से बल प्रदान करते हैं। जीविका के रूप में उन्हें एक सहारा मिलता है और धीरे-धीरे लोग हिंसा से विरत होने लगते हैं।

सरकारें अपने स्तर पर कार्य करती हैं। बहुत जरूरी है कि गैर सरकारी स्तर पर भी इस दिशा में कोई ठोस प्रयास किया जाए। जो लोग समर्थ हैं, वे दूसरे असमर्थ लोगों की सहायता में आगे आएं। मानवीय एकता का यही एक सही रहस्य है। एक हाथ दूसरे हाथ को थामेगा तो यह शृंखला बहुत लंबी बनती जाएगी। सहयोग और सौहार्द की यह भावना समाज को हिंसामुक्त बनाने में अपनी प्रमुख भूमिका अदा करेगी।

मेरा यह मानना है कि आज की जो समस्या है, वह कोई संस्था हल नहीं कर सकती और न ही अकेली सरकार हल कर सकती है। दोनों का सम्मिलित प्रयास होगा, तभी यह समस्या हल होगी। सरकार और स्वयंसेवी संस्थाओं का कोई ऐसा योग बन सके तो इस दिशा में बहुत बड़ा काम हो सकता है। हमारी गोष्ठी और हमारे चिंतन का उद्देश्य इतना ही होना चाहिए कि दोनों के काम में संतुलन कैसे स्थापित हो। कुछ वर्ष पूर्व अणुव्रत के अधिवेशन में सर्वोदय और अणुव्रती कार्यकर्ताओं के बीच एक चिंतन चला कि दोनों संस्थाएं मिल कर इस काम को आगे कैसे बढ़ाएं। अहिंसा के क्षेत्र में सर्वोदय भी काम कर रहा है और अणुव्रत भी काम कर रहा है। दोनों का संयुक्त प्रयास हो तो इस कार्य में और ज्यादा गति आ सकती है। इसी उद्देश्य से दोनों संगठनों के कार्यकर्ताओं ने आपस में विमर्श किया और उसके प्रतिफल में आया- **अहिंसा समवाय**। यह अहिंसावादियों का सर्वमान्य मंच बना। यह मंच आज भी पूरी तरह से सक्रिय है और अपने स्तर पर अपना काम कर रहा है। इस मंच के साथ कर्नाटक के प्रमुख धर्मगुरु जुड़े हैं। ऐसे धर्मगुरु, जिनका कर्नाटक ही नहीं, पूरे देश में प्रभाव है।

सूरत में अपना जन्म दिन हमारे सान्निध्य में मनाने आए राष्ट्रपति डॉ. कलाम हमारे साथ चार घंटे रहे। वहाँ धर्मगुरुओं के सम्मेलन में उन्होंने भाग लिया। सूरत स्पिरिचुअल डेक्लेरेशन के रूप में एक प्रस्ताव पारित हुआ, जो फ्यूरेक नाम से अस्तित्व में आया और आज उस पर सलक्ष्य काम चल रहा है। देश के कई राज्य में फ्यूरेक के कार्यक्रम शुरू हो चुके हैं। कुछ अन्य स्थानों पर शुरू हो रहे हैं। इस कार्य में सर्वोदय, अणुव्रत और अहिंसा प्रशिक्षण के कार्यकर्ता मनोयोग से लगे हुए हैं। प्रशिक्षण एवं प्रयोग में मेरा प्रारंभ से ही विश्वास रहा है और मैं यह मानता हूं कि इसके बिना परिवर्तन नहीं आ सकता। सरकार कितनी भी अच्छी और जन-कल्याणकारी योजनाएं बनाए, जब तक प्रशिक्षित

अधिकारी और कार्यकर्ता उस योजना के क्रियान्वयन में नहीं लगेंगे, उसकी सफलता में संदेह है।

इसी तरह रोजगार के बारे में मेरा अपना अलग चिंतन है। किसी को दस-बीस हजार का अनुदान मिल गया तो यह आशा नहीं की जानी चाहिए कि इससे वह हमेशा के लिए अपने पैर पर खड़ा हो जाएगा। अगर प्रशिक्षित नहीं है तो महीने-पंद्रह दिन में वह उसे खा-पीकर बराबर कर देगा। स्थिति ज्यों की त्यों रह जाएगी। इस संदर्भ में टॉलस्टाय का वह प्रसंग उल्लेखनीय है। उन्होंने किसी को दस रुपये दिये। वह प्रसन्न हो गया। जाने लगा तो टॉलस्टाय ने कहा - 'ध्यान रखना यह दस रुपये मैंने इसलिए नहीं दिये हैं कि बाजार से रोटी खा लो। इन दस रुपयों से तुम लकड़ी या ऐसी ही दूसरी चीज खरीदो। उसे बेचकर कुछ उपार्जित करो। यह अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए मेरी ओर से एक तरह की सहायता है। तुम चाहो तो इन दस रुपयों से यावज्जीवन के लिए जीने का संसाधन खड़ा कर सकते हो।'

मेरा विश्वास रोजगार के संदर्भ में ऐसी ही सहायता और मदद में है। रोजगार देना, सहायता देना वर्तमान का एक तात्कालिक उपाय है। मुख्य बात उसके बाद की है। इसके अतिरिक्त नशामुक्ति की बात भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। देखा जाता है कि लोगों की कमाई का एक बड़ा भाग नशीले पदार्थों की भेंट चढ़ जाता है। एक त्रिकोणात्मक अभियान चले। नैतिकता का प्रशिक्षण, रोजगार का प्रशिक्षण और व्यसनमुक्ति का प्रशिक्षण - ये तीनों प्रशिक्षण चलें तो मेरा विश्वास है कि गरीबी उन्मूलन की दिशा में एक बड़ा ठोस काम हो सकेगा। ■

आपके पास जो कुछ देने को हो, दे डालिये

इस सिद्धान्त को आप कभी न भूलें कि आपका जन्म देने के लिये हुआ है - लेने के लिये नहीं। अतएव आपके पास जो कुछ देने को हो, उसे बिना आपत्ति के - बदले की कुछ भी इच्छा न रखकर दे डालिये। यदि ऐसा नहीं करेंगे तो दुःख भोगने पड़ेंगे। प्रकृति के नियम इतने दृढ़ हैं कि यदि आप प्रसन्नता से न देंगे तो वह आप से जबर्दस्ती छीन लेगी। आप अपने सर्वस्व को चाहे जब तक छाती से लगाये रहें; परन्तु याद रखिये, एक दिन प्रकृति आपकी छाती पर सवार होकर उसे लिये बिना नहीं छोड़ेगी। प्रकृति बेईमान नहीं है, वह आपके दान का बदला अवश्य चुकाती है; परन्तु बदला पाने की इच्छा करेंगे तो सिवा दुःख के और कुछ भी हाथ न लगेगा। इससे तो यही उत्तम है कि आप प्रसन्नता से उसकी चीज उसे दे दें। सूर्य समुद्र का जल खींचता है तो फिर उसी जल से पृथ्वी को तर भी कर देता है। एक से लेकर दूसरे को और दूसरे से लेकर पहले को देना तो प्रकृति का काम ही है। उसके अटल नियमों में बाधा डालने की हमारे अंदर शक्ति नहीं है। कमरे की हवा जितनी बाहर निकलती रहेगी, बाहर से उतनी ही शुद्ध वायु भीतर आती जायेगी। परन्तु यदि आप घर का दरवाजा बंद कर देंगे तो बाहर से हवा आना तो दूर रहा, अंदर की हवा भी बिगड़ कर आपको मृत्यु के अधीन कर देगी। आप जितना अधिक देंगे, आप उससे हजार गुना प्रकृति से प्राप्त करेंगे; परन्तु उसके लिये आपको धैर्य रखना होगा - अनासक्त बनना पड़ेगा। यह काम अत्यन्त कठिन है। ऐसी वृत्ति बनाने के लिये हमें बड़ी शक्ति प्राप्त करनी पड़ेगी।

- स्वामी विवेकानन्द

आचार्य श्री महाप्रज्ञ के महानिर्वाण दिवस पर विशेष

मौलिक विचारक और दार्शनिक आचार्य श्री महाप्रज्ञ सत्य-संधाता थे। उनमें दृष्टि और आचरण की शुचिता थी। उनमें आवेश, अभिमान आदि निषेधात्मक भाव क्षीणप्रायः हो चुके थे। उनमें विशिष्ट मतिज्ञान और श्रुतज्ञान का प्रादुर्भाव हो चुका था, इसीलिए वे सर्वत्र वंदनीय थे।

प्रज्ञा के अनुत्तर पुरुष – आचार्य महाप्रज्ञ

डॉ. मुनि मदन कुमार

आचार्य श्री महाप्रज्ञ प्रज्ञापुरुष थे। वे जागृत चेतना के धनी थे। उन्होंने प्रज्ञा-जागरण के महान प्रयोग किये और प्रज्ञा के मंत्रदाता बन गये। उनका मानना था कि इन्द्रिय और मन के श्रम को न्यून कर अतीन्द्रिय चेतना और प्रज्ञा को जगाया जा सकता है। इसका तात्त्विक आधार यह है कि यह क्षयोपशमजन्य और साधनाजन्य है। प्रज्ञा की उपलब्धि मति ज्ञानावरण के विशिष्ट क्षयोपशम से होती है। श्रुताराधना इसमें प्रधान हेतु बनती है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ का संपूर्ण जीवन श्रुताराधना का महान निदर्शन है। वे विनय और समर्पण के मूर्त रूप थे। वे अपनी अलौकिक साधना से महामानव ही नहीं, विश्वमानव बन गये। उनकी उत्कृष्ट साधना से प्रभावित होकर आचार्य श्री तुलसी ने उन्हें महाप्रज्ञ अलंकरण प्रदान किया और वह अलंकरण ही उनका नामकरण हो गया। मुनि श्री नथमल और आचार्य श्री महाप्रज्ञ - इन दो विशिष्ट नामों से वे विश्व में ख्यात हो गये। जीवन निरन्तर उत्कर्ष की ओर बढ़ता गया।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ मौलिक विचारक और दार्शनिक थे। वे सत्य-संधाता थे। उनमें दृष्टि और आचरण की भरपूर शुचिता थी। उन्होंने अणुव्रत का दर्शन लिखा, प्रेक्षाध्यान साधना पद्धति का आविष्कार किया, मूल्यपरक शिक्षा के रूप में जीवन विज्ञान को प्रस्तुत किया, आगम-संपादन का महनीय कार्य किया और अहिंसा समवाय का विचार रखा। उनके इन महत्त्वपूर्ण कार्यों से उनका यशःकाय बहुत शक्तिशाली बना। उनके जीवन के अंतिम दशक में की गयी अहिंसा यात्रा ने उनके व्यक्तित्व और कर्तृत्व को बहुत यशस्वी बना दिया। उनके जादुई प्रवचनों ने लोगों के दिल-दिमाग को आनंद से सराबोर कर दिया। वे हिन्दू और मुस्लिम समाज को देवदूत की तरह प्रतीत होने लगे। उनके विराट व्यक्तित्व से प्रभावित होकर स्वामी अवधेशानन्द गिरी ने लिखा - 'युगपुरुष आचार्य श्री महाप्रज्ञ दर्शनीय ही नहीं अपितु अत्यन्त महनीय भी थे। ऐसा लगा मानो भगवत्ता धरा पर आविर्भूत हुई है।'

आचार्य श्री महाप्रज्ञ के विचारों की मुक्त कंठ से सराहना हुई है। मुझे एक योगी मिले थे। आध्यात्मिक संवाद चल रहा था। उन्होंने भावविभोर स्वर में कहा - 'महावीर और महाप्रज्ञ इस धरा पर बार-बार जन्म नहीं लेते है।' मैं दिल्ली में पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी से बात कर रहा था। वे आचार्य श्री महाप्रज्ञ के साहित्य के अच्छे पाठक रहे हैं। वार्ता के दौरान उन्होंने भावुक होकर कहा - 'मैं आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य का लोहा मानता हूं।'

समस्या का समाधान देनेवाला महामानव और महागुरु होता है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने बहुत हृदय स्पर्शी समाधान दिये हैं। कहा जाता है कि उनका एक प्रवचन पाठक या श्रोता की जीवन की दिशा को बदलने में समर्थ है। उनका ज्ञान बहुत व्यापक और निर्मल था। वे समस्या की जड़ को पकड़ना जानते थे। उनके विचार सार्वभौम और समाधानदायक हैं। नौ दशक का प्रलम्ब जीवन और आठ दशक का संयम जीवन जीकर उन्होंने संसार को अमृतपान कराया है, जो अध्यात्म जगत की एक अद्‌भुत मिसाल है। वे ज्ञाता-द्रष्टा भाव में रहने वाले महायोगी थे तथा समाधि एवं एकाग्रता के सफलतम निदर्शन थे। यों लगता था कि वे सदा ध्यान और भाव क्रिया में ही रहते थे। उनकी ढेर सारी विशेषताओं से प्रभावित होकर अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी ने कहा था कि जीने की कला सीखनी हो तो महाप्रज्ञ जी से सीखो।

दुःख और समस्या को भिन्न-भिन्न मानना चाहिये। हर व्यक्ति समस्याग्रस्त हो सकता है, पर समस्याग्रस्त व्यक्ति का दुःखी होना जरूरी नहीं है। महापुरुष के जीवन में समस्या और कठिनाई आ सकती है, पर वे कभी दुःखी नहीं होते हैं।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ का वाङ्मय विशाल है और युगीन है। युग को नयी दृष्टि देने वाला है। जीवन में दृष्टिदान और चक्षुदान सबसे बड़ा है। वे सही अर्थों में चक्षुदाता और महान तत्वावेत्ता थे तथा सुकरात और आइंस्टीन की तरह सुप्रतिष्ठित थे। सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री यशपाल जैन के शब्दों में - 'आचार्य श्री महाप्रज्ञजी विद्वान थे पर उनमें विद्वत्ता का भार नहीं था।' वे यथावादी-तथाकारी थे। उनमें आवेश, अभिमान आदि निषेधात्मक भाव क्षीणप्रायः हो चुके थे। जैसे वीतरागता आने पर ही केवलज्ञान प्रकट होता है वैसे ही उपशम की साधना होने पर ही विशिष्ट मतिज्ञान और श्रुतज्ञान का प्रादुर्भाव होता है। मति-श्रुत की निर्मलता भी व्यक्ति को अलौकिक आनन्द से भर देती है तथा ज्ञान के नये क्षितिज उद्घाटित कर देती है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ का मति और श्रुत ज्ञान बहुत निर्मल था। उन्हें ज्योतिर्भूत कहा जा सकता है। उनके कुछ विचारों को यहां बिन्दु रूप में प्रस्तुत करना चाहता हूं।

1. राग और द्वेष कर्म के बीज हैं। राग होने पर द्वेष अवश्य होता है। व्यक्ति पहले वीतद्वेष बनता है और फिर वीतराग। इस तरह वीतरागता हमारा ध्येय बन जाता है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने कहा कि राग और द्वेष में जन्य-जनक भाव है। द्वेष जन्य है और राग जनक। राग होने पर ही द्वेष की उत्पत्ति होती है। अतः राग को ही मिटाना है। राग को पहचानना ही कठिन है, फिर मिटाना कितना कठिन हो जाता है।

2. तपस्या के बारह प्रकार हैं। उपवास से निर्जरा होती है, किन्तु उपवास से जो निर्जरा होती है, उससे कहीं ज्यादा निर्जरा स्वाध्याय और ध्यान से होती है। अगर प्रतिसंलीनता का अभ्यास करें तो भारी निर्जरा होती है। निर्जरा आत्म-शोधन है

और उसे बढ़ाने का यह श्रेष्ठ मार्ग है। प्रतिक्षण प्रतिसंलीनता में रहना जीवन की सर्वोच्च सफलता है।

3. सुख, शान्ति और सुविधा को भिन्न-भिन्न मानना चाहिये। वर्तमान युग सुख का नहीं, सुविधा का युग है। इस सुविधावादी युग में सुख की खोज की जा रही है, लेकिन मिल नहीं रहा है। कारण यही है कि ज्ञान और श्रद्धा का समन्वय नहीं है। श्रद्धा और ज्ञान - इन दोनों का योग है शान्ति। जहां शान्ति है, वहां सुख है और जहां सुख है, वहां शान्ति है।

वर्तमान युग सुख का नहीं, सुविधा का युग है। इस सुविधावादी युग में सुख की खोज की जा रही है, लेकिन मिल नहीं रहा है। कारण यही है कि ज्ञान और श्रद्धा का समन्वय नहीं है। श्रद्धा और ज्ञान - इन दोनों का योग है शान्ति। जहां शान्ति है, वहां सुख है और जहां सुख है, वहां शान्ति है।

4. जीवन का लक्ष्य पैसा नहीं, मोक्ष होना चाहिये। लक्ष्य युक्त जीवन ही जीवन है। शान्ति, संतोष, पवित्रता और आनन्द के बिना जीवन की सरसता कहां? जीवन का साध्य अनुत्तर रहे। मोक्ष जीवन का अनुत्तर लक्ष्य है।

5. आस्तिकता का मार्ग बहुत कठिन है। आत्मा और ईश्वर, पूर्वजन्म और पुनर्जन्म, कर्म और कर्मफल को सिद्ध करना कठिन है। सिद्ध करने के लिये बहुत बुद्धि और चिन्तन चाहिये।

6. निमित्तदर्शी नहीं, उपादानदर्शी बनो। उपादान को देखना आध्यात्मिक विकास है।

7. मनुष्य के भाव ही व्यक्ति को सुखी और दुःखी बनाते हैं। सुख का संबंध चेतना के साथ है और सुविधा का संबंध पदार्थ के साथ है। सुविधा और सुखानुभूति में यह बड़ा अन्तर है। बुद्धि कामधेनु बन सकती है तो विषधेनु भी बन सकती है। बुद्धि के साथ भाव शुद्धि है तो वह कामधेनु बन सकती है। बुद्धि एवं शुद्धि के लिये जरूरी है, मनुष्य की चेतना में अध्यात्म का विकास हो।

8. धर्म का घोष है *मित्ती मे सव्वभूएसु* - सब जीवों से मेरी मैत्री हो। प्राणी मात्र के साथ मैत्री का विचार श्रेष्ठ है। *मित्ती मे सहवर्तिषु* - सहजीवियों के साथ मेरी मैत्री हो। इस विचार को जीवन व्यवहार में प्रतिष्ठित कर दिया जाये तो जीवन का कायाकल्प हो सकता है।

9. दुःख और समस्या को भिन्न-भिन्न मानना चाहिये। हर व्यक्ति समस्याग्रस्त हो सकता है, पर समस्याग्रस्त व्यक्ति का दुःखी होना जरूरी नहीं है। महापुरुष के जीवन में समस्या और कठिनाई आ सकती है, पर वे कभी दुःखी नहीं होते हैं।

10. अनैतिक साधनों से अर्थ का उपार्जन करना अर्थ नहीं, अर्थायास है। अर्थ जब साध्य बन जाता है तब अर्थोपार्जन में विकृति का प्रवेश हो जाता है। ■

मान के सर्प से ग्रस्त दान, क्रोध की आग को प्रदीप्त करने वाला तप, अहंकार बढ़ाने वाली विद्या, प्रतिफल चाहने वाली सेवा, दम्भमय धर्म और दूसरों के मन को पीड़ा पहुँचाने वाली क्रिया को मूर्ख मनुष्य ही धार्मिक दृष्टि से देखते हैं, वस्तुतः तो ये सब धर्म के लिए नहीं, प्रत्युत पाप के लिए होते हैं।

आचार्य महाश्रमण के प्रति जन्म दिवस पर

प्राचीन ऋषि परंपरा के वर्तमान संवाहक आचार्य महाश्रमण विश्व में शांति का संदेश फैलाने वाले एक ऐसे पुण्यपुरुष हैं, जिनके जीवन का लक्ष्य मानव जीवन में करुणा, ईमानदारी और विवेक का विकास करना है। इस प्रयोजन हेतु वे सर्वत्र सुविचारों का बीजारोपण करते हुए यात्रायित हैं। उनके विचार आज हमारे समाज, देश और व्यक्ति के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं।

शब्द साधक : आचार्य महाश्रमण

साध्वी विश्रुतविभा

आयारो में उल्लेख मिलता है कि साधना के प्रारम्भिक क्रम में भगवान महावीर ने संकल्प किया था - 'अबदुवाई' - मुझे बहुत कम बोलना है। उन्होंने केवल संकल्प ही नहीं किया अपितु साधना-काल में उसका प्रयोग भी किया। उनकी परम्परा के सशक्त संवाहक हैं आचार्य महाश्रमण। वे उनके पदचिह्नों का अनुगमन कर रहे हैं। जिनवाणी के प्रति वे पूर्ण समर्पित हैं, उसे वे अपने जीवन का आधार मानते हैं। आगमों में जो सत्य प्रतिपादित है, सम्पादित है, संकलित है, उसे वे व्यावहारिक बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। आगम साहित्य में अनेक सूत्रों का निरूपण मिलता है जिन्हें स्वीकार कर साधक साधना के शिखर पर आरोहण कर सकता है। भाषा समिति के कुछ सूक्त जिनका महाश्रमण के जीवन में सहज आत्मीकरण हुआ है, उनका प्रस्तुत आलेख में गुम्फन करने का विनम्र प्रयत्न कर रही हूं -

नापुट्ठो वागरे किंचि

उत्तराध्ययन सूत्र में मुनि के लिए निर्देश दिया गया है कि वह बिना पूछे न बोले। दशवैकालिक सूत्र में एतद् सदृश एक और सूत्र का उल्लेख मिलता है। अपुच्छिओ न भासेज्जा अर्थात् बिना पूछे न बोले। शिष्य के लिए तो यह संभव हो कसता है, किन्तु एक अनुशास्ता-गुरु के लिए तो नामुमकिन-सा प्रतीत होता है। आचार्य महाश्रमण की जीवंतशैली का अपना वैशिष्ट्य है। वे प्रायः मौन रहते हैं। मैं तो इस तथ्य की प्रत्यक्ष साक्षी हूँ। दिन में प्रायः दो तीन बार आचार्यवर की उपासना का अवसर उपलब्ध होता है। सूर्योदय के पश्चात् अथवा प्रातःकालीन विहार के पश्चात साध्वियां साध्वीप्रमुखाश्रीजी के साथ आचार्यवर के दर्शनार्थ जाती हैं। तीन बार वंदना और सुखपृच्छा के बाद कुछ क्षणों तक गुरु उपासना में आसीन रहते हैं। इस दौरान अनेक ऐसे प्रसंग आते हैं जिनमें आचार्यवर चाहें तो शब्दों के माध्यम से अपनी बात व्यक्त कर सकते

हैं। उस समय कोई संत कुछ निवेदन करते हैं, कभी साध्वीप्रमुखाश्रीजी कुछ निवेदन करते हैं, कभी कोई गृहस्थ अपनी बात निवेदन करता है किन्तु आचार्यवर को इस फौलादी संकल्प से न कोई व्यक्ति विचलित कर सकता है न कोई परिस्थिति।

बिना पूछ न बोलना साधना का महत्वपूर्ण सूत्र है। इसका अभ्यास भी बहुत दुरूह है। सामुदायिक जीवन में रहने वालों के बीच पद के दायित्व का वहन करते हुए इस आर्ष वचन की साधना आचार्य महाश्रमण जैसे वज्र मनोबली महापुरुष के लिए ही संभव हो सकती है।

अप्पभासी

दशवेंकालिक के 8वें अध्ययन में साधक के लिए अप्पभासी विशेषण प्रयुक्त हुआ है। अल्पभाषी से तात्पर्य है कार्य के लिए जितना बोलना आवश्यक हो उतना बोलने वाला। विवेकपूर्वक भाषा का प्रयोग करने वाला। यथार्थतः विवेकपूर्वक बोलने वाला मौन की आराधना करता है। आचार्य महाश्रमणजी में भाषा का विवेक सधा हुआ है। प्रयोजनवश बोलना हो तो लगातार आधा घण्टा एक घंटा भी बोल सकते हैं। प्रवचन करना है तो किसी एक विषय पर अविराम प्रतिपादन करते हैं। आगम कार्य के दौरान किसी शब्द या किसी सूत्र पर विमर्श करते समय पुनः पुनः भाषा वर्गणा के पुद्गलों का प्रयोग करना पड़े तो उसमें भी कोई आपत्ति नहीं होती क्योंकि उसके साथ प्रयोजन जुड़ा हुआ है।

महात्मा गांधी कहते थे - यदि एक शब्द बोलने से प्रयोजन सिद्ध हो जाए तो पूरा वाक्य मत बोलो। आचार्य महाश्रमण के जीवन में यह अक्षरशः घटित हो रहा है।

अल्पभाषिता के वैशिष्ट्य ने आचार्य महाश्रमण के व्यक्तित्व को ऊंचाइयां प्रदान की है। चूंकि आप एक वृहद धर्मसंघ के आचार्य हैं। आपका सम्पर्क हिंदुस्तान एवं विदेश में प्रवासित व्यक्तियों के साथ रहता है। आपकी सन्निधि में अनेक लोग आते हैं। कभी पत्रकार, कभी साहित्यकार, कभी राजनेता, कभी विधिवेत्ता, कभी तत्त्ववेत्ता, कभी चिकित्सक, कभी शिक्षक, कभी विद्यार्थी। कभी कोई अपनी समस्याओं को प्रस्तुत करता है, कोई चैनल के लिए संदेश लेने पहुंचता है, अनेक प्रयोजनों से अनेक व्यक्ति आपके उपपात में आते हैं। ऐसी स्थिति में यदि आचार्य बहुभाषी हो तो वे संघ का समुचित नेतृत्व नहीं कर सकते। आचार्य महाश्रमण अल्पभाषी हैं। अल्पभाषिता के कारण वे आसानी से इन सारे कार्यों को सम्पादित कर निर्भारता का अनुभव करते हैं।

अल्पभाषी व्यक्ति अपनी ऊर्जा का अनावश्यक क्षय नहीं करता। रेल से सफर करते समय कुछ युवकों ने विवेकानन्द का उपहास किया, अपशब्द कहे। विवेकानन्द मौन रहे। ट्रेन से उतरकर उन्होंने उसी से अंग्रेजी भाषा में बातचीत की, युवक घबरा गया। एक युवक ने विवेकानन्द से कहा - आप अंग्रेजी भाषा जानते हैं फिर मौन क्यों रहे? विवेकानन्द ने कहा "अपशब्द कहने से वाणी का व्यर्थ अपव्यय होता है, ऊर्जा नष्ट होती है, मैं ऊर्जा नष्ट नहीं करना चाहता।" आचार्य महाश्रमण के सामने भी अनेक व्यक्ति अपनी कथा, व्यथा प्रस्तुत करते हैं किन्तु आप अपनी मंद मुस्कान से ही बिना बोले ही आगंतुक को तृप्त कर देते हैं। इससे सहज ही ऊर्जा का संचय होता है।

मु सं परिहरे भिक्खु

भिक्षु वह होता है जो मृषा असत्य भाषा का परिहार करता है। जीवन भर असत्य भाषा के प्रयोग का वर्जन करता है।

कदाचित प्रमादवश अथवा छद्मस्थता के कारण क्रोध, लोभ, भय तथा हास्यवश भाषा का असम्यक प्रयोग हो जाता है, किन्तु मुनि के लिए वह काम्य नहीं है। प्रस्तुत

संदर्भ में आचार्य महाश्रमण का जीवन हमारे लिए आदर्श है। वे सत्य-महाव्रत की अनुपालना में मनसा, वाचा, कर्मणा पूर्णरूपेण जागरूक है। महाभारत का यह सूत्र उनकी आंखों के सामने रहता है -

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात ना ब्रूयात सत्यमप्रियम्।

सत्य बोलो, प्रिय बोलो किन्तु अप्रिय सत्य मत बोलो। आचार्य महाश्रमणजी सत्य बोलते हैं, प्रिय बोलते हैं, किन्तु अप्रिय सत्य से कोसों दूर रहते हैं। पूज्यवर स्वयं सत्यपव्रत की आराधना करते हैं और सामान्य लोगों को भी सत्यवादी बनने के लिए प्रेरणा देते हैं। आचार्य महाश्रमण स्वयं लिखते हैं - मेरा विश्वास है कि आदमी का यह लक्ष्य बन जाए कि - मैं झूठ नहीं बोलूंगा तो वाणी के असंयम से काफी अंशों में बचा जा सकता है। आवश्यकता है लक्ष्य बनाने की और कुछ कष्टों को झेलने की। आदमी अपनी भाषा का सम्यक निर्माण करें। अपने मुंह से कोई हल्की या गलत बात न बोले/ वह विचार महत्वपूर्ण होता है जो व्यवहारगत हो जाए। आचार्यश्री का जीवन इसका निदर्शन है।

न य ओहारिणी वए

आगम साहित्य में मुनि के लिए अवधारिणी अथवा निश्चकारिणी भाषा का प्रयोग निषिद्ध है। हम आएंगे, हम कहेंगे हमारा अमुक कार्य हो जाएगा, मैं यह काम करूंगा अथवा यह व्यक्ति करेगा इस प्रकार निश्चयार्थ की अभिव्यक्ति साधु के लिए वर्जनीय है। आचार्य महाश्रमणजी निश्चयकारिणी भाषा का प्रयोग नहीं करते। वे इसके प्रति पूर्ण जागरूक हैं। स्वयं के चतुर्मास अथवा मर्यादा महोत्सव की घोषणा करते समय आचार्य यही फरमाते हैं कि देश, काल, भाव की अनुकूलता रही तो आगामी चतुर्मास या मर्यादा महोत्सव अमुक स्थान पर करने का भाव है। किसी व्यक्ति विशेष से बातचीत करते समय अथवा प्रवचन के दौरान प्रायः लगभग, शायद, संभवत जैसे शब्दों का प्रयोग कर वे स्वयं को भाषा के दोष से बचा लेते हैं।

टापरा महोत्सव का एक प्रसंग है। एक दिन आचार्यवर ने प्रवचन में फरमाया - "हमारे धर्मसं में रजोहरण बनाने का कार्य प्रायः साध्वियां करती है। साधु प्रायः नहीं करते। प्रवचन के मध्य ही संतों ने निवेदन किया - 'मुनिश्री दर्शन कुमार जी ने रजोहरणों का निर्माण किया है।' तत्पश्चात् स्वयं मुनि दर्शनकुमारजी आचार्यवर के निकट पहुंचे और अपने हाथ का रजोहरण दिखाते हुए निवेदन किया - 'गुरुदेव ! यह रजोहरण मैंने स्वयं बनाया है।' तत्काल आचार्यवर ने फरमाया - देखो, मैंने अभी यही कहा था कि प्रायः साध्वियां रजोहरण का निर्माण करती है। प्रायः शब्द के उच्चारण ने मुझे भाषा के दोष से बचा लिया। जागरूकता जीवंतता की निशानी है। आचार्यवर की जीवंत संतता हर साधक के लिए आदर्श है।

परिक्खभासी

परीक्षापूर्वक - समीक्षापूर्वक बोलने वाला उत्कृष्ट कोटि का साधक होता है। वह भाषा विवेक सम्पन्न होता है, दिनभर बोलकर भी वह मौन की आराधना कर लेता है। इसीलिए दशवेंकालिक निर्युक्ति में कहा गया है -

पुत्वं बुद्धीइ पहित्ता पच्छ वयमुदाहरे।

पहले बुद्धि से विमर्श करना चाहिए फिर बोलना चाहिए। आचार्य महाश्रमण परिक्खभाषी के मूर्त रूप हैं। वे किसी भी विचार को प्रस्तुत करने से पूर्व उस पर गहराई से विमर्श करते हैं। संघनिदेशिका महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्रीजी ने महाश्रमण अष्टकम में इसी विषय को बहुत मार्मिक शब्दों में प्रतिपादन किया है -

सर्व समीक्ष्य कुरुते प्रकृतं विलोक्य,
किं वा भविष्यति मया करणीयमस्ति।
संभावितं समुचितं प्रविलोकमानः
पूतः ....

जो अपने कृत कार्य को ध्यान में रख उसकी समीक्षा करके कार्य करते हैं, जो भविष्य में मेरे लिए करणीय है, इस पर दृष्टि रखते हुए समुचित संभावनाएं खोजते हैं। आचार्यवर कार्य करने से पूर्व समीक्षा करते हैं, बोलने से पूर्व भी समीक्षा करते हैं। किसी भी विषय पर तात्कालिक प्रतिक्रिया देने से आप बचने का प्रयत्न करते हैं। 'Think before you speak' यह सूक्त आपके रोम-रोम में व्याप्त है।

कब बोलना, क्यों बोलना, क्या बोलना, कहां बोलना? इसका निर्णय करने में वाणी के साथ बुद्धि का उपयोग करना चाहिए। कब नहीं बोलना - मौन रह जाना - इसका निर्णय करने में बुद्धि के साथ विवेक का उपयोग चाहिए। बुद्धि और विवेक के साथ वाणीरूपी मणियों के उपयोक्ता आचार्य श्री महाश्रमण साधना-पथ के राहगीरों के लिए महान् आदर्श है। शब्द-साधक आचार्य महाश्रमण की मौन-साधना ने उनके आभामण्डल को तेजस्वी बनाया है। यह तेजस्विता उत्तरोत्तर वृद्धिंगत होती रहे, यही मंगलकामना है। ■

इंसानियत

एक किसान बोझ-लदी गाड़ी लेकर कहीं जा रहा था। अचानक उसकी गाड़ी एक गड्ढे में फंस गई। उसने बहुत कोशिश की लेकिन गाड़ी नहीं निकली। असह्य गर्मी थी। किसान और उसके बैल उस भयंकर गर्मी में छटपटा रहे थे। उस रास्ते से कुछ लोगों को आते देखकर किसान ने उम्मीद भरी दृष्टि से उनसे मदद की गुहार की। परंतु वे उसकी ओर देखे बिना गुजर गए। असहाय किसान बड़ी आतुरता से किसी से मदद की प्रतीक्षा कर रहा था। उसी समय उस इलाके का सबसे संपन्न आदमी घोड़े पर सवार होकर उधर से गुजरा। उसने किसान की हालत देखी। बहुत आवश्यक कार्य से जाते हुए भी वह रुका और किसान से कहा – तुम गाड़ी पर बैठो मैं धक्का देता हूँ।

किसान हतप्रभ हो उठा। इलाके का सबसे सम्माननीय व्यक्ति। क्या वह एक किसान की इस तरह से मदद करेगा। वह भी इतनी कड़ी धूप में गाड़ी को धक्का देने जैसा काम। इतने वेशकीमती कपड़े खराब हो सकते हैं। वह ऐसा मेहनत का काम करके बीमार हो सकता है। उसने विनय के स्वरों में कहा – 'नहीं, आप पधारें। यह काम आपके लायक नहीं है।'

पर वे नहीं माने। उसे जोर देकर गाड़ी पर बिठाया और पूरी ताकत से गाड़ी को धक्का लगाया। गाड़ी निकल गई।

किसान ने देखा उनके शरीर में कीचड़ लग गया है, कपड़े फट गए और सारा शरीर पसीने से तर है।

वे एक मिनट रुके, फिर घोड़े पर सवार हुए और जिधर से आए थे उधर ही लौट पड़े।

किसान और उसके दोनों बैल अविश्वसनीय भाव से जाते हुए एक इंसान को देखते रहे।

त्राता बन धरा पर आए

साध्वी राकेशकुमारी बायतू

हे सिद्धपुरुष! महाश्रमण, पावन तेरा नाम है,
चलता फिरता महाग्रंथ, जंगम तीर्थधाम है।
जन्मोत्सव का मंगल क्षण, करता विश्व प्रणाम है,
शुभ भावों से अर्चा करती, लाखों के घनश्याम हैं।।1।।

अहिंसा यात्रा प्रणेता, विश्व शांति के अग्रदूत,
दूगड़ कुल के हो उजियारे, भारत मां के लाल सपूत।
पांव पांव चल नेपाल शिखर तक, पहुँचाई प्रज्ञा प्रभूत
फैलाया संदेश विश्व में, महावीर वाणी के दूत।।2।।

प्रकृति प्रदत्त हुई कसौटी, नेपाल धरा थर्राई
डोली धरती डोला नभ भी घड़ी विनाश की आई
हुई तबाही पल मात्र में, सर्वत्र काल कालिमा छाई
व्यथा-तिमिर में गुरुवर तूने साहस की शिखा जलाई।।3।।

आर्तों का दुख हरने हेतु त्राता बन धरा पर आए
तेजस्वी आभावलय से जीवन आश्वास फैलाए
तेरापंथ के मुकुटमणी, जिन शासन के ध्रुवतारे
आध्यात्मिक संवेदना प्रकट कर, विपदा में बने सहारे।।4।।

अदम्य साहस प्रबल पुण्याई, पराभूत हुआ प्रभंजन
शुभ कामना वंदन करते, रहें स्वस्थ चिरायु नेमानन्दन।।5।।

धार्मिक विश्वास, जाति, संप्रदाय, मान्यता, अवधारणा, भ्रांति एवं विचार-भेद को समझे बिना और उसके प्रति सही दृष्टिकोण अपनाए बिना अहिंसा की अवधारणा को सही रूप में प्रतिष्ठित नहीं किया जा सकता। अहिंसा को जीवन में उतारने के लिए उक्त तथ्यों पर विशद विचार की आवश्यकता है।

जैन परम्परा में अहिंसा का स्वरूप

समणी डॉ. सत्यप्रज्ञा

अहिंसा का सिद्धांत आर्य परम्परा में बहुत प्राचीन है। सभी आर्य परम्पराओं में अहिंसा का आदर एक-सा रहा है। प्रजा जीवन के विस्तार तथा विभिन्न धार्मिक परंपराओं के विकास के साथ अहिंसा के विचार तथा व्यवहार में भी अनेकमुखी विकास हुआ है। अहिंसा विषयक विचार के मुख्य दो स्रोत प्राचीन काल से ही आर्य परंपरा में रहे हैं। एक स्रोत श्रमण जीवन का और दूसरा स्रोत ब्राह्मण परंपरा के चतुर्विध आश्रम के जीवन का रहा है। तात्त्विक रूप से अहिंसा सबको एक-सी मान्य होने पर भी उसके व्यावहारिक उपयोग में भेद देखा जाता है। उसका प्रधान कारण जीवन दृष्टि का भेद है। श्रमण परंपरा की जीवन दृष्टि प्रधानतया वैयक्तिक और आध्यात्मिक रही है। अहिंसा का आधार आत्मविद्या है। श्रमण परंपरा आत्मविद्या परम्परा है। अहिंसा धर्म की प्रतिष्ठा आत्मौपम्य की दृष्टि से ही हुई है।

अहिंसा : अर्थ-विमर्श - हिंसा शब्द हननार्थक 'हिंसि' धातु से बना है। नञ्पूर्वक हिसि (हिंस) धातु से अङ् (अ) और स्त्रीलिंग में टाप् करने से अहिंसा शब्द बनता है। हिंसा का अर्थ है - असद् प्रवृत्ति या असद् प्रवृत्तिपूर्वक किसी प्राणी का प्राण-वियोजन। इसके विपरीत हिंसा न करना, किसी जीव को दुःख या कष्ट न देना अहिंसा है। यह अहिंसा शब्द की उत्पत्तिपरक व्याख्या है। यह अहिंसा की नकारात्मक अभिव्यक्ति है। अहिंसा की विविध परिभाषाओं में उसका पाप-निवर्तक रूप मिलता है। यह अहिंसा का एक पक्ष है, संपूर्ण नहीं। अहिंसा का शब्दार्थ है - जो हिंसा रहित है। किंतु यह शब्दार्थ उसके वास्तविक अर्थ को जानने के लिए पर्याप्त नहीं है। सम्पूर्ण अर्थ को जानने के लिए अहिंसा के भावात्मक पक्ष को ग्रहण करना अपेक्षित है।

भगवान महावीर कहते हैं - 'अहिंसा निउणं दिट्ठा सव्व भूएसु संजमो।' प्राणी मात्र के प्रति

संयम - अहिंसा है। आत्मनिग्रही, नियंत्रितमना, सावधान, सतर्क, अपने आवेगों को रोक लेने वाला संयमी होता है।

जैन धर्म में अहिंसा के लिए प्राचीन शब्द 'प्राणातिपात–विरमण' है। यह भावना विकसित होते-होते चार रूपों में सामने आई।

1. पर-प्राण-वध जैसे पाप है,

2. वैसे स्व प्राण वध भी पाप है।

3. पर के आत्म गुण का विनाश करना जैसे पाप है,

4. वैसे अपने आत्म गुण का विनाश करना भी पाप है।

इस विस्तृत अर्थ को संक्षेप में रखने की आवश्यकता हुई, तब अहिंसा शब्द प्रयोग में आया। इसका संबंध केवल 'प्राणवध से मुक्त होना' न होकर 'असद् प्रवृत्ति मात्र से मुक्त होना' है। आत्मा की अशुद्ध परिणति मात्र हिंसा है। इससे मुक्त होना अहिंसा है।

अहिंसा भयभीत प्राणियों के लिए शरण है। पक्षियों के लिए जैसे गगन, प्यासे प्राणियों के लिए जल, भूखों के लिए भोजन, समुद्रयात्री के लिए पोतवहन, चतुष्पदों के लिए आश्रयपद, दुखार्त मनुष्यों के लिए औषधि - बल, अटवीमध्य गमन करने वालों के लिए जैसे सार्थगमन आधारभूत होते हैं, अहिंसा उनसे भी विशिष्टतर आधारभूत है।

अहिंसा : परिभाषा - अहिंसा को भगवान महावीर ने सब जीवों के लिए कल्याणकारी माना। सब जीवों के प्रति संयमपूर्ण व्यवहार अहिंसा है। जैन सिद्धांत दीपिका में अहिंसा को परिभाषित करते हुए कहा गया - *प्राणानामनतिपातः सर्वभूतेषु संयमः अप्रमादो वा अहिंसा।* किसी जीव की हिंसा न करना, सब प्राणियों के प्रति संयम रखना व अप्रमाद अहिंसा है। इन तीनों तथ्यों का सम्मिलित रूप ही पूर्ण अहिंसा है।

1. हनन न करें - किसी भी प्राणी के जीवन का हनन नहीं करना चाहिए। इस अहिंसा सूत्र का प्रतिपादन अर्हतों ने किया। जीवन के वाचक चार शब्द हैं -

प्राण - जो आन, पान, उच्छ्वास और निःश्वास से युक्त हैं, वे प्राण कहलाते हैं।

भूत - जो थे, हैं और रहेंगे, वे भूत कहलाते हैं।

जीव - जिससे जीव जीता है, जो जीवत्व और आयुष्य कर्म का उपजीवी है, वह जीव है।

सत्त्व - जिसमें शुभ-अशुभ कर्मों की सत्ता है, वह सत्त्व है।

सब प्राणियों को आयुष्य प्रिय है। वे सुख का आस्वाद करना चाहते हैं। उन्हें दुःख प्रतिकूल है, वध अप्रिय है, जीवन प्रिय हैं। वे जीवित रहना चाहते हैं।

आचारांग सूत्र में कहा गया -

- इन सबका दंड, चाबुक आदि साधनों से हनन नहीं करना चाहिए।
- इन सब पर बलपूर्वक आदेश आदि देकर शासन नहीं करना चाहिए।
- इन सबका - ये मेरे भृत्य, दास-दासी हैं - इस प्रकार ममकार के द्वारा परिग्रह नहीं करना चाहिए।
- इन्हें शारीरिक और मानसिक पीड़ा उत्पन्न कर परिताप नहीं देना चाहिए।
- इनका प्राण-वियोजन के द्वारा उद्द्रवण-मारण नहीं करना चाहिए।

हिंसा का अर्थ है - दुष्प्रयुक्त मन, वचन या काया के योगों से प्राण-व्यपरोपण करना। अहिंसा हिंसा का प्रतिपक्ष है। जीवों का अतिपात न करना अहिंसा है अथवा प्राणातिपात विरति अहिंसा है।

2. सब प्राणियों के प्रति संयम

अहिंसा की परिभाषा है - सब जीवों के प्रति संयम।

संयम का अर्थ है - हिंसा आदि आश्रवों की विरति। इस तरह जो अहिंसा है, वही संयम है। संयम के बिना अहिंसा टिक नहीं सकती। अहिंसा में सर्व प्राणातिपात विरमण आदि पांच महाव्रत के पालन पर जोर दिया गया है। संयम में महाव्रतों की रक्षा के लिए आवश्यक नियमों के पालन निर्देश है। इस प्रकार संयम का अहिंसा पर उपग्रहकारित्व है। अहिंसा शब्द से केवल निवृत्ति का भाव परिलक्षित होता है, संयम में संयत प्रवृत्ति भी अन्तर्निहित है। संयमी के ही भावतः संपूर्ण अहिंसा हो सकती है। 'जिसे तू मारना चाहता है वह तू ही है।' प्राणीमात्र में इस अभेद बुद्धि के जागने से अहिंसा प्रतिष्ठित हो सकती है।

अहिंसा शब्द से केवल निवृत्ति का भाव परिलक्षित होता है, संयम में संयत प्रवृत्ति भी अन्तर्निहित है। संयमी के ही भावतः संपूर्ण अहिंसा हो सकती है। 'जिसे तू मारना चाहता है वह तू ही है।' प्राणीमात्र में इस अभेद बुद्धि के जागने से अहिंसा प्रतिष्ठित हो सकती है।

द्वेष, घृणा, क्रोध - ये शस्त्र हैं। मैत्री, क्षमा - ये अशस्त्र हैं। शस्त्र में विषमता होती है। विषमता अर्थात अपकर्ष और उत्कर्ष। अतः कोई मनुष्य 'अ' के प्रति मंद द्वेष करता है। 'ब' के प्रति तीव्र द्वेष करता है। 'क' के प्रति तीव्रतर द्वेष करता है। 'ख' के प्रति तीव्रतम द्वेष करता है। इस प्रकार शस्त्र मंद, तीव्र, तीव्रतर और तीव्रतम होता है। अशस्त्र में समता होती है। समभाव एक रूप होता है। यह 'अ' के प्रति मंद और 'ब' के प्रति तीव्र नहीं हो सकता। हिंसा शस्त्र से ही नहीं होती। वह स्वयं शस्त्र है। हिंसा का अर्थ है - असंयम। जिसकी इन्द्रियां और मन असंयत होते हैं, वह प्राणी मात्र के लिए शस्त्र होता है। अहिंसा अशस्त्र है। प्राणी मात्र के प्रति संयम होना अहिंसा है। जिसकी इन्द्रियां और मन संयत होते हैं, वह प्राणी मात्र के लिए अशस्त्र होता है।

जिनदास महत्तर के अनुसार संयम का अर्थ उपरम है। राग-द्वेष से रहित हो एकीभाव-समभाव में स्थित होना संयम है। हरिभद्रसूरि ने संयम का अर्थ करते हुए कहा है –'आश्रवद्वारोपरमः' अर्थात कर्म आने के पांच द्वार हैं – हिंसा, मृषा, अदत्त, मैथुन और परिग्रह। उनसे उपरमता - विरति संयम है।

दसवेआलियं में संयम का अर्थ अधिक व्यापक है। हिंसा आदि पांच अविरतियों का त्याग, कषायों पर विजय, इन्द्रियों का निग्रह, समितियों - आवश्यक प्रवृत्तियों को करते समय विहित नियमों का पालन तथा मन, वचन, काया की गुप्ति - ये सब 'संयम' शब्द में अन्तर्निहित हैं।

3. अप्रमाद - जागरूकता - भगवान महावीर की साधना का मौलिक आधार है - अप्रमाद अर्थात निरंतर जागरूक रहना। पुरुषार्थ जागता है तो अंतरात्मा जाग उठती है। पुरुषार्थ सोता है तो अंतरात्मा सो जाती है। अप्रमाद का पहला सूत्र है - आत्मदर्शन। भगवान ने कहा - आत्मा से आत्मा को देखो। संपिक्खए अप्पगमप्पएणं।' अनन्य दर्शन का अर्थ है- आत्म-दर्शन। जो आत्मा को देखता है, वह आत्मा में रमण करता है। जो आत्मा में रमण करता है, वह आत्मा को देखता है। दर्शन के बाद रमण और रमण के बाद फिर स्पष्ट दर्शन - यह क्रम चलता रहता है। वासना और कषाय (क्रोध, अभिमान, माया, लोभ) ये आत्मा से अन्य हैं। आत्मा को देखने वाला अन्य में रमण नहीं करता।

आत्मा को जानना ही सम्यग् ज्ञान है। आत्मा को देखना ही सम्यग् दर्शन है। आत्मा में रमण करना सम्यग् चारित्र है। यही मुक्ति का मार्ग है।

अप्रमाद का दूसरा सूत्र है - वर्तमान में जीना-क्रियमाण

क्रिया से अभिन्न होकर जीना। वर्तमान क्रिया में तन्मय होने वाला अन्य क्रिया को नहीं देखता। जो अतीत की स्मृति और भविष्य की कल्पना में खोया रहता है, वह वर्तमान में नहीं रह सकता। जब व्यक्ति एक क्रिया करता है और उसका मन दूसरी क्रिया में दौड़ता है, तब वह वर्तमान के प्रति जागरूक नहीं रह पाता।

यह शरीर-दर्शन की प्रक्रिया अन्तर्मुखी होने की प्रक्रिया है। सामान्यतः बाहर की ओर प्रवाहित होने वाली चैतन्य की धारा को अन्तर की ओर प्रवाहित करने का प्रथम साधन स्थूल शरीर है। इस स्थूल शरीर के भीतर तैजस और कर्म - ये दो सूक्ष्म शरीर हैं। उनके भीतर आत्मा है। स्थूल शरीर की क्रियाओं और संवेदनाओं को देखने का अभ्यास करने वाला क्रमशः तैजस और कर्म शरीर को देखने लग जाता है। शरीर-दर्शन का दृढ़ अभ्यास और मन के सुशिक्षित होने पर शरीर में प्रवाहित होने वाली चैतन्य की धारा का साक्षात् होने लग जाता है। जैसे-जैसे साधक स्थूल से सूक्ष्म दर्शन की ओर आगे बढ़ता है, वैसे-वैसे उसका अप्रमाद बढ़ता जाता है।

आत्मा को जानना ही सम्यग् ज्ञान है। आत्मा को देखना ही सम्यग् दर्शन है। आत्मा में रमण करना सम्यग् चारित्र है। यही मुक्ति का मार्ग है।

प्रमाद छह प्रकार का होता है - मद, निद्रा, विषय, कषाय, द्यूत, निरीक्षण प्रमाद। सभी प्रकार के प्रमाद का परिहार करके ही अप्रमाद के पथ पर बढ़ा जा सकता है। हिंसा प्रमाद-अयतना-असंयम में ही है फिर चाहे किसी जीवन का घात न भी होता हो।

पूर्णरूपेण अहिंसक रहने के लिए चित्तगत क्लेश (प्रमाद) का त्याग करना अपेक्षित है। इसके होने से ही अहिंसा सिद्ध हो सकती है। अहिंसा का बाह्य प्रवृत्तियों के साथ कोई नियत संबंध नहीं है। उसका नियत संबंध मानसिक प्रवृत्तियों के साथ है। इन तीन अवस्थाओं में अहिंसा के विधेयात्मक व निषेधात्मक दोनों पक्ष शामिल हैं। अहिंसा के दो रूप हैं - निषेधात्मक और विधेयात्मक। अहिंसा में प्रयुक्त 'अ' नञ् का रूप है। इसके दो अर्थ होते हैं -

द्वौ नयौ समाख्यातौ पर्युदास प्रसज्यकौ।
पर्युदास सदृशग्राही प्रसज्यस्तु निषेधकृत।।

अर्थात् नञ् के दो अर्थ होते हैं - पर्युदास और प्रसज्य। पर्युदास सदृशग्राही और प्रसज्य निषेधग्राही है। अहिंसा शब्द से प्राणव्यपरोपण रूप हिंसा का निषेध हो जाता है लेकिन 'अ' से अहिंसा के सदृश दया, करुणा, मैत्री आदि भावों का ग्रहण हो जाता है। ये सादृश्य भाव अहिंसा को पुष्ट करते हैं या अहिंसा के फलित रूप भी हो सकते हैं। प्राणी की हिंसा न करना - अहिंसा की निषेध परक व्याख्या है। जो प्रायः सर्वत्र प्रचलित है। सबके प्रति संयम व जागरूकता अहिंसा की विधेयात्मक व्याख्या है - जो जैन धर्म की विशिष्ट देन है। इसे हम इस रूप में भी समझ सकते हैं -

अहिंसा की अभिव्यक्ति के दो रूप -

1. निषेधात्मक अभिव्यक्ति
2. विधेयात्मक अभिव्यक्ति

1. निषेधात्मक अभिव्यक्ति के रूप - हिंसा न करना, न करवाना, न अनुमोदन करना। यह भी तीन-तीन स्तर से- मन से, वचन से, काय से
2. विधेयात्मक अभिव्यक्ति के रूप - संयम और अप्रमाद अर्थात् जागरूकता। संयम के क्षेत्र - त्रस और स्थावर जीव निकाय।

स्थावर जीव निकाय - पृथ्वीकाय, अप्काय, तेजसकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रस जीव निकाय - द्विन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय।

अहिंसा के सभी चिंतकों ने बताया है कि कृत, कारित, अनुमोदित तथा मनसा-वाचा-कर्मणा-प्राणी मात्र को कष्ट न पहुंचाना अहिंसा है। संयम और अप्रमाद अहिंसा है। जैन परंपरा में किसी भी सूक्ष्म जीव की हिंसा की छूट नहीं दी है और न उसकी हिंसा को अहिंसा बताया है।

निषेधपरक व्याख्या का आधार - अहिंसा की निषेध परक व्याख्या के संदर्भ में कहा जा सकता है - हिंसा सदेह अवस्था में होती है और अहिंसा भी उसी में। विदेह दशा में हिंसा और अहिंसा की कोई कल्पना ही नहीं होती। हिंसा बंधन या सदेह दशा का हेतु है। अहिंसा मुक्ति या विदेह दशा का हेतु है। मुक्ति होने के बाद अहिंसा आत्मा की शुद्धि रूप रह जाती है, साधना रूप नहीं। मुक्ति का धर्म है - हिंसा का निषेध इसीलिए मोक्ष धर्म का स्वरूप नकार की भाषा में कहा गया। महात्मा गांधी ने इस संदर्भ में लिखा - 'मानवों में जीवन संचार किसी न किसी हिंसा से होता है इसीलिए सर्वोपरि धर्म की परिभाषा एक नकारात्मक कार्य - अहिंसा से की गई है। दूसरे शब्दों में - शरीर में जीवन संचार के लिए हिंसा आवश्यक है। इसी कारण अहिंसा का पुजारी सदैव प्रार्थना करता है कि उसे शरीर के बंधन से मुक्ति प्राप्त हो।

अहिंसा शब्द से प्राणव्यपरोपण रूप हिंसा का निषेध हो जाता है लेकिन 'अ' से अहिंसा के सदृश दया, करुणा, मैत्री आदि भावों का ग्रहण हो जाता है। ये सादृश्य भाव अहिंसा को पुष्ट करते हैं या अहिंसा के फलित रूप भी हो सकते हैं। प्राणी की हिंसा न करना - अहिंसा की निषेध परक व्याख्या है। जो प्राय: सर्वत्र प्रचलित है। सबके प्रति संयम व जागरूकता अहिंसा की विधेयात्मक व्याख्या है - जो जैन धर्म की विशिष्ट देन है।

भारतीय दर्शन में दया, करुणा, प्रेम आदि के लिए अहिंसा जैसे नकारात्मक शब्द का हेतु यह भी बताया जाता है कि भारतीय जीवन पद्धति का अंतिम प्रयोजन या मूल्य मोक्ष है। मोक्ष का अर्थ मुक्त होने से है। जीवन में सद्‌गुणों को मोक्ष के संदर्भ में ही ग्रहण किया गया है। अहिंसा यहां हिंसा से मोक्ष या मुक्ति है। व्यावहारिक दृष्टि से भी हिंसा का निराकरण, प्रेम अथवा करुणा की स्वीकृति की अपेक्षा अधिक सहज है - इस आचरण में आसानी से उतारा जा सकता है। चूंकि अहिंसा के पारिभाषिक अर्थ निषेधात्मक एवं विधेयात्मक दोनों हैं। प्राणवध न करना, राग-द्वेषात्मक प्रवृत्ति मात्र का निरोध करना निषेधात्मक अहिंसा है। सत्प्रवृत्ति करना, आत्महितकारी क्रिया करना विधेयात्मक अहिंसा है। सब प्राणियों के साथ मैत्री का संदेश प्रवृत्ति रूप अहिंसा का विधान करता है। आत्म तुला के मर्म को समझे बिना हिंसा वृत्ति नहीं छूटती। अतः अहिंसा में मैत्री रूप विधि और अमैत्री का त्याग रूप निषेध दोनों समाए हुए हैं। सब जीवों को अपने समान समझो और किसी को हानि मत पहुंचाओं, इस कथन में अहिंसा के दोनों रूप हैं। अपना और पराया आत्म-विकास करना, दुःख के मूल का उच्छेद करना, संयममय क्रियाएं करना अहिंसा की सक्रियता है। इसी का फलित अर्थ है - मैत्री। आत्मा की राग-द्वेष रहित परिणति और उससे संबलित जो कार्य होता है, वही सही अर्थ में मैत्री है। राग और द्वेष से मुक्त होना अहिंसा है। सब जीवों के प्रति संयम करना, समभाव रखना अहिंसा है। समानता का भाव सामुदायिक जीवन में विकसित होता है तब अहिंसक क्रांति घटित हो जाती है। महावीर ने अहिंसक क्रांति के सूत्र दिए -

1. किसी का वध मत करो।
2. किसी से वैर मत करो। जो दूसरों के साथ वैर

करता है, वह अपने वैर की शृंखला को प्रलम्ब कर देता है।

3. सब के साथ मैत्री करो। अहिंसा के इन सूत्रों का मूल्य वैयक्ति था। महावीर ने सामाजिक संदर्भ में भी अहिंसा के सूत्र प्रस्तुत किए।
4. उस समय दास-प्रथा चालू थी। सम्पन्न मनुष्य विपन्न मनुष्य को खरीदकर दास बना लेता था। महावीर ने इस हिंसा के प्रति जनता का ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने कहा - दास बनाना हिंसा है, इसलिए किसी को दास मत बनाओ।
5. उस समय के पुरुष स्त्रियों को और शासक वर्ग शोषितों को पराधीन रखना अपना अधिकार मानते थे। महावीर ने इस ओर जनता का ध्यान खींचा कि दूसरों को पराधीन बनाना हिंसा है। उन्होंने अहिंसा का सूत्र दिया - दूसरों की स्वाधीनता का अपहरण मत करो।
6. उस समय उच्च और नीच - ये दो जातियां समाज-व्यवस्था द्वारा स्वीकृत थी। उच्च जाति नीच जाति से घृणा करती थी। उसे अछूत भी मानती थी। महावीर ने इस व्यवस्था को अमानवीय प्रतिपादित किया। उन्होंने कहा - जाति वास्तविक नहीं है। जाति-व्यवस्था परिवर्तनशील है, काल्पनिक है। उसे शाश्वत का रूप देकर हिंसा को प्रोत्साहन मत दो। *किसी मनुष्य से घृणा मत करो। उन्होंने सब जाति के* लोगों को अपने संघ में सम्मिलित कर 'मनुष्य जाति एक है' - इस आंदोलन को गतिशील बना दिया।
7. उस समय स्वर्ग की प्राप्ति के लिए पशु बलि दी जाती थी। महावीर ने कहा - स्वर्ग मनुष्य का उद्देश्य नहीं है। उसका उद्देश्य है - निर्वाण - परमशांति। पशुबलि से स्वर्ग नहीं मिलता। जो पशु बलि देता है, वह मूक पशुओं की हिंसा कर अपने लिए नरक का द्वार खोलता है।
8. उस समय माना जाता था कि युद्ध में मरने वाला स्वर्ग में जाता है। महावीर ने इसकी अवास्तविकता का प्रतिपादन करते हुए कहा - युद्ध हिंसा है। वैर से वैर बढ़ता है। उससे समस्या का समाधान नहीं होता।
9. आक्रमण मत करो। मांसाहार और शिकार का वर्जन करो।

अहिंसा का महत्व - अहिंसा भयभीत प्राणियों के लिए शरण है। पक्षियों के लिए जैसे गगन, प्यासे प्राणियों के लिए जल, भूखों के लिए भोजन, समुद्रयात्री के लिए पोतवहन, चतुष्पदों के लिए आश्रयपद, दुखार्त मनुष्यों के लिए औषधि - बल, अटवीमध्य गमन करने वालों के लिए जैसे सार्थगमन आधारभूत होते हैं, अहिंसा उनसे भी विशिष्टतर आधारभूत है। यह पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, वनस्पति, त्रस, स्थावर सब प्राणियों का क्षेम करने वाली है। ■

नाविरतोदुश्चरितान्नाशान्तो नासमाहितः।
नाशान्तमानसो वापि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात्।।

जो पाप कर्मों से निवृत्त नहीं हुआ है, जिसकी इन्द्रियाँ शान्त नहीं हैं और जिसका चित्त असमाहित या अशान्त है, वह परमात्मा को आत्मज्ञान द्वारा प्राप्त नहीं कर सकता।

जीवन में धर्म को व्यावहारिक भूमिका में लाकर ही सही अर्थों में व्याख्यायित किया जा सकता है। जब तक धर्म केवल रूढ़ियों, मान्यताओं एवं संकीर्ण परिप्रेक्ष्य में परिभाषित होता रहेगा तब तक समाज में द्वंद्व की स्थिति बनी रहेगी। भारतीयता एवं धर्म को व्यापक संदर्भों में समझने की जरूरत है।

दीन, धर्म और भारतीयता

एस. बशीरुद्दीन
भूतपूर्व कुलपति, डॉ. बी. आर. अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय

भारतीयता और हिन्दुत्व समानार्थी शब्द हैं। इसका ज्ञान लोगों की सोच पर निर्भर है और यह सोच उस हर व्यक्ति के भीतर है जिसके पास खुला मन है तथा जो भारतीय संस्कृति को गहराई से समझता है। ये तीनों शब्द उसके लिए पर्यायवाची हैं। परंतु जब इन शब्दों का प्रयोग तुच्छ स्वार्थों से प्रेरित होकर सीमित राजनीतिक उद्देश्यों के लिए एक संकीर्ण संदर्भ में किया जाता है तो उनमें आकाश-पाताल का अन्तर आ जाता है।

भारत में परेशानी की जड़ यह है कि संविधान की संस्तुति के अनुसार पारिभाषिक अर्थ में राज्य का विचार और कार्य में धर्म निरपेक्ष होना तय किया गया है। यद्यपि यह एक उत्तम उद्देश्य है, किंतु इसके कारण संस्कृति और समाज की बहुत-सी उपयोगी भूमिकाओं का हनन भी हो जाता है। आज लगभग एक हजार वर्षों से भारत में रहते आ रहे मुसलमानों के मन में हिन्दुत्व के प्रति नकारात्मक चिन्तन नहीं आना चाहिए। लगभग यही बात ईसाइयों और सिक्खों पर भी लागू होती है। इस स्थिति से निपटने का सबसे अच्छा तरीका है 'हिन्दुत्व' भारतीयपन या आपको अच्छा लगे तो उसके संस्कृत-पर्याय 'भारतीयता' को समझना, जिसका किसी भी दृष्टि से देखने पर अर्थ होता है भारत की संस्कृति, वैशिष्ट्य एवं भारत की ऐतिहासिक विरासत। व्यावहारिक दृष्टि से इसका अर्थ होना चाहिए अभिवादन का एक प्रकार, जैसे नमस्कार, नाम के पहले 'श्री या श्रीमती' का सम्बोधन अथवा तमिल भाषा में 'थिरु' और उसी प्रकार किसी उर्दू या हिन्दी भाषी के लिए 'साहेब' तथा 'जी'।

सही तरीके से देखा जाए तो इस्लाम एक मज़हब नहीं, अपितु धर्म है, जिसमें सर्वशक्तिमान के प्रति समर्पण किया जाता है। इस्लाम में जन्मनेवाला बच्चा परमात्मा के प्राकृतिक नियम के अनुसार ही शरीर धारण करता है। उसका न कोई आदि है और न अन्त, क्योंकि इस्लाम का

अर्थ होता है - ईश्वर का अन्तर्यामित्व, जो मनुष्य की जीवन-नाड़ी (शहरग) से भी अधिक निकट है। उसी प्रकार सनातन धर्म भारत की चिरन्तन प्राचीन परम्परा का द्योतक है जो प्रमुख रूप से व्यापक हिन्दू धर्म के उदात्त पक्षों को नियंत्रित करता है। बुद्ध का धर्मपाद (धम्मपद) भी उससे भिन्न नहीं है। यदि भिन्नता है तो केवल यह कि उसकी व्यवस्था और उसके विस्तार के मूल में गौतम बुद्ध हैं।

देश की सर्वोच्च न्यायपालिका ने ही हिन्दुत्व की इतनी व्यापक व्याख्या प्रस्तुत कर दी है तो व्यक्ति को उस निर्णय का न केवल सम्मान करना चाहिए, अपितु यह प्रयास भी करना चाहिए कि इस धारणा को और भी अधिक व्यापक कैसे बनाया जाए ताकि भारतीय संस्कृति और परम्परा की सभी धाराएँ उसमें समा सकें।

हिन्दुत्व की छत्रछाया में इस्लामी 'दीन' (नैतिक विधान) एवं 'हिन्दू धर्म' (सदाचार) साथ-साथ चल सकते हैं, क्योंकि वे मत या मज़हब नहीं अपितु व्यक्तिगत और सामाजिक सदाचार को नियंत्रित करनेवाले सार्वभौमिक आधार हैं। परंतु हुआ यह कि एक राजनीतिक दल ने स्वविवेक से हिन्दुत्व को अपना मुख्य आधार बना लिया। परंतु इसके कारण समग्र हिन्दुत्व को संकीर्ण धरातल पर नहीं उतरा जा सकता। इस्लामी दीन का सार है - सर्वशक्तिमान के अधीन रहकर अथवा ईश्वर या नैतिक विधान के प्रति निष्ठावान रहकर ईमानदार बनना। उसी प्रकार हिन्दूधर्म का सार भी धर्म अर्थात सदाचार का पालन करना है। यदि कोई हिन्दुत्व, इंडियैनिज्म (Indianism) या भारतीयता को समझने का प्रयास करे तो पता चलेगा कि इनका अर्थ है - भारतीयों की जीवन-पद्धति, न कि उपासना के रूप में किए जाने वाले रीति-रिवाजों का विवरण।

उसी प्रकार 'दीन' को यदि इस्लाम का अनिवार्य अंग मान लिया जाए, जिसके अनुसार एक मानव स्वयं को परमेश्वर के प्रति समर्पित करते हुए प्रकृति के विधान एवं आत्मसंयम से बरतता है तो 'दीन' और 'धर्म' में कोई भी विरोध नहीं हो सकता।

हिन्दुत्व एक सर्वस्पर्शी व्यापक अवधारणा है जो भविष्य में अधिकाधिक पल्लवित होती हुई भारत में गहरी जड़ जमा लेगी। अतः यह समय की माँग है कि प्रबुद्ध मुसलमान हिन्दुत्व को किसी काल्पनिक भय की दृष्टि से न देखते हुए उसे हजारों वर्ष से चली आ रही एक प्राचीन परम्परा के रूप में देखें, जिसके अन्तर्गत बारह सौ वर्ष से भी अधिक पुरानी भारतीय और इस्लामी प्रथाएँ सुचारु रूप से चल सकें।

'खान साहेब' जैसा सम्बोधन 'आदाब अर्ज' के रूप में अभिवादन हिन्दुत्व या भारतीयपन या भारतीयता के विरुद्ध नहीं माना जाना चाहिए, क्योंकि ताजमहल, बीजापुर का गोल गुम्बज, आगरा के निकट फतेहपुर सीकरी सभी भारतीय विरासत के ही अंग हैं। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि मुसलमान भी हिन्दुत्व के अभिन्न अंग हैं, फिर उनके नाम संस्कृत परम्परा के हों या अरबी-मूल के, वह अशोक हो या अकबर, फातिमा हो या पद्मा। ये विभेद मात्र सतही हैं, मानव का अस्तित्व हिन्दुत्व के अंतर्गत पूरी तरह सुरक्षित है।

17 करोड़ जनसंख्या वाला विश्व का सबसे बड़ा मुस्लिम बहुल देश इंडोनेशिया रामायण और महाभारत को यदि अपनी सांस्कृतिक विरासत का उद्‌गम मान सकता है तो कोई कारण नहीं कि भारत में बसे मुसलमानों को हिन्दुत्व को अपनी यथोचित सांस्कृतिक

विरासत मानने में कुछ हिचक हो।

मनोहर जोशी के मुकदमे से संबंधित उच्चतम न्यायालय के निर्णय के बाद से हिन्दुत्व को गम्भीरता से लिया जा रहा है, जिसमें कहा गया है कि हिन्दुत्व का सम्बन्ध हिन्दू-उपासना पद्धति या जीवन-पद्धति से न होकर व्यापक अर्थ में भारत की सांस्कृतिक विरासत से है। हठधर्मिता से जब तक कोई इसकी परिभाषा को संकीर्ण नहीं बना देता, तब तक इसका सम्बन्ध मात्र हिन्दू-उपासना-पद्धति या हिन्दू-जीवन-पद्धति से नहीं जोड़ा जा सकता।

कुरान में स्पष्ट रूप से अन्य उपासना-विधियों का उल्लेख करते हुए कहा गया है – 'तुम्हारे लिए तुम्हारी उपासना विधि और मेरे लिए मेरी उपासना-विधि और जब हम दोनों को ही ईश्वर की प्राप्ति होगी तब वे (ईश्वर) बतलाएंगे कि क्या सही है और क्या गलत।' इससे पता चलता है कि उपासना विधि के सम्बन्ध में कुरान में लचीलापन है, उसमें विविध उपासना-विधियों के साथ-साथ चलते रहने को स्थान प्राप्त है तथा उनके औचित्य का निर्णय केवल ईश्वर के अधीन है अतः उपासना-पद्धति में किसी प्रकार का आग्रह नहीं होना चाहिए।

उसी प्रकार हिन्दुत्व से प्राप्त 'सर्वधर्म-समभाव' की भारतीय अवधारणा का अर्थ है कि सभी धर्म (पंथ) समान रूप से सम्माननीय हैं। यह भय कि हिन्दुत्व के कारण मुसलमानों की सांस्कृतिक पहचान (अस्तित्व) खतरे में पड़ जाएगी निराधार है, क्योंकि इस सम्बन्ध में व्यक्ति को स्वयं के जीवन के उच्चतम न्यायालय द्वारा निर्णीत सत्य की नयी चेतना में विकसित करने का प्रयास करना है। अब जब देश की सर्वोच्च न्यायपालिका ने ही हिन्दुत्व की इतनी व्यापक व्याख्या प्रस्तुत कर दी है तो व्यक्ति को उस निर्णय का न केवल सम्मान करना चाहिए, अपितु यह प्रयास भी करना चाहिए कि इस धारणा को और भी अधिक व्यापक कैसे बनाया जाए ताकि भारतीय संस्कृति और परम्परा की सभी धाराएँ उसमें समा सकें।

एक अन्य दृष्टिकोण यह है कि 'भारतीयता' तो हिन्दुत्व के निहितार्थों से बच निकलने का एक भाषाई तरीका है, परंतु जिनको हिन्दुत्व पर आपत्ति है उनको भारतीयता पर भी मानसिक दुराग्रह हो सकता है।

यदि कोई हिन्दुत्व, इंडियैनिज्म या भारतीयता को समझने का प्रयास करे तो पता चलेगा कि इनका अर्थ है - भारतीयों की जीवन-पद्धति, न कि उपासना के रूप में किए जाने वाले रीति-रिवाजों का विवरण।

शरिया के अनुमोदन के बिना ही बाबरी मस्जिद स्थान-परिवर्तन-विवाद का पटाक्षेप हो गया अन्यथा मुसलमानों के लिए अपनी सदियों पुरानी कड़वाहट, जो मुस्लिम आक्रान्ताओं द्वारा अपने मज़हब के प्रचार के लिए मस्जिद खड़ी करने से आई थी, को दूर करने का एक अच्छा अवसर हो सकता था। स्वेच्छा से मस्जिद के स्थानान्तरण द्वारा मुसलमानों को न केवल व्यथित बहुसंख्यक हिन्दू समाज की सद्भावना प्राप्त हुई होती, बल्कि भीषण रक्तपात एवं दो समुदायों के बीच भाववेदना से भी बचा जा सकता था।

किंतु कुछ मुसलमानों के अपने ही भय और अविश्वास के कारण मुस्लिम समाज को बिना किसी प्रकार की सद्भावना दिए मस्जिद तो चली ही गई और छोड़ गई दोनों ओर केवल कटुता और प्रतिरोध की दुर्गन्ध। भारत की सीमा से पार दूर देश की एक विदेशी संस्कृति को अपने मज़हब का अंग मानना जो कि वास्तव में है नहीं, इस्लाम की अत्यन्त अदूरदृष्टि है। 17 करोड़ की जनसंख्यावाले विश्व के सबसे बड़े इस्लामी देश

इंडोनेशिया में जहाँ 90 प्रतिशत जनसंख्या मुसलमान है, रामायण और महाभारत के चित्र कार्यालयों में लगे हुए हैं, विष्णु और गणेश की प्रतिमाएँ रास्ते के चौराहों पर लगी हैं तथा शिव और पार्वती जैसे देव-देवियों को तराशते हुए मुसलमान 1000 वर्ष पूर्व से हिन्दू-पूजा-पद्धति और परम्परा में पले होने की अपनी हिन्दुत्व-चेतना का परिचय दे रहे हैं।

भारत में बार-बार होनेवाले साम्प्रदायिक दंगों के कई कारण बताए जाते हैं। परंतु इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि भारत की बहुसंख्यक जनता के मन में यह भाव समाया हुआ है कि हम पर विदेशी संस्कृति थोपी गई है तथा हमारे पवित्र मन्दिरों को नष्ट-भ्रष्ट किया गया है। इस सम्बन्ध में मुस्लिम अल्पसंख्यकों को भी इन ऐतिहासिक तथ्यों के प्रति स्वीकारोक्तिपूर्ण सहानुभूति रखनी चाहिए न कि उसके विपरीत अनावश्यक टीका-टिप्पणी करें या अनजाने में अथवा तथ्यों को तोड़-मरोड़कर प्रस्तुत करते हुए भावनाओं को दबाएं। यद्यपि सदियों पूर्व जो कुछ हुआ उसके लिए वर्तमान पीढ़ी उत्तरदायी नहीं है, परंतु अतीत की स्मृति कराते हुए शीर्षस्थ नेताओं को हिन्दू-संस्कृति की उदारता और सहिष्णुता का अहसास तो अवश्य ही कराया जा सकता है।

मुसलमान भी हिन्दुत्व के अभिन्न अंग हैं, फिर उनके नाम संस्कृत परम्परा के हों या अरबी-मूल के, वह अशोक हो या अकबर, फातिमा हो या पद्मा। ये विभेद मात्र सतही हैं, मानव का अस्तित्व हिन्दुत्व के अंतर्गत पूरी तरह सुरक्षित है।

बहुत-सी गलतफहमियों का मूल कारण भाषाई (भाषा सम्बन्धी मतभेद) है, क्योंकि संस्कृत मुसलमानों से तथा अरबी हिन्दुओं से नितान्त भिन्न है। परंतु इन भाषाओं में निबद्ध धार्मिक मंत्र जो गलतफहमी पैदा कर सकते हैं, उनके अनुवाद यदि भारत की प्रचलित भाषाओं में उपलब्ध करा दिए जाएं, तब लोगों को पता लगेगा कि वास्तव में वे भाषा-विशेष द्वारा की जानेवाली परमेश्वर की आराधना के विविध मार्ग हैं, अतः किसी भी मार्ग के प्रति वैर-भाव रखने की आवश्यकता नहीं है।

इस संबंध में दूरसंचार माध्यमों की भूमिका निर्णायक है। भारत में दूरदर्शन और आकाशवाणी नौकरशाही नियंत्रण तथा धर्मनिरपेक्षता के संबंध में निराधार भय और आशंकाओं के कारण अपनी सामर्थ्य को नहीं समझ पाए हैं और इस कारण इस खाई को पाटने तथा धर्म के सकारात्मक पक्ष को प्रसारित करने में विफल हुए हैं। अधिक-से-अधिक कहा जाए तो श्रव्य-दृश्य माध्यम उदासीन ही रहा है। उदासीन रहना तथा बहुसंख्यक हिन्दू त्योहारों के साथ ही अन्य विविध मतों के मूल्यों, आदर्शों एवं विशेषताओं तथा मुस्लिम, सिक्ख, पारसी, जैन, ईसाई आदि सभी समुदायों के त्यौहारों को सकारात्मक एवं सहायक रूप में प्रस्तुत करते हुए प्रसारित करना एक ही बात नहीं है। दर्शकों में सोच और समझ जाग्रत करने का यही तरीका है, जिससे वे पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित करने हेतु सद्भाव निर्मित करने में सहायक हो सकें। अतः हम हिन्दुत्व का हौवा बनाकर हो-हल्ला न मचायें, बल्कि भारतीय विरासत को भारत में रहनेवाले सभी लोगों तक ले जाने की उसकी सकारात्मक भूमिका एवं सांस्कृतिक परम्परा को समझने का प्रयास करें। ■

कठोर वचन कहना, झूठ बोलना, चुगली करना और व्यर्थ बातें करना - ये चार वाणी के दोष हैं।

महात्मा कनफ्यूशियस एक ऐसे युगपुरुष थे, जिनमें सरलता के साथ-साथ सुजनता, अनवद्य विद्या, स्वाभाविक निरभिमानता और बिना भेदभाव के सेवावृत्ति की भावना थी। अपनी कीर्ति के प्रति अनुत्सुकता उनका दुर्लभ गुण था, जो किसी महिमाशाली संत में ही मिलता है।

महात्मा कनफ्यूशियस

जिस युग ने भारत में बुद्ध और महावीर तथा यूनान में सुकरात जैसे महान लोकशिक्षकों को जन्म दिया, उसी समय चीन की गोद में भी एक ऐसा अनूठा रत्न उपजा, जिसकी आभा से वहाँ के कोटि-कोटि जनों को जीवन के अन्धकारपूर्ण मार्ग पर प्रकाश और शान्ति का वरदान मिला।

मानव की वेदना से तड़पकर जिन महापुरुषों ने उसे दूर करने की चेष्टा में अपने को खपाया है, उन्हीं में से एक था यह चीन का महान व्यक्ति जो बचपन में क्यू, विद्यार्थी जीवन में 'चूंगनी' और प्रौढ़ होने पर कुंग-फू-जी के नाम से विख्यात हुआ। पर चीन से बाहर की दुनिया आज उसे पाश्चात्य लेखकों द्वारा रखे गये लातिनी नाम कनफ्यूशियस ही जानती है, किंतु महादेश चीन पिछले ढाई हजार वर्षों से इस महात्मा को कुंग के नाम से ही पूजता चला आ रहा है।

जन्म और बचपन

आधुनिक चीन के किनफू-हिथेन नामक कस्बे का नाम कई शताब्दी पूर्व 'त्सिउई' था। ई. पू. छठी शताब्दी में एक शानदार सैनिक जीवन बिताकर वहाँ के प्रमुख मैजिस्ट्रेट हुए शू-लिंग-ही। अपने एकमात्र पुत्र के मर जाने के कारण नौ पुत्रियों के पिता विधुर शू-लिंग-ही ने बुढ़ापे में अपने पद के प्रभाव से एक सरदार परिवार की कन्या का पाणिग्रहण किया। इन्हीं दम्पति ने ईसा से 550 वर्ष पूर्व शीतकाल में एक पुत्र को जन्म दिया। खुशियाँ मनाई गईं, शहनाइयाँ बजीं। पर क्या उस सुदूर अतीत की छाँह में बैठकर इस पुत्रोत्पत्ति पर खुशियाँ मनानेवालों को स्वप्न में भी यह आभास हो सका होगा कि तातारी चेहरेवाला वह नवागत शिशु मानवजाति का एक महान विचारक, पूर्व का एक उत्कट दार्शनिक और चीन की असंख्य पीढ़ियों का श्रद्धेय लोक-शिक्षक होगा?

और इस घटना के ठीक तीन ही साल बाद वृद्ध शू-लिंग-ही का देहान्त हो गया। अब नवजात

शिशु की शिक्षा-दीक्षा और रक्षा का सारा भार आ पड़ा उसकी युवती विधवा माता पर। वैसे तो बच्चे की शिक्षा बहुत कुछ माता पर ही निर्भर करती है, पर चीनियों का विश्वास इस बात में औरों से कुछ अधिक बढ़ा हुआ है। चीनियों की तो कहावत ही है कि बच्चे की शिक्षा उसकी उत्पत्ति से पहले ही शुरू हो जाती है। अतएव बालक कुंग की भी प्रारम्भिक शिक्षा में माता का सबसे बड़ा हाथ रहा।

कनफ्यूशियस ने लोक-शिक्षकों की तरह अपना कोई अलग धर्म नहीं स्थापित किया, यद्यपि उसके बाद कनफ्यूशियस धर्म नामक एक मत स्वयं ही पैदा हो गया, और आज के चीन का लगभग एक तिहाई जन-समूह इसी मत को मानता है।

बालक कुंग की मदरसे में किताबी शिक्षा शुरू हुई और कहा जाता है कि चौदह साल की उम्र में ही इस प्रतिभाशाली बालक ने यह सब कुछ पढ़ डाला जो उन दिनों के अध्यापक पढ़ा सकते थे।

पितृहीन बालक – निराश्रित माता का वह एकमात्र आश्रय – पढ़ता भी और अक्सर मछलियों का शिकार और अन्य जन्तुओं का आखेट भी किया करता, ताकि माँ का बोझ कुछ हल्का हो सके। इससे उसके अध्ययन की व्यवस्था और रुचि में व्यवधान तो उपस्थित अवश्य होता, पर इसी के फलस्वरूप उसकी प्रवृत्ति गम्भीर विचार और एकान्त चिन्तन की ओर होने लगी। अन्त में सत्रह साल की अवस्था तक पहुँचते-पहुँचते वह अवसर भी आ गया जब माँ ने बेटे को अध्ययन से विरत करके किसी लाभदायक व्यवसाय में लगाने का निर्णय लिया। युवक की विद्या की ख्याति राजदरबार तक पहुँच ही चुकी थी, अतः उसका उसमें सहज प्रवेश भी हो गया।

अब धन की प्रचुरता हुई, एक पुत्र भी हुआ। दरबार में सम्मान होने और द्रव्याभाव मिट जाने से मानव-जाति के इस भावी शिक्षक की जीवन-धारा एक विशेष दिशा में प्रवाहित होने लगी। पर शीघ्र ही वह धारा एक दिन रुक गई और उसकी दिशा एकदम बदल गई।

जीवन का नया मोड़

अभी उसका चौबीसवाँ ही साल आरम्भ हुआ था कि उसकी स्नेहमयी जननी भी एकाएक चल बसी। उस असह्य आघात को उस मानवहितैषी का कोमल हृदय सहन नहीं कर सका। माता की अन्त्येष्टि क्रिया समाप्त करके उसने पुनः एकान्त का जीवन अपनाना प्रारम्भ कर दिया। फिर वही चिन्तन, मनन और शिक्षण आदि।

पूर्व के अनेक भाग्यवादी विचारकों ने मानव के दुःखों का निवारण प्रायः संतोष और सहनशीलता में दुःखों के आदर्शीकरण में पाया है। दुर्बलों को ऊँचा उठाना नहीं, वरन उनपर दया करना उनका आदर्श रहा है। कनफ्यूशियस का वैवाहिक जीवन भी सुखमय नहीं था। कहते हैं लगभग 27 वर्ष की अवस्था में ही कुंग को अपनी पत्नी को त्याग देना पड़ा था। इतिहास को इसका कोई कारण ज्ञात नहीं है और न स्वयं कनफ्यूशियस ही ने इस विषय पर कोई विशेष प्रकाश डाला है। पर इतना निर्विवाद है कि यह घटना पत्नी के किसी अपराध के कारण नहीं घटी थी, क्योंकि कई साल बाद जब कनफ्यूशियस ने उसकी मृत्यु का समाचार सुना था तो वह अत्यन्त दुःखी हुआ था।

राज्यमंत्री और न्यायाधीश के रूप में

चीन का बादशाह 'लूका' अपने मुसाहिबों के प्रभाव से पहले तो कुंग की शिक्षा का घोर विरोधी हो गया था, पर राज्य की दिनों-दिन बिगड़ती हुई अवस्था ने उसे अन्त में विवश किया कि वह इस विचारक से सहायता प्राप्त करे और अपनी नष्ट होती हुई सत्ता को पुनः स्थापित करे। अतएव कनफ्यूशियस फिर सार्वजनिक जीवन में एक राज्यमंत्री के रूप में आया। इस पद पर आते ही उसने लोक-हित के अनेक कामों द्वारा राज्य की अवस्था में

पूरी कायापलट कर दी। मंत्री के पद के साथ ही उन दिनों चीन में प्रधान न्यायाधीश का पद भी जुड़ा हुआ था। अतएव शासन के साथ-साथ उसे न्याय भी करना पड़ता था।

एक बार आवारागर्दी की हालत में उसे प्रदेश की सीमा में पहुँचने पर वहाँ के राज्याधीश ने कुंग से प्रश्न किया था कि अच्छा शासन किसे कहते हैं?

कनफ्यूशियस ने उसका तत्काल जवाब दिया – अच्छे शासन की सफलता उस स्वाभाविक सम्बन्ध को कायम रखने में है, जो मनुष्य-मनुष्य के बीच होनी चाहिए। शासक में राजोचित चरित्र, प्रजा में राजभक्ति, माता-पिता में वात्सल्य और बच्चों में श्रद्धा होनी चाहिए। वस्तुतः उन दिनों इतना कह सकना आसान न था। क्योंकि तब न्याय होता था प्रायः सरदारों और राजाओं के लिए, आम जनता के लिए बहुत कम। एक बार अपने न्यायाधीश पद से उसने एक दुश्चरित्र सरदार को प्राणदण्ड दिया। इस कार्य पर क्षोभ का एक समुद्र उमड़ पड़ा और कनफ्यूशियस के शिष्यों और मित्रों तक को इस पर आपत्ति हुई। पर वह अटल रहा। उसने कहा - मैं आप लोगों की भावनाओं का आदर करता हूँ, यद्यपि आप गलती पर हैं। पर आपकी गलती आपके अज्ञान पर आधृत है। क्या आपको मालूम नहीं है कि बहुतरे अपराध ऐसे होते हैं जो देखने में साधारण से लगते हैं पर अवहेलना करने पर कालान्तर में मनुष्य को बड़ा अपराधी बना देते हैं। फिर एक ऐसा सरदार, जो स्वभाव से ही पाखण्डी, झूठा, निन्दक और अत्याचारी है। कठिन से कठिन दण्ड के ही योग्य है। जिसके लिए आप अफसोस कर रहे हैं वह न केवल एक बल्कि अनेक भीषण अपराधों का अपराधी था, जिसे क्षमा करना कमजोरी होती, साथ ही न्याय के साथ विश्वासघात भी।

विजेताओं का एक और वर्ग भी हमें मिलता है, जिन्होंने मनुष्य को कुचलकर भूमि या सम्पत्ति पर विजय पाने के बजाए अपना सर्वस्व त्यागकर मनुष्यों के हृदय पर विजय पाने ही में अधिक संतोष माना।

कनफ्यूशियस ने लोक-शिक्षकों की तरह अपना कोई अलग धर्म नहीं स्थापित किया, यद्यपि उसके बाद कनफ्यूशियस धर्म नामक एक मत स्वयं ही पैदा हो गया, और आज के चीन का लगभग एक तिहाई जन-समूह इसी मत को मानता है।

कनफ्यूशियस के जीवनकाल का वह समय, जबकि वह मुसीबतों का मारा यहाँ से वहाँ दर-दर की खाक छानते हुए भटकता फिरता रहा, एक दर्द भरी कहानी है। अपने कुछ शिष्यों को साथ लिए हुए वह एक राज्य से दूसरे राज्य की ठोकरें खाता रहा, पर कहीं भी उसे पनाह न मिली। इस तरह भटकने की दशा में कई ऐसे विरत संन्यासियों से उसकी भेंट हुई, जो मन में संसार के प्रति ग्लानि उत्पन्न हो जाने के कारण सब कुछ छोड़-छाड़कर दुनिया से दूर बसते थे। कनफ्यूशियस को इस प्रकार मारे-मारे फिरने के बावजूद शिक्षा द्वारा क्रूर मानव-जाति का सुधार करने की ओर प्रवृत्त देखकर ये लोग आश्चर्य करते थे।

यद्यपि उसका वह आदर्श राज्य कभी भी स्थापित न हो सका, किंतु उसकी दी हुई शिक्षा दृढ़ रूप से आनेवाली पीढ़ियों के मन पर अंकित हो गई। लगातार ढाई हजार वर्ष से लाखों-करोड़ों मनुष्यों के हृदय पर शासन करते रहना क्या किसी भी बड़े-से-बड़े साम्राज्य का अधिपति होने से कम गौरव की बात है? इतिहास में सिकंदर, चंगीज खाँ और नेपोलियन जैसे अनेक विश्वविजेताओं की गाथाएँ हमें मिलती हैं, पर वे अब इतिहास के पन्नों ही में रह गई हैं। इसके विपरीत विजेताओं का एक और वर्ग भी हमें मिलता है, जिन्होंने मनुष्य को कुचलकर भूमि या सम्पत्ति पर विजय पाने के बजाए अपना सर्वस्व त्यागकर मनुष्यों के हृदय पर विजय पाने ही में अधिक

संतोष माना। ऐसे लोग प्रायः अपने जीवनकाल में भिखारी ही रहे – उनमें से बहुतेरे पीड़ित भी किये गये – - किंतु आज न सिर्फ इतिहास ही में उनके नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित हैं, प्रत्युत उनका प्रकाश हजारों-लाखों घरों का अन्धकार दूर करता हुआ उनकी अमरता का परिचय दे रहा है। महात्मा कुंग भी इसी प्रकार के लोगों में से थे।

अच्छे शासन की सफलता उस स्वाभाविक सम्बन्ध को कायम रखने में है, जो मनुष्य-मनुष्य के बीच होनी चाहिए। शासक में राजोचित चरित्र, प्रजा में राजभक्ति, माता-पिता में वात्सल्य और बच्चों में श्रद्धा होनी चाहिए।

कनफ्यूशियस की शिक्षा का सार उसके द्वारा प्रतिपादित इस सुन्दर वाक्य में निहित है – 'दूसरों से तुम अपने प्रति जैसे बर्ताव की आशा करते हो, वैसा ही बर्ताव तुम स्वयं भी औरों के साथ करो।' वास्तव में बुद्ध, जरथुस्त्र आदि संसार के अन्य कई धर्मसंस्थापकों और कनफ्यूशियस में एक महान अन्तर है। उन लोगों ने प्राचीन सामाजिक या धार्मिक रूढ़ियों के ढाँचे को गिराकर उसपर एक नई इमारत खड़ी की थी। इसके विपरीत कनफ्यूशियस न तो विध्वंस, न बिल्कुल नवीन रचना का पक्षपाती था बल्कि वह समाज के ढाँचे का प्राचीन रूप स्थाई रखते हुए उसे और भी अधिक संगठित करने का हिमायती था। कनफ्यूशियस के बाद उसके मत को प्रतिपादित करनेवालों में मेन्शियस (372-289 ई.पू.) बड़े स्वातन्त्र विचारवाला तत्त्वचिन्तक हुआ। मानव-प्रकृति की जन्मजात अच्छाई में उसकी गहरी श्रद्धा थी। वह मानता था कि केवल बुराई के वातावरण के प्रभाव से मनुष्य के विचार और कर्म बुरे बन जाते हैं। अतः हमें अपनी जन्मजात सत्प्रवृत्तियों के विकास के लिये आत्मसंयम की ओर ध्यान देना चाहिए। ■

देनहार कोई और है

शिवाजी के मन में एक बार अहंकार हो गया कि उनके कारण हजारों लोगों का भरण-पोषण हो रहा है। समर्थ गुरु रामदास को इसकी जानकारी हो गई। वे अकस्मात वहाँ आ पहुँचे, जहाँ शिवाजी रास्ता बनवा रहे थे। उन्हें देखते ही शिवाजी ने दण्डवत प्रणाम किया। गुरु रामदास बोले, 'शिवा! मैंने सुना है कि यहाँ तुम्हारा बहुत बड़ा कार्य चल रहा है और इतने लोगों का पालन-पोषण तुम्हारे ही कारण हो रहा है।' अपने गुरुवर के श्रीमुख से यह सुनकर शिवाजी का अहंकार और बढ़ गया। रास्ते पर एक विशाल शिला को देखकर समर्थ गुरु रामदास ने कहा कि इस पत्थर के दो टुकड़े करवाओ। उस शिला के दो टुकड़े किए गए तो उसमें एक गहरा गड्ढा मिला, जिसमें जल भरा था और उसमें एक मेढ़क बैठा हुआ था। उसे देखकर समर्थ गुरुदेव ने कहा, 'वाह, शिवा, धन्य हो तुम! इस शिला के अंदर भी तुमने जल रखवाकर इस मेढ़क के भरण-पोषण की व्यवस्था कर रखी है।' यह सुनते ही शिवाजी के इस अभिमान तिमिर का नाश हो गया कि इतने लोगों के पेट मैं भरता हूँ। उन्होंने तुरंत समर्थ गुरु रामदास के चरण पकड़ लिए और अपने अहंकार के लिए क्षमा-याचना की।

जीवन में कुछ संस्कारों का विशेष प्रभाव होता है, यदि उन्हें सही परिप्रेक्ष्य में लिया जाए तो वे विकास के हेतु बनते हैं अन्यथा बाधक। कई बार ये संस्कार बड़े प्रबल होते हैं, वे विवेक को प्रायः दबोचते रहते हैं। अतः प्रथाओं या संस्कारों के पालन में विवेक का प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण होता है।

जैन दर्शन में छींक विचार

साध्वी डॉ. ललितरेखा खाटू

छींक शरीर की स्वाभाविक प्रक्रिया है। किन्तु छींक के संबंध में विश्व भर में अनेक मान्यताएं प्रचलित है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण से छींक आना अच्छी बात है। जब नाक या श्वसनयंत्र में कोई रूकावट पैदा होती तब उस अवरोध को समाप्त करने हेतु शरीर में छींक की क्रिया होती है। छींक किसी रोग की सूचना भी हो सकती है। किन्तु विश्व भर में लोग अलग-अलग मत इसके संबंध में रखते हैं।

ब्रिटिश न्यूगिनी में लोग छींक आने पर आत्मा की वापसी का संकेत मानते हैं। जूते पहनते वक्त छींक आ जाए तो जर्मनी इसे शुभ मानते है। अगर मोजे पहनते समय छींक आए तो रूसी लोग इसे शुभ मानते हैं। आस्ट्रेलिया के लोग भी इसे शुभ मानते हैं। यूनानियों का मानना है कि इसका आना अदृश्य दैवीय शक्तियों का उन पर प्रसन्न होने का सूचक है और अनुकूल समय का संकेत है, कार्य-सफलता का द्योतक है। अतः इसके आने पर यूनानी धार्मिक भजन गाते है और नेक काम करने की तैयारी में लग जाते हैं। आस्ट्रेलियाई ईश्वर का शुक्र अदा करते है, जब छींक देवी आती है। ईरानी मानते है कि जब शैतान नाक के रास्ते शरीर में प्रवेश करता है तो उसे बाहर निकालने के लिए छींक आती है। अतः वे इसके आने पर जल से नाक साफ करते हैं। अफ्रीकी भी इसे अशुभ मानते है किन्तु एस्तोनियाई व्यक्ति दो स्त्रियों के एक साथ छींकने को लड़की प्राप्ति का संकेत मानते हैं तो पुरुषों के एक साथ छींकने को पुत्र प्राप्ति का संकेत मानते हैं। बाहर प्रस्थान करते समय छींक आने पर भारतीय लोग इसे शुभ और अशुभ दोनों मानते हैं। पंजाबी लोग छींक को शुभ तथा प्रिय व्यक्ति को स्मृति का संकेत मानते है, जबकि राजस्थानी मानते हैं -

छींक पीठ की कुशल विचारे, बायीं छींक कारज सब काजे।
छींक दाहिनी द्रव्य विनाशे, सम्मुख छींक लड़ाई भासे।।
उँची छींक सदा जयकारी, नींची छींक सदा भयकारी।
छींकत खाइये, छींकत पीइये, छींकत पर मत जाइये।।
एक नाम दो छींक, काम बने सब ठीक।।

अर्थात पीछे एवं बायीं तरफ की छींक शुभ, दाहिनी एवं सम्मुख छींक अशुभ, उंची छींक शुभ, नीची अशुभ तथा एक छींक अशुभ तथा दो छींक शुभ, तीन महा शुभ मानी गई है।

इस प्रकार भारतीय दर्शन में छींक पर गहनता से विचार किया गया है। जैन दर्शन भी इससे अछूता नहीं है। भगवान महावीर के समय में भी छींक-विज्ञान था। उसका प्रमाण प्रस्तुत घटना-प्रसंग से हम जान सकते हैं

भगवान महावीर के समवसरण में एक बार राजा श्रेणिक को छींक आई। एक कुष्ठी तत्काल बोला - जीओ-जीओ। थोड़ी देर में अभयकुमार को छींक आई तब कुष्ठी ने कहा - चाहे जीओ या मरो। कुछ देर बाद कालसौकरिक कसाई को जब छींक आई तब उसने कहा - न मरो, न जीओ। जब भगवान महावीर को छींक आई, तब वह बोला - मरो, मरो, जल्दी मरो। ऐसा कहकर कुष्ठी अन्तर्ध्यान हो गया।

भगवान ने इसका रहस्य बताते हुए कहा - राजा श्रेणिक को जीओ-जीओ कहने का तात्पर्य था कि उनका जीना ही श्रेयस्कर है, मरेंगे तो नरक के दुःख भोगने पड़ेंगे। अभय कुमार का जीना और मरना दोनों श्रेष्ठ है। जीयेगा तो धर्म करेगा, मरेगा तो स्वर्ग का वरण करेगा। अतः मरो या जीओ दोनों शब्द कोढ़ी ने कहा। कालसौकरिक कसाई पापी था, उसका जीना भी खराब और मरकर नरक का मेहमान बनेगा। अतः वह भी बुरा। भगवान का मरना श्रेष्ठ इसलिए बताया कि वह जितने जल्दी मरेंगे उतनी जल्दी ही मुक्ति मिलेगी। पात्र भेद से भी छींक के शुभाशुभ फल इस घटना में किये गये है।

तेरापंथ धर्मशासन में तृतीय आचार्य ऋषिराय शकुन एवं मुहूर्त्त में विश्वास नहीं करते थे। किन्तु पंचम आचार्य मघवा की दीक्षा के समय ऋषिराय मेवाड़ में विहार करते हुए रावलिया में विराज रहे थे। युवाचार्य श्री द्वारा प्रदत्त दीक्षा के समाचार वहां पहुंचे तब अचानक ही ऋषिराय को एक के बाद एक तीन छींकें आई। उस दिन न जाने उनकों उन छींकों में कोई गुप्त सूचना प्रतीत हुई। उन्होंने प्रथम छींक पर तो कुछ नहीं कहा कि पर तत्काल ही जब दूसरी छींक आई तो बोले - लगता है यह साधु प्रभावशाली, होनहार साधु एवं अग्रणी बनने योग्य होगा। यह कहते ही उन्हें जब तीसरी छींक और आई तो उन्होंने फिर फरमाया - यह तो जीतमल का भार संभाल ले तो आश्चर्य नहीं।

ऋषिराय के वे वचन नवदीक्षित बालमुनि मघवा के विषय में एक सुनिश्चित भविष्यवाणी के रूप में सिद्ध हुए। दो महीने बाद ही ऋषिराय देवलोक हो गये। मुनि मघवा ने तो ऋषिराय के दर्शन ही नहीं किये। किन्तु ऋषिराय ने दूर से ही बालमुनि के भविष्य की सारी झांकी छींक के माध्यम जान ली थी तथा उसका निष्कर्ष भी सबके सामने प्रस्तुत कर दिया था।

इस प्रकार जैन-दर्शन में छींक को अशुभ, शुभ एवं अति शुभ माना गया है। विभिन्नता का कारण द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव सापेक्ष माना गया है। दो एवं तीन छींक को अति शुभ ही माना गया है। ■

परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिन्तनम्।
वितथाभिनिवेशश्च त्रिविधं कर्म मानसम्।।

दूसरे के द्रव्य को हड़पने की युक्ति सोचना, मन से अनिष्ट का चिन्तन करना और 'मैं शरीर हूँ' इस प्रकार का झूठा देहाभिमान करना – ये तीन मन के दोष हैं।

मान-अपमान में सम बने रहना भारतीय दर्शन का एक महत्वपूर्ण सिद्धांत रहा है। इसके द्वारा जीवन में सुख-दुख की आधारशिला निर्मित होती है। सम्मान पाकर सुखी होना और अपमानित होकर दुखी होना बहुत स्वाभाविक है किंतु भारतीय दर्शन सदैव इससे परे सोचने की प्रेरणा देता रहा है।

अपमान है आत्मशुद्धि का साधन

किसी व्यक्ति का अपमान कई कारणों से होता है, परंतु उनमें दो कारण प्रमुख हैं – एक, किसी दुराचार, अपराध और किसी का अहित करने पर समाज या व्यक्ति द्वारा किया जाने वाला अपमान और दूसरा किसी दुष्ट व्यक्ति द्वारा अकारण या प्रतिशोधवश अपमान।

पहले तरह के अपमान में दुराचारी या अपराधी को स्वयं अपने अंतर्मन में बोध होता है कि उसने गलत कार्य किया है और समाज या किसी व्यक्ति द्वारा किया गया उसका अपमान उचित है। संभव है वह बाहरी तौर पर अपने मन की भावना को प्रकट न करता हो और अपने अपमान के लिए दूसरे को दोषी ठहराता हो, परंतु उसका मन यह स्वीकार करता है कि उसने जो कुछ किया वह उचित नहीं था और उसका जो अपमान हुआ है, उससे उसे शिक्षा लेनी चाहिए, अपनी आदतों को सुधारना चाहिए। यह एक सामान्य व्यक्ति की सोच होती है। जो व्यक्ति दुरात्मा नहीं है वह अपने कुकृत्य हेतु दूसरों द्वारा किए गए अपमान के लिए स्वयं को दोषी मानते हुए भविष्य में किसी भी दुराचार, अपराध, कुकृत्य आदि से बचने की कोशिश करता है और अपना आत्मशोधन करता है। अतः उसका अपमान उसके लिए आत्मशुद्धि का साधन और सुधरने का महान अवसर बन जाता है।

दूसरे तरह के अपमान का बड़ा महत्व है। यह अपमान ईश्वरीय कृपा से ही मिलता है। जब किसी सच्चे, निरपराधी, भले आदमी का किसी दुष्ट विचार वाले व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह द्वारा अपमान किया जाता है तो वह उसे ईश्वरीय अनुग्रह के रूप में ग्रहण करता है। सामान्य स्थिति यह होती है कि व्यक्ति को क्रोध आए, अपमान करनेवाले के विरुद्ध अभियोग लगाए और उसका प्रतिशोध ले। किंतु संत स्वभाव के व्यक्ति के लिए अर्थात जो संयमी, समताशील, स्वभाव से सज्जन, परोपकारी, निःस्वार्थी और करुणा से आर्द्र होता है, उसके लिए अपमान अपनी समता की साधना को परखने के लिए कसौटी के समान होता है। उसका जब कोई अपमान करता है तो तत्काल उसका ध्यान ईश्वर की ओर चला जाता है। वह सोचता है कि यह अपमान प्रभु ने उसकी परीक्षा हेतु करवाया है कि देखें उनके भक्त में

कितनी सहनशीलता है। चूंकि सहनशील और मान-सम्मान में सम रहने वाला व्यक्ति हर प्राणी में परमात्मा का साक्षात्कार करता है अतः उसके लिए कोई अपना-पराया नहीं होता, हर कोई अपने शरीर के अंग के समान प्रतीत होता है। जैसे शरीर का प्रत्येक अंग अलग स्वभाव और गुणवाला होता है और उसके कार्य अलग-अलग होते हैं, वैसे ही दूसरे प्राणी होते हैं। शरीर के प्रत्येक अंग के साथ समान भाव रखना हर मनुष्य का स्वभाव होता है वैसे ही दूसरे व्यक्तियो, प्राणियों और स्थितियों के साथ समान दृष्टि रखना आवश्यक है। ऐसा व्यक्ति सोचता है कि अपमान के रूप में ईश्वर ने आत्मपरीक्षा का अवसर दिया है, जिसमें उसे हर स्थिति में उत्तीर्ण होना है।

सज्जन पुरुष दूसरों के अपकारों को नहीं, बल्कि हमेशा सत्पुरुषों के उपकारों को याद रखते हैं, वे किसी द्वारा किए गए वैरपूर्ण व्यवहार को तत्क्षण भूल जाते हैं; यज्ञ, दान, तपस्या, स्वाध्याय और सत्य-भाषण को अपने जीवन का अंग बनाते हैं और समर्थ होने पर भी उनमें क्षमा की भावना सर्वोपरि होती है। वे मत्सर भाव को जीतने वाले, परोपकार को सदा उद्यत, दूसरे की उन्नति से प्रसन्न, दूसरों की विपत्ति से व्याकुल और भेदभाव से मुक्त होते हैं।

अपमान सहने वाले व्यक्ति की तुलना धरती से दी जाती है, जो स्वयं अपमान सहती है और बदले में अपमानित करने वाले को ही सौरभयुक्त फूल, मधुर फल, ऊर्जादायी अन्न और मनोहर रत्न आदि देती है।

व्यावहारिक तथा पारमार्थिक दोनों मार्गों में प्रगति करने की इच्छा रखनेवाले व्यक्ति को जीवन में शान्ति, धैर्य, सहिष्णुता और तितिक्षा आदि गुण अपनाने पड़ते हैं। अनुकूल परिस्थिति में सबको अपने में इन गुणों के होने का भ्रम होता है, परंतु प्रतिकूलता के समय ये सद्गुण लुप्त हो जाते हैं। लेकिन जो परमात्म स्वरूप के साक्षात्कार से संतुष्ट है उसे मान-अपमान से कोई फर्क नहीं पड़ता।

किसी द्वारा तिरस्कार किए जाने पर जब दुख होता है तो उसका कारण देहाभिमान है। उदाहरण के लिए यदि कोई कूड़े-कचरे या गंदे स्थान में सो जाए और ऊपर से कोई और कूड़ा डाल दे तो उसमें दुःख नहीं मानना चाहिए। देहाभिमान गंदगी और कूड़े का ढेर है।

मान-हानि से, तिरस्कार से, निन्दा से, अपमान से जो दुःख होता है, वह देहाभिमानी को ही होता है।

हमारे जीवन के अधिकांश दुःख देहाभिमान के ऊपर ही आधारित हैं। यह देहभाव दूर होने पर ही दुःखों का नाश सम्भव है।

मान-अपमान और निन्दा-प्रशंसा को सम अनुभव करने और समता की भावना जाग्रत करने पर धीरे-धीरे देहभाव दूर हो जाता है। अष्टावक्र ने कहा है कि –

'न प्रीयते वन्द्यमानो निन्द्यानो न कुप्यति।'

सच्चा संत वन्दना करने से प्रसन्न नहीं होता और निन्दा से कुपित नहीं होता।

शब्द सहन करना आत्मनिष्ठा है। देहभाव रहने पर कोई शब्द बुरा लग सकता है, परंतु मैं देह नहीं हूँ, मैं अक्षर हूँ, ब्रह्म हूँ – ऐसा मानें तो शब्द बुरा नहीं लगता। क्योंकि शब्द आत्मा को स्पर्श नहीं कर सकता। अतएव निन्दा और अपमान से क्षुब्ध और व्याकुल होना साधना की अपरिपक्वता को दर्शाता है। आत्मनिष्ठा के अभ्यासी संत इस अवस्था से मुक्त होते हैं।

निन्दा, अपकीर्ति और अपमान से क्षुब्ध न होकर संत-महात्मा उन्हें पुरस्कार और ईश्वर का प्रसाद मानते हैं।

'अपमानात्तपोवृद्धिः सम्मानाच्च तपःक्षयः।'

'अपमान तपोवृद्धि और सम्मान तपःक्षय का कारण होता है।

निन्दा तथा अपमान करनेवाले तो हमारा कल्याण ही करते हैं —

'आक्रोशकसमो लोके सुहृदन्यो न विद्यते।
यस्तु दुष्कृतमादाय सुकृतं स्वं प्रयच्छति।।

'निन्दक के समान संसार में अन्य कोई सुहृद नहीं है, जो अपने पुण्य को देकर पाप ले लेता है।'

साधक इस बात पर बारंबार ध्यान दें और अपमान में ईश्वर के अनुग्रह का अनुभव करके आत्मनिष्ठ होने का अभ्यास करें, यही अभ्यर्थना है।उनके लिए तो स्थिति उलटी होती है।

एक बार भगवान बुद्ध को अपमानित एवं तिरस्कृत करने के लिए कौशाम्बी के राजा उदयन की रानी ने, जो बुद्ध की पूर्वकालीन वाग्दत्ता थी, एक स्त्री हत्या कराकर उसकी लाश उनकी पर्णकुटी के पास फेंकवा दी और यह प्रचारित कर दिया कि 'भगवान बुद्ध और उनके शिष्यों ने एक अबला पर व्यभिचार करके उसकी हत्या कर दी है।' इससे भगवान बुद्ध का अपमान हुआ, परंतु बुद्ध और उनके शिष्यों ने समाज के तिरस्कार और अपमान को सहज भाव से स्वीकार किया। संयोग से हत्यारों में पैसे के बंटवारे के समय कलह आरम्भ हो गया और सच्चाई प्रकट हो गई। उस समय भगवान बुद्ध ने कहा कि जहाँ अनादर और अपमान होता है, वहाँ रहना चाहिए तथा जहाँ मान-सम्मान हो, वहाँ से हट जाना चाहिए।

कहा गया है –

'सम्मानं कलयातिघोरगरलं नीचापमानं सुधाम्।'

'सम्मान को अत्यन्त घोर विष और नीच मनुष्य के द्वारा किए गए अपमान को अमृत के समान समझना चाहिए।'

साधक सहज ही होनेवाले अमृतत्व की प्राप्ति के लिए उदासीन नहीं रहते।

समता आत्मा का स्वाभाविक गुण है, साधना का मूल केन्द्र है। आध्यात्मिक जीवन का वृक्ष इसी के बल पर पल्लवित, पुष्पित एवं फलित होता है। इसके बिना न साधना जीवित नहीं रह सकती है और न संयम में ही तेजस्विता रहती है। इसलिए जैन संस्कृति के उन्नायकों ने इसे साधना में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। जिस साधक के जीवन में साम्यभाव का झरना नहीं बह रहा हो, वहाँ अध्यात्म का विकास होना असंभव है। समता के शीतल, सरस एवं मधुर जल से अभिसिंचित होकर ही साधना का वृक्ष हरा-भरा रह सकता है।

मनु कहते हैं –

सम्मानाद् ब्राह्मणो नित्यमुद्विजेत विषादिव।
अमृतस्येव चाकाङ्क्षेदवमानस्य सर्वदा।।

साधकों को विष के समान सम्मान से सदा अद्विग्न होना चाहिए और अमृत के समान अपमान की आकांक्षा करनी चाहिए।'

उन्हें तो अमृत के समान अपमान से तृप्त होना चाहिए और विष के समान सम्मान से जुगुप्सा प्रकट करनी चाहिए।'

अमृतस्येव तृप्येत अपमानस्य योगवित्।
विषवच्च जुगुप्सीत सम्मानस्य सदा द्विजः।।

अतः सामाजिक जीवन में भी उन्नति के आकांक्षी प्रत्येक व्यक्ति को इस शास्त्र-सूत्र को जीवन का मूल मंत्र बनाना चाहिए -

प्रतिष्ठा शूकरीविष्ठा गौरवं रौरवं समम्।
अभिमानं सुरापानं तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्।।

'प्रतिष्ठा को शूकरी के विष्ठा के समान, गौरव को रौरव नरक के समान और अभिमान को सुरापान के समान गिना जाता है। अतः इन तीनों का त्याग करना चाहिए।' ■

मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते।।

मन की प्रसन्नता, शान्त-भाव, मौन, आत्मनिग्रह और भाव की सम्यक शुद्धि – ये सब भाव मानसिक तप कहे गए हैं।

गीत

डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र

वैरागी भैरव

बहकावे में रह मत हारिल
एक बात तू गाँठ बाँध ले
केवल तू ईश्वर है बाकी सब नश्वर है

ये तेरी इन्द्रियाँ, दृश्य, सुख-दुख के परदे
उठते-गिरते सदा रहेंगे तेरे आगे
मुक्त साँड बनने से पहले
लाल लोह-मुद्रा से वृष जाएँगे दागे।

भटकावे में रह मत हारिल
पकड़े रह अपनी लकड़ी को
यही बताएगी अब तेरी
दिशा किधर है।

यह जो तू है, क्या वैसा ही है
जैसा तू बचपन में था?
कहाँ गया मदमाता यौवन
जो कस्तूरी की खुशबू था।

दुनिया चलती हुई ट्रेन है
जिसमें बैठा देख रहा तू
नगर-डगर, सागर, गिर-कानन
छूट रहे हैं एक-एक कर।

कोई फर्क नहीं तेरे इस ब्लैक बॉक्स में
भरा हुआ पत्थर है या हीरा-कंचन है।

जितना तू उपयोग कर रहा
मोहावृत्त जग में निर्मम हो
उतना ही बस तेरा धन है।

एक साँस, बस एक साँस ही
तू खरीद ले
वसुधा का सारा वैभव
बदले में देकर।

कुम्भ-गीत

मेघों की शाखों पर घोसला बनाना जब
मन के अरमानों का एक गीत गाना तब।

चिपकाना सूरज को लाल-लाल बिंदी-सा
छंद-मुक्त कोहरे में प्राची के भाल पर।

बहुत कठिन, दूर देश से आये विहगों को
विरमाना जाड़े भर अनचाहे ताल पर।

एक साथ पाँच जोड़ बाँसुरी बजाना जब
सुर के परिधानों का एक गीत गाना तब।

दुख की भट्टी में गल छंदों में ढल जाना
दिखता आसान, मगर होता आसान नहीं।

विस्मृति की सुरसा का मुँह भरते शब्दों में
गर्वीले कपि हैं सब कोई हनुमान नहीं।

घुटने भर पानी में कुम्भ खुद नहाना जब
पंडों-यजमानों का एक गीत गाना तब।

रेतीले संगम पर अणियां हैं, मढियां हैं
गाल बजाते तम्बू कोई संवाद नहीं।

संत के अखाड़ों में अगणित शिशुपाल घुसे
भटकाते भेड़ों को, कोई प्रतिवाद नहीं।

श्रद्धा के शिशुओं को ठंड से बचाना जब
वेद औ पुराणों का एक गीत गाना तब।

हे माँ! तुममें ही कामधेनु की सामर्थ्य है। तुम मंगलधाम हो, तपस्वियों का अद्वैत हो। तुममें सागर की गंभीरता है, पृथ्वी की उदारता है। तुम्हारे नेत्रों में शान्त चंद्रमा का तेज है और हृदय में मेघमालाओं का सघन वात्सल्य है। हे माँ! इन सभी गुणों का वास तुम में ही है।

माँ, हाथ पकड़ लो

हरिश्चंद्र अष्ठाना 'प्रेम'

मैं छोटा था। बहुत छोटा। तब मैं कुछ नहीं जानता था। सब माँ जानती थी। मैं कुछ न करता था। माँ ही सब करती थी। मैं गोद में पलता-खेलता और गोद में ही सो जाता। माँ ही मेरी दुनिया थी, मैं 'माँ' का लाड़ला था, उसकी जिगर का एक टुकड़ा। मैं उसी का था।

फिर समय चुपके-चुपके मुझसे घुलमिल गया। छाया-की तरह मेरे साथ हो लिया। अपनी सत्ता न रखते हुए भी मेरी सत्ता की पुष्टि करने लगा। अनजाने में मुझे छलने लगा। धीरे-धीरे मुझे वह माँ से अलग करने लगा। धीरे-धीरे। पता भी न चला – और मैं गोद से भूमि पर आ गया।

अपने-आप खिसकने लगा। चलने लगा, तो गिरने भी लगा। मैं गिरता-उठता-चलता। माँ देखती। मैं भी उसे देखता। वह मुस्कराती। मैं भी हँसता। मैं हाथ बढ़ाता, वह भी हाथ बढ़ाती, पर पकड़ती नहीं। थक जाता, कातर दृष्टि से माँ को पुकारता, हाथ फैलाता, तो वह हाथ बढ़ाकर गोद में भर लेती, वह भी प्रसन्न थी, मैं भी; मेरी माँ जो थी, मैं उसी का जो था।

खेल-ही-खेल में दूर भागता, माँ पकड़ने को बढ़ती, मैं और भागता, माँ फिर पकड़ लेती – पकड़े जाने के लिए ही तो भागता था। खेल ही तो था। क्या पता था कि इस खेल-ही-खेल में माँ से दूर हो जाऊँगा।

फिर खिलौनों से खेलने लगा। औरों का संग ढूँढ़ने लगा। माँ दूर होती गई। धीरे-धीरे संसार मुझमें में बहने लगा। ठंढ लगती, पर सहन करता। आदी हो चला, माँ की गोद की गरमी विस्मृति में खो गई। फिर भी समय-समय पर माँ को देख लेता, खोज लेता और फिर खेल में व्यस्त हो जाता। कुछ बहक चला, पर पूरा नहीं। माया का नशा चढ़ चला पर हल्का-हल्का।

बाहर एक मेला लगा था – माया का एक बाजार, एक नुमाइश, जहाँ हर चीज मिलती थी। सबका मूल्य था। मेले में आकर्षण था, सुन्दरता थी, रंग था, चंचलता थी। इन्द्रियों में एक

हलचल मच गई। एक तूफान उठ खड़ा हुआ। मेरे पैर उखड़ गए। माँ से भटका जानकर संसार ने धर दबाया। मैं लड़खड़ाकर उसमें गिर पड़ा। जितना उठता, उतना ही गिरता जाता। उतना ही और अंदर धँसता जाता। उसमें एक रस था, सुख था। लगा जैसे जीवन यही है। मैं उसी में लिप्त हो गया। यौवन की खुमारी में सारा संसार मस्ती से भरपूर दिखता था। मैं भी उसी में मस्त हो चला।

मैं इधर-उधर विचरने लगा। आँखें फाड़-फाड़कर चारों ओर देखता। इतना बड़ा मेला हमारे लिए किसने लगाया। वाह! फूल जैसे चलते-फिरते रूप, जो मुसकरा दे तो खुशबू बिखर जाए। सोने-चाँदी-हीरे-जवाहरात से जगमगाती दुनिया! कितनी सुन्दर! आँख उठ जाए तो पलक गिरने का नाम न ले। एक आकाश था, जिसमें चाँद, सूरज और सितारे जड़े हुए थे। मेला अपनी रोशनी में जगमगा रहा था। ऐसा क्या नहीं था, जो दिल को बहला न ले, मन को मोह न ले और बुद्धि को ठग न ले। जी चाहता था सब बटोर के धर लें, सब मेरा हो जाए। मेले में धक्के लगते, ठोकर खाता, गिरता, उठता फिर चलता – रोता भी था और हँसता भी। जब रोता तो माँ की याद आती पर जब मेले को देखता तो सब भूल जाता।

दिन ढलने लगा। धीरे-धीरे मेला निगाहों से उखड़ने लगा। जवानी फीकी पड़ी तो नशा भी उतरने लगा। बेहोशी में होश की करवटें लेने लगा। शाम के धुँधलेपन में माँ का प्रतिबिम्ब झांकने लगा।

दूर नदी किनारे एक फकीर गा रहा था -

दो दिन का जग में खेला, सब चलाचली का मेला।

कोई चला गया है कोई जावे कोई खड़ा है गठरी बाँधे,

कोई खड़ा तैयार अकेला, सब चलाचली का मेला।।

आवाज में दर्द था। दिल की रोशनी से जगमगाता हुआ वह एक अंधा फकीर था। मैंने कहा 'बाबा' –उसने आँखें उठायीं पर बोला नहीं। फिर गाया –

प्रेम लग्यो परमेश्वर सौं तब भूलि गयो सिगरो घर बारा।

ज्यों उन्मत्त फिरे जित ही तित नेक रही न सरीर संभारा।।

स्वास-उसास उठे सब रोग चलै दृग नीर अखंडित धारा।

सुन्दर कौन करे नवधा विधि छाकि पर्‌यो रस पी मतवारा।।

मैं चिल्लाया - माँ! और उधर ही दौड़ पड़ा। दौड़ते-दौड़ते थक गया। पैर लड़खड़ाने लगे। 'माँ! तुम किसी प्रकार मिल जाओ। मैं निराश्रय, बेसहारा हूँ, अकेला हूँ। संसार-सागर में डूबा जा रहा हूँ, मुझे बचा लो माँ! मेरा हाथ पकड़ लो।'

एक मंदिर से घंटे की आवाज आई। धीरे-धीरे वहाँ पहुँचा। पाषाण-मूर्ति माँ को देखा। वह मुस्करा दी। मैं रो पड़ा। आगे बढ़ा कि पकड़ लूँ, पर पुजारी ने ठोकर मार दी, 'मूर्ति अपवित्र करता है' वह स्तुति जो पढ़ रहा था।

या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।

मैं एक ओर बैठ गया। आँसू बहाता रहा। 'माँ! तुम पतितपावनी हो, फिर तुम्हें कोई कैसे अपवित्र कर सकता है? तुम सबके पाप धोती हो, फिर तुम्हें कौन मैला करे। माँ! इन्हें ज्ञान दो। ये तुम्हारी कीर्ति में बट्टा लगाते हैं।' पुजारी की आवाज सुनाई पड़ी – 'प्रसाद ले'। भूखा था, हाथ फैला दिया। फिर बैठा रहा। किसी ने कहा 'अब जा मन्दिर बंद हो गया।' मैंने कहा - 'माँ! तुम जगज्जननी हो और ये तुम्हें कोठरी में बंद करते हैं। माँ! तुम्हारी लीला विलक्षण है।' मैं रो पड़ा। किसी ने कहा 'पागल है।' द्वार बंद हो गए, माँ अंदर रह गयी। मैं बाहर हो गया।

मुट्ठी बाँधे निकल पड़ा। भूख लगी थी, कहा - 'माँ! भूख लगी है।' किसी भारी हाथ ने मेरा कंधा पकड़ा और कहा 'चलो खा लो'। बड़े-बड़े अक्षरों में बाहर लिखा था

'स्वामी अमुकानन्द'। 'यहाँ खाना सबको बँटता है, जाओ खा लो।' मूढ़वत मैंने उसकी ओर देखा – एकटक उन अक्षरों को देखा, 'स्वामी अमुकानन्द?' एक साँस ली! 'माँ का नहीं है' और आगे बढ़ चला। ऐसे ही कई मिले – कोई किसी स्वामी का कोई किसी का। माँ अन्नपूर्णा का हो तो खाऊँ। अंदर बढ़ने से पहले ही पैर ठिठक जाते - हृदय चीख उठता 'ये नास्तिक हैं – माँ की चीज को अपनी बताते हैं। 'माँ अन्नपूर्णे! तुम छोटे-से-छोटे और बड़े-से-बड़े का पालन-पोषण करती हो, पर कहीं तुम्हारा नाम नहीं मिला और यहाँ छटाँक भर अन्न - - तुम्हारा दिया ये वितरण करते हैं और हर दाने पर अपनी मुहर लगा देते हैं।

थका-माँदा – कहाँ विश्राम लूँ? आश्रम में! किसके? आश्रम तो कई मिले। दो फूँस की झोपड़ी रखकर कोई कहता यह आश्रम है स्वामी अमुकानन्द का। दो ईंटों का ढेर जमाकर कोई अक्षरों में चिल्लाता यह आश्रम है स्वामी अमुकानन्द का। बस, ऐसे ही आश्रम पर आश्रम थे, जिनमें चल-अचल मूर्तियाँ भरी पड़ी थीं। वैराग्य का बुर्का था। संसार अंदर से झाँकता था। माँ के नाम का आश्रम कोई नहीं। सोचा, इतना बड़ा विशाल भवन – दिशाएँ भी जिसे घेर न सकीं – माँ ने बनाया, पर कहीं अपना नाम न दिया। आज तक लोग यही ढूँढ़ते हैं किसने बनाया। पर माँ से बिछुड़े हुए उसके बेटे उसकी सम्पत्ति पर अपनी छाप लगाए बैठे हैं। शायद अपना नाम उज्ज्वल करते हैं। संसारी अपना संसार खोलकर रखता है और ये विरक्त अपना संसार ढाँपकर रखते हैं। पर हैं सब माँ ही के बच्चे, कुछ भूले हुए – कुछ राह की ओर, कुछ राह पर।

एक घने वृक्ष के नीचे, जहाँ किसी नाम की छाप न थी जहाँ छाया सब पर समान पड़ती थी – मैं भी बैठ गया। ऊपर पक्षी थे, डालें फलों से झुकी थीं। रोशनी छन-छनकर गिरती थी। आँख लग गयी – टप से कुछ गिरा। आँखें खुलीं। फल था। खाया। जिससे भूख भी मिटी और प्यास भी। फिर तेजी से रात के झिलमिलाते तारों की रोशनी में दौड़ने लगा। राह न देखी थी, न पहचानी। मेले में था पर मेले से अलग। माँ के पास था, बहुत दूर था। पैर उठते थे, गिरते थे और फिर उठते थे। आवाज देता 'माँ' और 'हाँ' की आवाज वापस लौटती। मैं उसी ओर भागता। दम फूल गया – पैर लड़खड़ाने लगे। किसी ने धीरे से कंधे पर हाथ रखा। कहा, 'सुनो! तुम माँ को ढूंढ रहे हो, चलो हम मिला दें।' न जाने किन आँखों से मैंने उसे देखा और उसके साथ हो लिया।

एक भवन में लाल वस्त्र पर सुनहरे अक्षरों में लिखा था - महंत श्री 1008 ....। मूढ़वत उसे देखा। एक सुसज्जित कमरे में एक महात्मा बैठे थे। झलकता हुआ वस्त्र था। शान्त मुद्रा, गंभीर। मुझसे कहा 'बैठो'। मैं बैठ गया। महात्मा बोले - 'बेटे! माँ को कहाँ ढूंढते हो? वह तो सर्वव्यापी हैं। उसे अपने हृदय में देखो। कुछ ध्यान करो, कुछ साधना करो – हम तुम्हें माँ दिखलाएँगे - सबमें सब जगह ... 'तपती हुई रेती में पानी की बूँद जैसे 'छन्न' करके रह जाए, वैसे ही माँ के वियोग की भूमि पर ये ज्ञान की बूँदें पड़ी – बेचैन हो उठा कहा 'महाराज! मैं माँ का था, माँ मेरी थी – मेले में भूल गया। मैं उसे जानता हूँ। वह मेरे साथ थी। मैं ढूँढ़ लूँगा – मेरी माँ किसी साधना से नहीं मिलती। बस, प्यार से मिलती है। मेरा प्यार संसार के जाल में फँस गया था।' और उठ खड़ा हुआ। आसन से महात्मा उतर पड़े – मेरी आँखों में अपनी आँखें डालीं। जैसे ज्ञान उँड़ेल दिया, जो मेरी डबडबायी आँखों के आँसुओं में बह गया। कुछ भीगी आवाज में बोले 'बेटे ठहरो'! तेरी आवाज में किसी की आवाज मैं भी सुन रहा हूँ – तू मेले में खो गया। मैं धोखे में खो गया। संसार से भागा, पर कहाँ? संसार सिमटकर मेरे पास चारों ओर फैल गया। यह आश्रम, ये चेले, यह मान-प्रतिष्ठा – यह वैभव सब क्या है – क्यों? बन्धन हैं। माया का आवरण। ये मुझे अकेला नहीं रहने देते।' वे द्रुतगति से मुझे घसीटते हुए आश्रम से दूर हो गए। अब

जब मेले में था, तो अकेले थे – जब अकेले थे तो मेला साथ था। मेरा हाथ छूट गया और हवा की तरह मेले में घुसे और कहीं खो गए। मेरी आँख से ओझल हो गए। लगा, कहीं बाढ़ आई है, बाँध टूट गया। ज्ञान भीग गया और वे उस बाढ़ में बह गए।

मैं अपनी राह पर चल पड़ा। ज्यों-ज्यों व्याकुलता बढ़ती, लगता हर हवा का झोंका कहता 'अब तू पास आ गया है' बस, आशा की डोर पकड़े बढ़ता ही गया।

दूर एक भीड़ जमा थी। मैं उधर ही खिंच गया। संत समागम था। मैं भी पीछे बैठ गया। मुझे लगा कि किसी ने मुझसे कहा 'तू माँ को ढूँढता है? देख वह है तेरी माँ।' मैंने देखा, माँ खड़ी मुस्करा रही थी। मैं होश खो बैठा - कोई बाँध टूट गया। आवाज बहक गई, दौड़कर घुटनों से लिपट गया। माँ ने सिर पर हाथ रखा। हँस दी। कहा 'साथ ही तो हूँ।' मैं रोया, माँ! बहुत भटककर थक गया हूँ। मुझे भीड़ में – मेले में मत जाने दो – मैं कहीं फिर न खो जाऊँ। मेरा हाथ पकड़ लो।' मेरा हाथ ऊपर हो गया। किसी के हाथ ने मेरा हाथ थाम लिया – मैंने सिर उठाकर देखा तो लगा, जैसे माँ थी।

अब भी कभी-कभी जाग्रत में, स्वप्न में चिल्ला पड़ता हूँ, 'माँ! हाथ पकड़ लो' और हाथ अपने-आप ऊपर उठ जाते हैं। किसी का स्पर्श लगता है, पर अदृश्य! ■

मनु की माँ

वनफूल

'मरो मुँहजला! कान के पास खाली काँय, काँय, काँय। जला रहा है मुझे! भाग यहाँ से।... हुस।'

खिड़की के पास जो अमड़े का पेड़ था, उसी की डाल पर बैठकर वह कौआ बोल रहा था। मनु की माँ की ताड़ना से वह उड़कर निकट के मकान की छत पर जा बैठा।

उस मकान की छत पर बैठते ही मनु की माँ को यह दिखाई पड़ा कि कौआ अपंग है। किसी ने उसका एक पैर काट दिया है। ठीक से चल नहीं पाता है बेचारा! ओह!

उन्हें स्मरण हो आया कि उनके पुत्र मनु का पैर भी रेल की पटरी में कट गया था। वह बच नहीं पाया। लेकिन अभी भी सभी लोग उन्हें मनु की माँ कहकर पुकारते हैं। मनु सदा के लिए चला गया।

कटे पैरवाले अपंग कौए को देखकर उन्हें बहुत दिनों के बाद मनु की याद आई। सहसा एक लमहे में वे बहुत दूर चली गईं। मानो वे अस्पताल में मनु के बिछौने के पास बैठी हैं। कटे पैर का बैंडेज खून से तर-बतर है। .....

हठात उन्हें ख्याल आया कि रसोई में एक नाड़ु रखा है। नारियल का नाड़ु। मनु बहुत पसंद करता था।

फिर मनु की माँ नाड़ु ले आई और उसे कौए को दिखाकर कहने लगी - 'आ जा - आ जा - खा ले।'

लेकिन कौआ आया नहीं। उड़ गया।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा तेरापंथ धर्मसंघ एवं समाज की सेवा और मानवता के कल्याण हेतु विभिन्न सेवामूलक एवं संगठनात्मक गतिविधियों का संचालन करती है। इसके अंतर्गत देश के विभिन्न अंचलों में स्थित तेरापंथी संभाओं के साथ नियमित संवाद के अतिरिक्त, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृति उन्नयन हेतु भिन्न-भिन्न प्रवृत्तियों का संचालन, संगठन यात्राएँ, आध्यात्मिक विकास हेतु क्रियाकलाप, संस्कार निर्माण हेतु ज्ञानशालाओं के संचालन में सहयोग तथा अन्य प्रकल्पों का परिचालन शामिल है। प्रस्तुत है मई, 2015 के महीने के दौरान महासभा द्वारा किए गए कार्यों की संक्षिप्त रिपोर्ट।

महासभा संवाद

संगठन यात्रा

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़, महामंत्री श्री विनोद बैद एवं न्यासी श्री तुलसी कुमार दुगड़ ने दिनांक 23 अप्रैल, 2015 को लंदन की संगठन यात्रा की और यूरोप में, विशेषकर लंदन में तेरापंथ धर्मसंघ के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं चरित्र निर्माण संबंधी गतिविधियों के संचालन हेतु एक भवन की अपेक्षा को समझने के लिए स्थानीय तेरापंथी श्रावकों और वहां प्रवासित जैन समाज से विचार-विमर्श किया। यद्यपि लंदन में तेरापंथ धर्मसंघ की धार्मिक गतिविधियों का संचालन जैन भारती, लंदन द्वारा समग्र जैन समाज की सहभागिता से काफी समय से हो रहा है और पूज्य आचार्य श्री तुलसी की दूरदर्शी परिकल्पना के अनुरूप तेरापंथ धर्मसंघ की समणियाँ वहां प्रवासित समाज के आध्यात्मिक उन्नयन और चारित्रिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान कर रही हैं, परंतु इसके लिए एक

लंदन में आध्यात्मिक गतिविधियों के संचालन हेतु प्रस्तावित भवन

व्यवस्थित स्थान की आवश्यकता बहुत दिनों से महसूस की जा रही थी। इस प्रयोजन की पूर्ति हेतु काफी समय से एक निजी भवन की खोज की जा रही थी ताकि धर्माराधना आदि में कोई व्यवधान न हो, साथ ही लंदन की यात्रा पर भारत से गए श्रावक समाज को धार्मिक कार्यों और अध्यात्मिक साधना के लिए उपयुक्त स्थान मिल सके। इस दृष्टि से महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ के नेतृत्व में महासभा के पदाधिकारियों द्वारा लंदन में भवन के संबंध में की गई पहल बहुत ही फलप्रद सिद्ध हुई। प्रतिनिधि मंडल ने लंदन के श्रावक समाज के साथ कई स्थानों का निरीक्षण किया और स्थानीय श्रावक समाज के प्रतिनिधियों से उसमें से एक की उपयोगिता के संबंध में विचार-विमर्श कर धर्मसंघ के प्रयोजन की दृष्टि से भवन को सर्वथा उपयुक्त पाया गया।

भवन के स्वामित्व के विषय में आवश्यक वैधानिक प्रक्रियाओं के संबंध में भी बातचीत की गई और यह तय किया गया कि उसे सभी तरह से उपयुक्त पाए जाने पर उसके संबंध में अगली कार्रवाई की जाएगी। ध्यातव्य है कि इस समाज के भवन क्रय की इस परियोजना में जैन विश्व भारती, लंदन के अंतर्गत स्थानीय श्रावक समाज और महासभा द्वारा संयुक्त रूप से आर्थिक योगदान किया जाएगा। अगर यह परियोजना परिसंपन्नता की ओर अग्रसर होती है तो महासभा के द्वारा प्रस्तावित सुझावों को शामिल करने हेतु जैन विश्व भारती, लंदन को अपने संघ स्मरण लेख में परिवर्तन करना अपेक्षित होगा।

लंदन में अक्षय तृतीया का आयोजन

संगठन यात्रा के क्रम में लंदन स्थित किंग्सबरी हाई स्कूल में समणी प्रतिभाप्रज्ञा एवं समणी प्रणवप्रज्ञाजी के सान्निध्य एवं महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ की अध्यक्षता में अक्षय तृतीया का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर महासभा के महामंत्री श्री विनोद बैद एवं न्यासी श्री तुलसी कुमार दुगड़ भी उपस्थित थे। नवकार मंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। समणी प्रतिभाप्रज्ञा जी ने भगवान ऋषभ से जुड़े पावन पर्व अक्षय तृतीया के महत्व को रेखांकित किया। समणी प्रणवप्रज्ञा ने गीत का संगान किया।

श्री कमल कुमार दुगड़ ने अपने उद्बोधन में स्वदेश से दूर रहते हुए भी अपनी संस्कृति और धर्म के प्रति निष्ठा रखने वाले लंदन प्रवासी श्रावक समाज की अभिशंसा की और कहा कि आप सभी तेरापंथ के ऐसे दूत हैं, जिनके माध्यम से चरित्रनिष्ठ सामाजिक व्यवस्था का सूत्रपात किया जा सकता है। उन्होंने अक्षय तृतीया के संदर्भ में कहा कि अक्षय तृतीया का पर्व वस्तुतः त्याग, तप और पूर्वजन्म के शुभ संस्कारों के जागरण का दिन है। भगवान ऋषभ ने इसी दिन एक धर्मयुग की शुरुआत की और अपने युग को आध्यात्मिक पथदर्शन दिया, जो उस समय के लिए बहुत ही अनिवार्य था। भगवान ऋषभ द्वारा लंबी तपस्या के बाद अक्षय तृतीया को किया गया पारणा आत्म-अभ्युदय का दिन हो गया।

अध्यक्ष महोदय ने इस मंगलमय अवसर पर तेरापंथ धर्मसंघ के महाप्रतापी आचार्यों द्वारा मानवता के हित में किए गए अतुलनीय कार्यों तथा तेरापंथ धर्मसंघ के अवदानों का उल्लेख करते हुए कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ राष्ट्र निर्माण एवं सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास में सहायता करने वाला मानव मूल्यों का संवाहक धर्मसंघ है। यह अपने परम पुनीत आचार्यप्रवरों द्वारा प्रदर्शित पथ पर

चलकर समाज में अहिंसा, करुणा, मैत्री, त्याग, अणुव्रत, पंचाचार जैसे श्रेष्ठ आचरणों एवं सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार करता है और इसके माध्यम से व्यक्ति, समाज एवं विश्व को सुंदर बनाने के लिए अनवरत प्रयास कर रहा है।

श्री दुगड़ ने लंदन के प्रवासी श्रावक समाज को पूज्यप्रवरों से प्राप्त दिशानिर्देश के अनुरूप महासभा द्वारा तेरापंथ समाज के उन्नयन हेतु संचालित विभिन्न धार्मिक-आध्यात्मिक गतिविधियों और सामाजिक क्रियाकलापों की विस्तृत जानकारी दी और उनसे जुड़ने के लिए सभी का आह्वान किया। उन्होंने लंदन में तेरापंथ समाज द्वारा अपनी आध्यात्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों को व्यवस्थित ढंग से संचालित करने के लिए एक निजी भवन की आवश्यकता पर बल दिया।

अध्यक्ष महोदय ने तेरापंथ संघ एवं समाज के विकास में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा की विगत 102 वर्षों की महान उपलब्धियों को उद्घाटित किया और संपूर्ण श्रावक समाज से आग्रह किया कि वे जैन धर्म की महान संपदा से विश्व मानवता को परिचित कराने में महनीय भूमिका निभाएँ और तेरापंथ धर्मसंघ द्वारा संचालित मानव हितकारी सभी धार्मिक-सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता करके इस महान धर्मसंघ को गौरव के शिखर पर पहुँचाने में योगभूत बनें। कार्यक्रम की आयोजना में श्री माणक चोरड़िया, श्री निर्मल बांठिया, श्री सुनील दुगड़, श्री जीत धानेरिया आदि की सहभागिता रही। इस अवसर पर लंदन (हैरो) की श्रीमती वीणा मीथानी, पूर्व काउंसिलर श्री राजीव साहा विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम में लगभग 300 लोगों ने सहभागिता की।

इस अवसर पर श्री हसु भाई बोरा एवं श्री जीत ने भी

अपने विचार व्यक्त किए। समाज के बच्चों द्वारा की गई रोचक प्रस्तुति ने सभी का मन मोह लिया।

कार्यक्रम का संचालन श्री राजेश जैन ने किया। समणीद्वय के मंगल पाठ के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

नेपाल में आई भयंकर आपदा के संदर्भ में महासभा की भूमिका

दिनांक 25 अप्रैल 2015 को नेपाल में अकस्मात एक अकल्पित महाविनाशक भीषण घटना घटी और काठमांडू से 50 किमी. दूर स्थित लामज्यूंग (नेपाल) केन्द्र से प्रारंभ हुए और रियेक्टर स्केल के पैमाने पर मापे गए 7.9 वाले गोरखा भूकंप नाम से अभिहित भीषण भूकंप से नेपाल सहित भारत के विभिन्न भागों की धरती दोलायमान हो उठी। लगभग नब्बे सेकेंड तक चले इस भूकंप से महाविनाश का दृश्य उपस्थित हो गया। तीव्र वेग से डोलती धरती ने सर्वत्र महाप्रलय का आभास देना शुरू किया। चारों ओर हाहाकार, चीत्कार और अफरातफरी मच गई।

पहाड़ी भू-भाग में बड़े-बड़े पहाड़ दरक गए। हजारों फुट ऊपर से दरकती/टूटती चट्टानें/शिलाएं नीचे घाटियों में स्थित मकानों को नेस्तनाबूत कर गई। काठमांडू सहित पूरे नेपाल में हजारों लोग मारे गए। हताहतों की संख्या अनगिनत थी। प्रकृति के इस रौद्र ताण्डव ने किसी की सांसें छीनी तो किसी का सर्वस्व। वर्षों के श्रम से अर्जित किसी का धन छिना तो किसी के द्वारा वर्षों तक पालित-पोषित उनकी संतानें। कहीं-कहीं तो पूरे के पूरे गांव नष्ट हो गए। भू-स्खलन से स्थान-स्थान पर गहरे गड्ढे को गए। मार्ग अवरुद्ध हो गए और जनजीवन ठप हो गया।

तेरापंथ धर्मसंघ के परम पुनीत आचार्य श्री महाश्रमण इस आपात वेला में नेपाल की राजधानी काठमांडू स्थित बालमंदिर में प्रवास कर रहे थे। उस दिन उनके प्रवास का पांचवां दिन था। पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल बाल मंदिर की इमारत का दक्षिणी हिस्सा देखते ही देखते तेज आवाज के साथ धराशायी हो गया।

पूरे नेपाल में आए इस भयंकर भूकंप और उससे हुई तबाही की खबरें क्षणमात्र में पूरे विश्व में फैल गईं।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ संगठन यात्रा के क्रम में उस समय लंदन में थे। सूचना मिलते ही उन्होंने वहीं से तत्काल कार्रवाई प्रारंभ कर दी। उन्होंने परमपूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी एवं तत्र विराजित चारित्रात्माओं के सुखसाता एवं कुशलमंगल की जानकारी प्राप्त की और कोलकाता स्थित महासभा के प्रधान कार्यालय को शीघ्र ही उस आपात स्थिति से निपटने के लिए राहत कार्य प्रारंभ करने का निर्देश दिया। देखते ही देखते महासभा के पदाधिकारी सक्रिय हो उठे।

अध्यक्ष महोदय के निर्देशानुसार महासभा कार्यालय चौबीसों घंटे खुला रखा और इस विनाशकारी प्राकृतिक आपदा से प्रभावित संघ एवं समाज के नेपाल प्रवासित लोगों के साथ-साथ नेपाल के पीड़ितों को राहत पहुँचाने के लिए **एक आपदा राहत हेल्प डेस्क** की स्थापना की। इसके माध्यम से नेपाल भूकम्प की निरन्तर अधिकृत एवं तथ्यपूर्ण जानकारी पता करके उसे देशभर में संप्रेषित किया गया और देश के विभिन्न भागों में प्रवासित चारित्रात्माओं को गुरुदेव के कुशलक्षेम के संवादों की सूचनाओं का प्रेषण एवं उनके योगक्षेम के बारे में पूज्यश्री को निवेदन किया गया। पूज्य आचार्यश्री

एवं अन्य चारित्रात्माओं की रास्ते की सेवा एवं अन्य सेवा व्यवस्था में भारत से गए हुए श्रावक समाज के साथ-साथ वहां रहनेवाले तेरापंथी परिवारों की जानकारी ली गई एवं नेपाल यात्रा पर गए गुमशुदा व्यक्तियों की तलाश करवाकर उनके परिवारजनों से सम्पर्क करने हेतु उन्हें सूचना दी गई और साथ ही भारत में निवासित परिजनों को उनके रिश्तेदारों के योगक्षेम की सूचना प्रदान की जाने लगी।

भूकंप से हुए महाविनाश एवं क्षति को देखते हुए तेरापंथ समाज की ओर से एक आपदा राहत कोष की स्थापना की गई। समाचार पत्रों/टीवी/एवं सोशल मीडिया के माध्यम से संकट की घड़ी में राहत और बचाव कार्य में तन, मन और धन से योगभूत बनने तथा मानव कल्याण हेतु अपने दायित्व को समझते हुए काठमांडू एवं नेपाल के भाई-बहनों को हर तरह से सहयोग की अपील की गई। इसके साथ ही गंभीरतम स्थिति का संज्ञान लेकर राहत सामग्री का नेपाल में प्रेषण प्रारंभ किया गया।

तेरापंथ समाज की केंद्रीय संस्थाओं द्वारा व्यापक स्तर पर राहत कार्य में सहभागिता की गई। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सलिल लोढ़ा के नेतृत्व में उसके अनेक पदाधिकारी राहत कार्य में सहभागी बने और एटीएम मोबाइल हास्पिटल के माध्यम से चिकित्सा शिविरों का आयोजन किया गया।

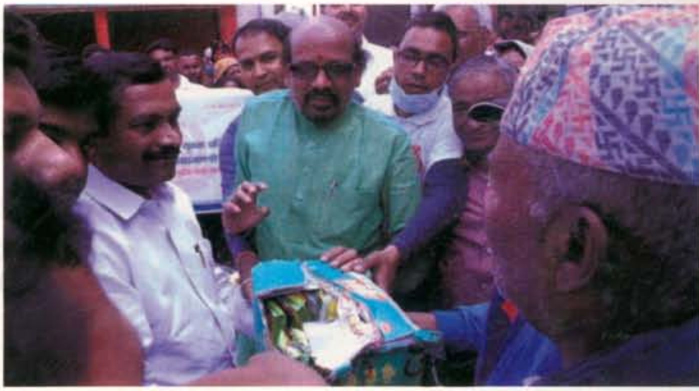

फोरम के अनेक डॉक्टरों की देखरेख में चल चिकित्सालय के द्वारा घायलों का उपचार किया गया। सैकड़ों लोग इससे लाभान्वित हो रहे हैं।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री अविनाश नाहर के नेतृत्व में तेयुप के कार्यकर्ताओं ने भूकंप पीड़ितों को राहत पहुँचाने का सराहनीय कार्य किया और अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरड़िया के नेतृत्व में महिला मंडल की सदस्यों ने भूकंप पीड़ितों के बीच खाद्य सामग्री एवं अन्य अत्यावश्यक राहत सामग्री संवितरित की।

अहिंसा यात्रा में साथ चल रहे तेरापंथी महासभा द्वारा शुद्ध पेयजल आपूर्ति हेतु संचालित मोबाइल आरओ प्लान्ट का उपयोग नेपाल पुलिस द्वारा किया जा रहा है। पुलिस इसके माध्यम से स्वच्छ और मीठा जल लोगों तक पहुंचा रही है। इसके अतिरिक्त महासभा के एक अन्य वाहन द्वारा भी श्री हुकमचन्द दूगड़ परिवार के सहयोग से पेयजल भूकंप पीड़ितों तक पहुंचाया जा रहा है।

परम पूज्य आचार्यप्रवर की अनुकम्पा से नेपाल में भूकंप पीड़ित मानवता को सहायता पहुंचाने की दृष्टि से महासभा द्वारा कंबल, टेन्ट, तिरपाल, मोटी प्लास्टिक शीट, साबुन, बैन्ड-एड (पट्टी), सेनेटरी नैपकिन, सूखे खाद्य पदार्थ एवं दवाइयां आदि सामग्री प्रेषित की गई।

इसके अलावा राहतकोष हेतु अर्थसंग्रह भी किया गया और आगे भी किया जा रहा है जिसे इस कार्य हेतु नियोजित किया जाएगा। देशव्यापी सभाओं से निवेदन किया गया कि वे अपने क्षेत्र के श्रावक समाज की एक बैठक बुलाकर प्राकृतिक आपदा में पीड़ित परिवारों को

राहत पहुंचाने हेतु सहयोग का हाथ बढ़ाएं एवं उक्त राहत कोष में सहयोग राशि जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के नाम से महासभा के कोलकाता कार्यालय के पते पर प्रेषित करें और सहयोग राशि कोलकाता स्थित आई सी आई सी आई बैंक की ब्रेबोर्न रोड शाखा के खाते में जमा कराएँ।

महासभा अपने पूरे श्रावक समाज को निरन्तर नेपाल की ताजा स्थिति से अवगत कराती रही।

महासभा के पदाधिकारियों की नेपाल यात्रा

नेपाल में राहत सामग्री प्रेषण के पश्चात वास्तविक स्थिति का जायजा लेने हेतु महासभा के अध्यक्ष श्री कमल कुमार दुगड़ के नेतृत्व में महासभा के महामंत्री श्री विनोद बैद और कोषाध्यक्ष श्री सुरेंद्र बोरड़ ने नेपाल की यात्रा की और वहां पुनर्निर्माण एवं नवनिर्माण के विभिन्न विकल्पों पर चिन्तन हेतु बैठकें आयोजित कीं।

सर्वप्रथम काठमाण्डू प्रवास व्यवस्था समिति, काठमाण्डू सभा, तेयुप, महिला मंडल एवं श्रावक समाज तथा महासभा के अधिकारियों के साथ संयुक्त बैठक आयोजित की गई और राहत सामग्री के सम्यक वितरण वितरण पर विचार-विमर्श किया गया। तत्पश्चात काठमाण्डू के विभिन्न क्षतिग्रस्त स्थानों का अवलोकन किया गया एवं उनके पुनर्निर्माण हेतु योजना बनाकर उनपर कार्य करने का निर्णय लिया गया। यह भी चिंतन किया गया कि सर्वाधिक पीड़ित क्षेत्रों के कुछ ग्रामों को गोद लेकर भूकम्परोधी घरों का निर्माण करवाकर उन्हें स्थानीय व्यक्तियों को दिया जाए।

इसके अतिरिक्त स्कूलों एवं चिकित्सा केन्द्रों का पुनर्निर्माण एवं उन्हें उपकरणों एवं दवाओं की आपूर्ति व्यवस्थित रूप से करने के विकल्पों पर विचार किया गया।

गुरुदेव के प्रस्तावित विहार के रास्ते का पुनर्निरीक्षण किया गया एवं यथासंभव अपेक्षित सभी व्यवस्थाओं को पूर्ण करवाने पर विचार किया गया।

विहार में रास्ते की सेवा, कार्यकर्ताओं की व्यवस्था, सुरक्षा व्यवस्था आदि की समीक्षा एवं अपेक्षित व्यवस्था उपलब्ध करवाने पर परामर्श किया गया।

इसके साथ ही राहत कार्यों की व्यवस्थाओं के सम्यक नियोजन हेतु महासभा ने एक व्यवस्था समिति गठित की है जो करणीय कार्यों की योजना प्रस्तुत करेगी एवं तदनुरूप इसे कार्य रूप में परिणत करेगी साथ ही राहत कोष हेतु प्राप्त सामग्री के व्यवस्थित वितरण का भी दायित्व निर्वहन करेगी।

महासभा गुरुकृपा से सम्पूर्ण तेरापंथ समाज के सहयोग से नेपाल की पीड़ित मानवता के हित में कार्य करने तथा समर्पित सहभागिता से उनके टूटे हुए सपनों को फिर से नवनिर्मित करने के प्रति कृतसंकल्प है। श्रावक समाज से तन मन धन से सर्वात्मना सहयोग की कामना है। ■

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अनुशास्ता परम पावन आचार्य श्री महाश्रमण पूरे देश एवं विदेशों में सद्‌भावना के संप्रसार, नैतिकता की प्रतिष्ठा एवं नशामुक्ति हेतु पदयात्रा कर रहे हैं और इस आध्यात्मिक अहिंसा यात्रा के द्वारा जन-जन में अहिंसा की अलख जगा रहे हैं। पूज्यश्री की अहिंसा यात्रा बहुआयामी एवं बहूद्देश्यीय है, जिसका लाभ सामान्य जन से लेकर समाज के शीर्षस्थ लोगों तक को सहज मिल रहा है। प्रस्तुत है अप्रैल, 2015 के महीने में की गई अहिंसा यात्रा की उपलब्धियाँ एवं आचार्यश्री के अमृत संदेश का सार, जो पाठकों के समक्ष चिंतन का एक अभिनव आयाम उद्‌घाटित करेगा।

अहिंसा यात्रा अमृत संदेश

1 अप्रैल 2015 को वीरगंज प्रवास का दूसरा दिन था। आचार्यवर ने कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में आत्मा के स्वरूप की विवेचना करते हुए मानव जीवन के सदुपयोग की प्रेरणा प्रदान की।

2 अप्रैल 2015 को चैत्र शुक्ला को भगवान महावीर की 2614वीं जन्मजयंती के अवसर पर जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, वीरगंज द्वारा नेपाल के प्रमुख वाणिज्य केन्द्र और प्रवेशद्वार वीरगंज में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में नेपाल के महामहिम राष्ट्रपति श्री रामवरण यादव उपस्थित थे। मंच पर पहुंचते ही उन्होंने पूज्यवर को करबद्ध नतशिर वंदन किया। इसके साथ ही एक नया इतिहास सृजित हो गया। किसी गैर भारतीय राष्ट्रपति द्वारा तेरापंथ धर्मसंघ के अनुशास्ता के दर्शन का यह प्रथम अवसर था।

राष्ट्रपतिजी के मंचासीन होने से पूर्व नेपाली राष्ट्रगान का संगान हुआ। आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अपने पावन प्रवचन में कहा कि भगवान महावीर ने सत्य का साक्षात्कार किया था और वे सर्वज्ञ बन गए थे। वे देशातीत, कालातीत थे। राग-द्वेष विमुक्त होकर उन्होंने वीतरागता को प्राप्त किया था और मानवता को अपना महान संदेश देकर ऐकांतिक आग्रह से मुक्त करने का प्रयास किया था। अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अचौर्य जैसे सिद्धांतों के द्वारा उन्होंने एक नए समाज एवं मानव की सृष्टि करने का संकल्प लिया था। आज उनके आदर्शों को अपनाकर हम विश्व में शांति और अहिंसा की स्थापना कर सकते हैं।

राष्ट्रपति महोदय ने अपने अभिभाषण में कहा कि जैन धर्म के प्रवर्तक भगवान महावीर अहिंसा के प्रतीक हैं। जब हिंसा, पशु-बलि, जातिपांति के भेदभाव का बोलबाला था, उस समय उन्होंने सत्य, अहिंसा जैसे मूलभूत उपदेशों के माध्यम से सही रास्ता दिखाया। दर्शन, कला, साहित्य से समृद्ध जैन संस्कृति ने निष्ठापूर्वक समाज संचालन करने के लिए मानव मात्र को एक महत्त्वपूर्ण जीवनशैली प्रदान की। पड़ोसी राष्ट्र भारत में जन्मे हुए भगवान महावीर के आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक विचारों ने हर नेपाली के मन-मस्तिष्क में अहिंसा, शांति एवं ईमानदारी के गुण भरने में सहयोग किया। आचार्यश्री महाश्रमणजी की अहिंसा यात्रा वर्गभेद, आर्थिक विषमता जैसी समस्याओं से आक्रान्त आज के वातावरण में भगवान महावीर की अहिंसा, समता, अनेकान्त जैसे सिद्धान्तों के उजालों में विश्व को और अधिक प्रकाशमय बनाएं, ऐसी कामना करता हूं। प्राचीन ऋषि परंपरा के वर्तमान संवाहक अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्य महाश्रमण का नेपाल आगमन नेपाली मानस में शांति का संदेश फैलाकर विकास की ओर अग्रसर करने में बहुत मददगार होगा, ऐसी आशा है।

कार्यक्रम के अंत में राष्ट्रपतिजी ने अपनी शुभेच्छा से युक्त एक कलात्मक प्रतीकचिह्न पूज्यवर को समर्पित किया। कार्यक्रम में नेपाल के पचीस से अधिक सभासद उपस्थित थे। इनके अतिरिक्त अनेक बड़े प्रशासनिक अधिकारी, सेना पदाधिकारी, कस्टम, इंटेलीजेंस ब्यूरो के अधिकारी आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन समणी शारदाप्रज्ञाजी ने किया। रात्रि में 'एक शाम महावीर के नाम' नामक भक्ति संध्या का आयोजन किया गया, जिसमें अनेक मुनियों ने अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं।

3 अप्रैल 2015 को आचार्यवर ने प्रातःकालीन कार्यक्रम के दौरान स्वयं को स्वयं का मित्र बनाने की प्रेरणा प्रदान की। आज मध्याह्न में चीफ कस्टम अधिकारी श्री मिन्नलाल रेगनी तथा इंटरनेशनल टेक्सेशन के डायरेक्टर श्री लेखनाथ शर्मा ने पूज्यवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

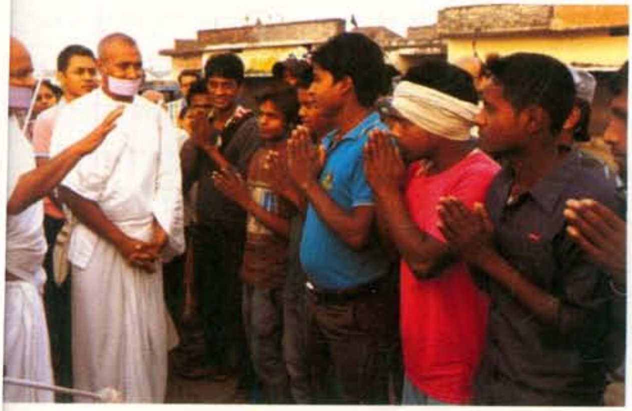

4 अप्रैल 2015 को आचार्यवर सिमरा स्थित हुलास स्टील इंडस्ट्रीज में पधारे। नेपाल के पूर्व सभासद श्री दिवाकर गोलछा ने पूज्यवर का आस्थासिक्त स्वागत किया। आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में आश्रव तत्त्व का विवेचन करते हुए अशुभ आश्रव से बचने की प्रेरणा प्रदान की।

5 अप्रैल 2015 को आचार्यप्रवर अमलेखगंज में पधारे। यहां आचार्यप्रवर ने संवर तत्त्व को व्याख्यायित करते हुए उसे आत्मसात करने हेतु उत्प्रेरित किया। आचार्यवर ने उपस्थित ग्रामीणों को नेपाली भाषा में अहिंसा यात्रा की प्रतिज्ञाएं करवाई।

6 अप्रैल 2015 को आचार्यप्रवर रातोमाटो स्थित श्री जागृति माध्यमिक विद्यालय में पधारे।

आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में पंडित शब्द की व्याख्या करते हुए जीवन में संयम को आत्मसात करने हेतु उत्प्रेरित किया।

7 अप्रैल 2015 को आचार्यवर हेटौडा स्थित एवेकेडो एन ऑर्चिड रिसोर्ट में पधारे। अपने मंगल प्रवचन में आत्मा के स्वरूप की विवेचना करते हुए आत्माभिमुख बनने की प्रेरणा प्रदान की। अपराह्न में मकवानपुर के प्रमुख जिलाधिकारी श्री रामप्रसाद थापरिय, आर्मी बैरक के कर्नल श्री सुशील सितवाल, एसपी प्रकाश जेकार्की व जिला न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश श्री विश्वंभर श्रेष्ठ ने पूज्यवर से पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

8 अप्रैल 2015 को भैंसे गांव के मार्ग में जाते हुए अनेक सैनिकों ने आचार्यवर से प्रतिबोध प्राप्त कर नशामुक्ति का संकल्प ग्रहण किया। आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में धर्म के दो प्रकारों - आचरणात्मक धर्म और उपासनात्मक धर्म का विवेचन करते हुए प्रत्येक प्रवृत्ति के साथ धर्म को जोड़ने की प्रेरणा प्रदान की।

9 अप्रैल 2015 को आचार्यप्रवर लगभग 1015 फुट ऊँचाई का आरोहण कर आचार्यवर कालीघाट स्थित कालिका माध्यमिक विद्यालय में पधारे। अपने प्रवचन में समस्या की जड़ को खोजकर उसका निवारण करते हुए दु:ख के मूल राग को कृश करने की प्रेरणा दी। आज मध्याह्न में एमाले की यूथ विंग के उपाध्यक्ष श्री गोविन्द थापा दर्शनार्थ उपस्थित हुए।

10 अप्रैल 2015 को आचार्यवर लगभग 1670 फुट ऊँचाई का आरोहण कर बाघमार पधारे। कालीटार के श्री कालिका प्राथमिक विद्यालय के प्राचार्य थापा आदि अनेक व्यक्ति मिले। कार्यक्रम में आचार्यवर ने सज्जन और दुर्जन के लक्षणों की चर्चा करते हुए सदगुणों को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की। मध्याह्न में युर्ग्येम याडफेल लिडबौद्ध गुम्बा तथा तपस्या अध्ययन केन्द्र के श्री लरीन लामा पूज्यश्री से मिले। आचार्यवर का उनसे जैन और बौद्ध परंपरा के संदर्भ में वार्तालाप हुआ।

11 अप्रैल 2015 को आचार्यवर लगभग 1703 फुट की ऊँचाई पार कर आचार्यवर महाभिर के श्री भावना

प्राथमिक विद्यालय में पधारे। आचार्यवर ने अपने पावन प्रवचन में गुरु के महत्त्व को प्रतिपादित किया। काठमांडू में गत अठारह वर्षों से निरंतर संचालित प्रेक्षाध्यान केन्द्र के संभागी बड़ी संख्या में पूज्यवर की सन्निधि में उपस्थित हुए। कार्यक्रम में इस संदर्भ में काठमांडू तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री दिनेश नौलखा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

12 अप्रैल 2015 को 1506 फुट की ऊँचाई पर आरोहण कर आचार्यप्रवर लेकाली बसी फांट पधारे। यहां के माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री लड्डूलाल मंडल एवं अन्य शिक्षकों ने पूज्यचरण का स्वागत किया। अपने प्रवचन में आचार्यवर ने भोजन में अनासक्त रहने की प्रेरणा दी। प्रधानाध्यापक ने विद्यालय में प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान प्रारंभ करने की भावना व्यक्त की।

13 अप्रैल 2015 को आचार्यवर दामन गांव के व्यू टावर रिसोर्ट में पधारे। श्री कृष्णप्रसाद लमसाल ने पूज्यचरण का भावभीना स्वागत किया। प्रवचन के दौरान लोगों को वाणी विवेक और वाणी संयम को आत्मसात करने की प्रेरणा प्रदान की। जसोल से समागत श्री बाबूलाल लूंकड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

14 अप्रैल 2015 को आचार्यप्रवर पालुंग वेली हार्ट स्कूल में पधारे और बड़ी संख्या में उपस्थित स्थानीय लोगों को नववर्ष के संदर्भ में समय के सदुपयोग की प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि नेपाली समय व्यवस्था के नए वर्ष का आज प्रारंभ हुआ है। इस वर्ष का हर महीना, हर सप्ताह, हर दिन, हर घंटा और हर सेकेंड मंगलमय हो, इसके लिए साधना के विकास का प्रयास करना चाहिए। पूज्यवर ने उपस्थित जनता को नववर्ष के संदर्भ में बृहत मंगलपाठ सुनाया। पूज्यवर ने लोगों को नेपाली भाषा में अहिंसा यात्रा के संकल्प भी करवाए। अपराह्न में थाना प्रभारी श्री विश्वराजसिंह थापा अपने अधीनस्थ जवानों के साथ पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुए और आचार्यवर से अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए।

15 अप्रैल 2015 को आचार्यप्रवर नोखंडे पधारे। यहां श्री वागेश्वरी माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्य श्री वीरभान संत्यान ने आचार्यवर के स्वागत में अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी। बानेश्वर स्थित कबीर मंदिर के संत आदर्शदासजी ने अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त किया।

16 अप्रैल 2015 को आचार्यवर ने धाधींग जिले के दामेचोर पधारे। यहां के अनेक ग्रामीणों ने आचार्यवर की प्रेरणा से नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। आचार्यवर ने अपने प्रवचन में सज्जन के लक्षणों की चर्चा करते हुए उन्हें आत्मसात करने की प्रेरणा दी।

17 अप्रैल 2015 को आचार्यवर फोगटपुर स्थित महाकालेश्वरी उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे और

मानव जीवन का सदुपयोग करने की प्रेरणा प्रदान की। आज नेपाल के पूर्व कानून मंत्री तथा संविधान परिषद के पूर्व अध्यक्ष श्री नीलाम्बर आचार्यश्री से मिले।

18 अप्रैल 2015 को आचार्यवर जुगेड़ी स्थित यूनाइटेड सीमेन्ट प्रा. लि. में पधारे और अपने मंगल प्रवचन में शरीररूपी नौका से संसाररूपी समुद्र को तरने की प्रेरणा दी। आज अनेकानेक विशिष्ट व्यक्तियों ने पूज्यवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

19 अप्रैल 2015 को आचार्यवर संतुगल में स्थित दूगड़ फूड एंड ब्रेवरेज प्रा. लि. (फ्रूटी फैक्ट्री) में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। आचार्यवर ने कर्म और कर्मफल की विवेचना करते हुए साधना-पथ पर चलने की प्रेरणा प्रदान की। नेपाल की सिंगिंग नन के रूप में प्रख्यात बौद्ध भिक्षुणी आनी चोमिंग ड्रोलमा पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुई।

20 अप्रैल 2015 को पूज्यप्रवर भोटेबहाल पधारे। कार्यक्रम में आचार्यवर ने नश्वर शरीर से अमर आत्मा के कल्याण हेतु पुरुषार्थ करने के लिए उत्प्रेरित किया। कार्यक्रम में नेपाल के सभासद एवं मानवीय सभा के अध्यक्ष श्री ध्यानगोविन्द, तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष श्री पवन सेठिया, महिला मंडल की उपाध्यक्ष श्रीमती सपना भूतोड़िया, मॉर्निंग ग्लोरी स्कूल के प्राचार्य श्री जीवंतकुमार एवं श्री प्रसन्न बैद ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। सायंकाल ट्रैफिक पुलिस के डीआईजी श्री जयबहादुरचन्द ने आचार्यवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

21 अप्रैल 2015 को काठमांडू में अक्षय तृतीया का भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। आचार्यश्री महावीर जैन निकेतन में पधारे और वहां मंगलपाठ किया। इस अवसर पर नेपाल के उपराष्ट्रपति श्री परमानन्द झा उपस्थित थे। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में आवश्यक सूत्र के छह आवश्यकों - सामायिक, चतुर्विंशति, वंदना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग और प्रत्याख्यान का विवेचन किया। उन्होंने कहा कि भगवान ऋषभ ने केवल साधना ही नहीं की, बल्कि लोगों को जीवन से संबंधित व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया। उन्होंने मानवता के प्रति सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों उपकार किए।

इसके पूर्व मार्ग में नेपाली कांग्रेस के जिलाध्यक्ष श्री लोकेश ठकाल, माओवादी (मोहन बैद्य) के जिलाध्यक्ष श्री प्रवेश बोगही, एमाओ जिलाध्यक्ष श्री निर्मल कुइकेल, भारत-नेपाल मैत्री संघ के अध्यक्ष श्री प्रेम लश्करी, आचार्य महाश्रमण स्वागत समिति एवं नेपाल चैंबर आफ कामर्स के अध्यक्ष डॉ. राजेश काजी श्रेष्ठ ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। पशुपतिनाथ मंदिर के पंडितों ने वेदमंत्रों से आचार्यश्री को वर्धापित किया। कार्यक्रम में काठमांडू के मुख्य जिलाधिकारी श्री रेकनारायण अरियाल ने प्रशासन की ओर से पूज्यवर

की भावभीनी अगवानी की। उपराष्ट्रपति श्री परमानन्द झा ने अपने वक्तव्य में अक्षय तृतीया का पर्व जैन एवं हिंदू दोनों के लिए बहुत महत्व रखते हैं। ऐसे पवित्र दिन पर यहाँ आचार्यश्री के सान्निध्य में उपस्थित होकर मैं धन्यता का बोध कर रहा हूँ। 9 नवंबर, 2014 को जब आचार्यश्री दिल्ली के लालकिले से नेपाल के लिए प्रस्थान कर रहे थे तो मैं आपकी सेवा में उपस्थित था। अहिंसा की बात अंतरराष्ट्रीय स्तरों पर सुनाई देती है लेकिन आपने इसे प्रायोगिक रूप देकर जनता के दिलो-दिमाग में बिठाने का प्रशंसनीय कार्य किया है।

कार्यक्रम में मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री लोकमान्य गोलछा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री मोतीलाल दुगड़ ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। मुनि कमलकुमार जी ने अपने सैंतीसवें, मुनि राजकुमारजी ने बीसवें वर्षीतप तथा समणी शीलप्रज्ञाजी ने अपने पंद्रहवें वर्षीतप की संपन्नता के संदर्भ में हृदयोद्‌गार व्यक्त करते हुए पूज्यवर से आगामी वर्षीतप का प्रत्याख्यान किया।

22 अप्रैल 2015 को आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री लोकमान्य गोलछा, तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री दिनेश नौलखा, तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती संतोष नौलखा स्वागत समिति के अध्यक्ष डॉ. राजेश राजी श्रेष्ठ ने पूज्यवर का अभिनंदन किया। नेपाल के प्रमुख राजनीतिक दल एमाले के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री के.पी. शर्मा ओली ने अपने अभिभाषण में कहा कि विश्वशांति के महान अग्रदूत, आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रति शिवजी के वासस्थान शालिग्राम की भूमि, पूर्वज ऋषियों की पावन तपोभूमि, ज्ञानभूमि, पुण्यभूमि, देवभूमि नेपाल में हार्दिक स्वागत और अभिनंदन करता हूं। आपकी संयम की शिक्षा हमें एक-दूसरे के साथ प्रेम, सद्‌भाव, शान्ति और सहअस्तित्व की अवधारणा को साकार करने की दिशा में अग्रसर होने की शक्ति प्रदान करेगी।

23 अप्रैल 2015 को आचार्यवर ने अपने मंगल प्रवचन में चौर्यकर्म से विरत रहने की प्रेरणा प्रदान की। नेपाल के सुप्रसिद्ध गायक श्री रामकृष्ण ढकाल तथा नेपाल के पूर्व श्रममंत्री श्री रमेश लेखक ने आचार्यवर से पावन मार्गदर्शन प्राप्त किया। अपराह्न में पत्रकार संगोष्ठी आयोजित की गई।

24 अप्रैल, 2015 को आचार्यप्रवर ने अपने प्रवचन में कामना के तीन प्रकारों की चर्चा करते हुए देहप्रसाद, मनःप्रसाद एवं दृष्टिप्रसाद की प्राप्ति के लिए क्रमशः रसनाविजय, समता और दुराग्रह त्याग की प्रेरणा प्रदान की।

25 अप्रैल, 2015 को नेपाल की राजधानी काठमांडू में प्रेक्षाध्यान एवं योग विषय पर कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें बाबा रामदेव एवं उनके सहयोगी आचार्य बालकृष्ण विशेष रूप से उपस्थित थे। बाबा रामदेव ने अपने वक्तव्य में अहिंसा यात्रा के मूल तत्व पर विचार

करते हुए प्रेक्षाध्यान एवं योग में अभिन्नता पर बल डाला। आचार्यश्री ने अपने उद्‌बोधन में अष्टांग योग की चर्चा करते हुए ध्यान और योग के द्वारा आत्मसाक्षात्कार की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा प्रदान की।

कार्यक्रम की समाप्ति के बाद आचार्यश्री पंडाल से बाहर पधारे। इसी समय मध्याह्न 11.57 मिनट पर एक भयंकर भूकंप से नेपाल सहित भारत के विभिन्न राज्य दहल उठे। कोई कुछ समझ पाता, उससे पूर्व धरती तीव्र वेग से साथ डोलने लगी। एक कदम भी आगे चलना मुश्किल हो गया। ऐसा लग रहा था जैसे महाप्रलय आ गई। चारों ओर हाहाकार, चीत्कार और अफरातफरी का माहौल बन गया। कुछ भी अघटित घट सकता था। कुछ संतों ने आचार्यवर को थाम लिया। आचार्यश्री तत्काल भूमि पर विराजमान हो गए। उनके आसपास उस समय करीब दस संत चल रहे थे। सभी उनके चारों ओर सुरक्षा घेरा बनाकर बैठ गए। बाबा रामदेव एवं उनके सहयोगी आचार्य बालकृष्णजी कार्यकर्ताओं के सहयोग से पण्डाल के सामने गिरे वृक्ष के ऊपर से होते हुए परिसर के बाहर पहुंचे।

आचार्यप्रवर कुछ समय पश्चात निकटस्थ पुलिस मुख्यालय के मैदान में पधारे। प्रायः सभी साधु-साध्वियां भी कुछ ही देर में इस परिसर में पहुंच गए। यदा-कदा भूकंप से धरती के थर्राने का क्रम जारी था। पूरे नेपाल में मची तबाही की खबरें तब तक आने लगी थीं। काठमांडू सहित पूरे नेपाल में हजारों लोग मारे गए। हताहतों की संख्या तो मानों अनगिनत थी। आचार्यश्री की वरद छत्रछाया में यद्यपि संघ एवं समाज के सभी लोग सुरक्षित थे, परंतु नेपाल में जानमाल की भारी क्षति हुई। बीच-बीच में भारी वर्षा और तूफान की चेतावनी भूकंप से भयभीत लोगों के मानस को उद्वेलित कर रही थी।

आचार्यवर ने उसी समय धर्मसंघ के नाम एक संदेश जारी कर सभी को समताभाव में रहने की प्रेरणा दी और कहा "हम लोग जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के कुछ सदस्य, साधु-साध्वियां और समण श्रेणी काठमांडू में हैं। आज भयंकर भूकंप आया था, परन्तु मामूली शारीरिक चोट के सिवाय हम सभी सुरक्षित हैं। हम सभी प्रायः खुले मैदान में बैठे हैं। अब भी यदा-कदा भूकंप के झटके आ रहे हैं, फिर भी अभी तक कोई चिन्ता वाली बात नहीं लग रही है।

भारत में हमारे काफी साधु-साध्वियां और समणश्रेणी के सदस्य हैं। नेपाल में भी अन्यत्र हमारे साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां हैं। हम उन सबके सुख-संवाद भी जानना चाहते हैं कि नेपाल, भारत और अमेरिका आदि में प्रवासित हमारे साधु-साध्वियां और समणश्रेणी के सदस्य सुखसाता में हैं ना? कहीं कोई विशेष बात हो तो हमें सूचना भी मिले, ताकि यथासंभव सेवा व्यवस्था की जा सके और वहां जो भी उचित व्यवस्था हो सके, उस व्यवस्था से सुरक्षा का प्रबंध होना चाहिए। सब आनंद में

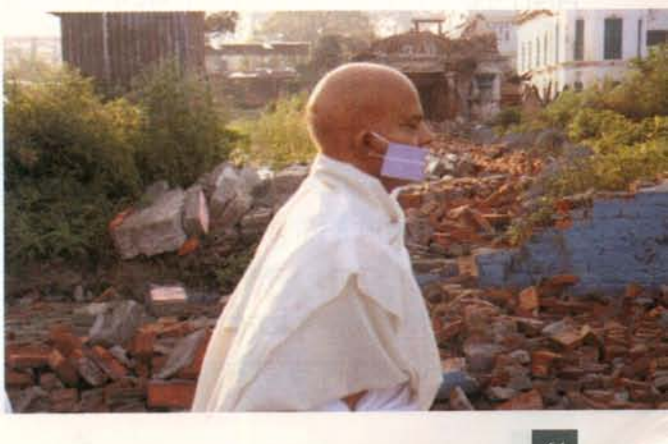

रहें, समताभाव में रहें, जप आदि करते रहें, यह हमारा मंगल संदेश है।

अभी लगभग 3 बजकर 1 मिटर का समय हो रहा है। हालांकि काठमांडू आदि में कई लोग कालकवलित हुए हैं, ऐसे समाचार आ रहे हैं। उनके प्रति हमारे मन में आध्यात्मिक संवेदना है, किन्तु हमारे धर्मसंघ के साधु-साध्वियां और समणश्रेणी सुरक्षित हैं, इसलिए अभी तक की स्थिति के अनुसार हमारे लिए कोई चिन्ता न की जाए। कोई खास बात होगी तो यथासंभव सूचना दी जा सकेगी।"

पूज्यप्रवर के इस मंगल संदेश को सोशियल मीडिया के द्वारा प्रसारित करने का प्रयास किया गया। तेरापंथ धर्मसंघ के दूरस्थ सदस्यों में इस संदेश से कुछ निश्चिंतता का वातावरण निर्मित हुआ। आचार्यवर ने इस अवसर पर आगामी प्रवास आदि के संदर्भ में नीति-निर्धारण भी किया। नेपाल की इस भीषण आपदा के संदर्भ में पूज्यवर का करुणामय हृदय बार-बार मुखरित हो रहा था। पूज्यवर ने कुछ ही समय में एक और संदेश प्रदान किया, जो इस प्रकार है - "वैशाख शुक्ला नवमी, दशमी और चतुर्दशी के संदर्भ में कार्यक्रम हम न मनाने का निर्णय कर रहे हैं। हमारा अनुरोध है कि अन्य किसी स्थान पर भी ये कार्यक्रम न किए जाएं। इन दिनों भूकंप के कारण कालधर्म को प्राप्त और दुःखिनों के प्रति आध्यात्मिक मंगलभावना का प्रयोग किया जा सकता है।"

मध्य रात्रि में नेपाल पुलिस के महानिरीक्षक श्री उपेन्द्रकान्त अयाल पूज्यवर की सुखपृच्छा करने आए, किन्तु आचार्यवर उस समय रात्रि शयन कर रहे थे। वे कार्यकर्ताओं से अपना व्यक्तिगत संपर्कसूत्र देते हुए बोले 'आचार्यश्री की सेवा में हम सदा तत्पर हैं। किसी भी तरह का कार्य हो तो हमें सूचना जरूर की जाए।'

प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री लोकमान्य गोलछा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री मोतीलाल दूगड़ उस समय पूज्यवर की उपासना कर रहे थे। बाहर से समागत लोगों की बात सुनकर वे बोले कि गुरुदेव! अभी ऐसी कोई बात नहीं है कि आपको काठमांडू तत्काल छोड़ना पड़े। यदि ऐसी कोई बात होगी तो हम स्वयं आपसे ऐसा निवेदन कर देंगे। आप हमारे आराध्य हैं, हमारे प्राण हैं। किसी भी प्रतिकूल परिस्थिति में पहले आप और साधु-साध्वियां काठमांडू से पधारेंगे, उसके बाद ही हमारा परिवार यहां से जाएगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के उत्तर भारत के संघचालक श्री बजरंगलाल गुप्ता ने नेपाल स्थित भारतीय दूतावास से आचार्यवर के सुख-संवाद प्राप्त करते हुए आचार्यवर की सुरक्षा हेतु विशेष रूप से जागरूक रहने का अनुरोध किया। नेपाल स्थित भारतीय राजदूत श्री रणजीत रे इस दृष्टि से कार्यकर्ताओं के सम्पर्क में रहे।

सायंकाल 5 बजे पुनः एक संगोष्ठी पूज्यवर की पावन सन्निधि में समायोजित हुई, जिसमें आगामी करणीय कार्यों के विषय में चिन्तन और निर्णय किए गए। इस विषम स्थिति में भी श्रावक समाज की प्रगाढ़ भक्ति मुखरित हो रही थी। अपनी परवाह किए बिना श्रावक-श्राविकाएं आचार्यवर, साधु-साध्वियों, समण-समणियों की सेवा में स्वयं को नियोजित किए हुए थे। सैकड़ों श्रद्धालु इसी परिसर में डटे हुए थे। उन्हें न अपने स्वास्थ्य की चिन्ता थी, न अपने घर की। चिन्ता थी तो मात्र अपने गुरुदेव की और चारित्रात्माओं की। सचमुच ऐसे श्रावक समाज पर गर्व होता है। ये सब आचार्य भिक्षु की कठोर

तपस्या का परिणाम ही कहा जा सकता है। धन्य है तेरापंथ धर्मसंघ ऐसे श्रावक समाज को पाकर और धन्य है हर तेरापंथी ऐसे महातपस्वी गुरु को पाकर।

26 अप्रैल 2015 का प्रवास भी पुलिस मुख्यालय में ही होने की संभावना को देखते हुए नेपाल पुलिस महानिरीक्षक को शैयातर स्थापित किया गया। सूर्योदय के पश्चात मुख्यनियोजिकाजी आदि साध्वीवृन्द पूज्यवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुई। आचार्यवर ने सभी साध्वियों से सुखपृच्छा की।

27 अप्रैल, 2015 को वैशाख शुक्ला नवमी को परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण का 54वां जन्मदिवस मनाया गया। परमाराध्य आचार्यवर ने अपने जन्मदिन के उपलक्ष्य में सबसे भूकंप पीड़ितों के लिए आध्यात्मिक मंगलभावना करने का आह्वान किया। इस दिन नेपाल पुलिस महानिरीक्षक श्री उपेन्द्रकान्त अयाल ने आचार्यवर के दर्शन किए। उन्होंने पूज्यवर से सुखपृच्छा करते हुए अपने घर में चरणस्पर्श करने का अनुरोध किया।

पुलिस मुख्यालय के इस परिसर में नेपाल पुलिस के अनेक वरिष्ठ अधिकारी आचार्यवर के दर्शन कर सुखपृच्छा कर रहे थे। डीआईजी श्री एस.बी.पाल तथा श्री नवराज शिल्वा ने भी आचार्यवर के दर्शन किए। मध्याह्न में नेपाल की सुप्रसिद्ध संगायिका बौद्ध भिक्षुणी आनी चोइंग ड्रोलमा तथा सभासद व फुटबाल एसोसियेशन के अध्यक्ष श्री गणेश थापा ने दर्शन कर सुखपृच्छा की।

28 अप्रैल 2015 को परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण का छठा पदाभिषेक दिवस आयोजित किया गया। आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में आध्यात्मिक मंगलभावना के प्रयोग के रूप में जप का अनुष्ठान किया गया, जिसमें नमस्कार महामंत्र और लोगस्स के कुछ अंश का जप किया गया।

29 अप्रैल 2015 को राजस्थान की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने राजस्थान सरकार की ओर से भूकंप पीड़ितों की सहायतार्थ नेपाल पहुंचे पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्रालय के प्रमुख शासन सचिव तथा मुख्यमंत्री के पूर्व सचिव श्री श्रीमत पाण्डे, अतिरिक्त उपमहानिदेशक पुलिस श्री उमेश मिश्र, रोड डेवलपमेंट अथॉरिटी के संयुक्त सचिव श्री उज्ज्वल राठौड़ को आचार्यवर के पास पहुंचने का निर्देश दिया। तीनों महानुभावों ने आचार्यवर के दर्शन किए तथा मुख्यमंत्रीजी की ओर से आचार्यवर से सुखपृच्छा की। शाम में काठमांडू के पुलिस एस.पी. श्री विनोद सिल्वाल ने आचार्यवर के दर्शन कर पावन प्रेरणा प्राप्त की।

30 अप्रैल 2015 से प्रवचन के अतिरिक्त आचार्यप्रवर की दैनिकचर्या के अंग के रूप में आगम संपादन, आगम वाचन, बृहत मंगलपाठ, जनता को सेवा करवाना आदि सभी उपक्रम पहले की भांति सामान्य रूप से चलने लगे।

ज्ञानशाला के माध्यम से समाज के बच्चों में धार्मिक, आध्यात्मिक एवं चारित्रिक संस्कार भरे जाते हैं। इन ज्ञानशालाओं ाका संचालन प्रशिक्षित प्रशिक्षकों द्वारा किया जाता है। ज्ञानशालाओं में प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु देश के विभिन्न अंचलों में प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन भी किया जाता है। इस माह के दौरान निम्नलिखित क्षेत्रों में प्रशिक्षण शिविरों का संचालन किया गया।

ज्ञानशाला संवाद

प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कटक के तत्वावधान में कटक में नियमित साप्ताहिक ज्ञानशाला चलती है। इसके प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण का व्यवस्थित क्रम पिछले लगभग 5-7 वर्षों से चल रहा है। इसी क्रम में दिनांक 3-4-5 अप्रैल, 2015 को त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन हुआ, जिसमें कटक क्षेत्र की 10 बहिनों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण के दौरान श्री नौलखा ने जैन दर्शन, तेरापंथ के सिद्धांत, ज्ञानशाला कैसे संचालित हो, बच्चों में संस्कार निर्माण कैसे हो? आदि विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया। 5.4.2015 को प्रशिक्षण प्राप्त कर रही बहनों की परीक्षा हुई। कार्यक्रम का संचालन कटक सभा के मंत्री श्री प्रफुल्ल बेताला ने किया। व्यवस्थाओं के संपादन एवं सार संभाल में वरिष्ठ श्रावक श्री मंगलचन्द चौपड़ा, सभाध्यक्ष श्री मोहनलाल चौरड़िया, तेममं, तेयुप तथा प्रवक्ता उपासक श्री पानमल नाहटा सभी का सराहनीय श्रम नियोजित हुआ। प्रशिक्षण व्यवस्थापिका श्रीमती किरण देवी बैंगानी ने अपने भी दायित्व का निर्वहन किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उदयपुर द्वारा बच्चों को अपने संस्कारों से जोड़े रखने के लिए चलाई जा रही ज्ञानशालाओं का वार्षिक उत्सव अणुव्रत चौक स्थित तेरापंथ भवन में आयोजित हुआ। इस अवसर पर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री राजकुमार फत्तावत ने कहा कि ज्ञानशाला के माध्यम से बच्चों में संस्कार डाले जाने का प्रयास निस्संदेह सराहनीय है। ज्ञानशाला निदेशक श्री फतहलाल जैन ने स्वागत किया। कार्यक्रम में ज्ञानशाला के आंचलिक संयोजक श्री दिनेश कोठारी तथा उदयपुर की ज्ञानशाला प्रभारी मंजू दक ने हिस्सा

लिया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के स्वच्छ भारत अभियान में बच्चों ने हिपहोप नृत्य के माध्यम से साफ-सफाई रखने का संदेश दिया और जय जय ज्योतिचरण..... जय जय महाश्रमण से भक्ति गीत की प्रस्तुति दी। इसके बाद महंगाई पर बच्चों ने एक अनूठी नाटिका का मंचन किया, जिस पर पूरा सभागार ओम अर्हम् की ध्वनि से गूंज उठा। राष्ट्रभक्ति पर आधारित नाटिका सरहद का मंचन किया गया। वर्ष 2050 में विश्व की भौगोलिक स्थिति एवं छह कायों पृथ्वीकाय, अपकाय, तेजसकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय एवं त्रसकाय पर नाट्य मंचन किया गया। अंत में राजस्थानी नृत्य की आकर्षक प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन संगीता पोरवाल ने किया। आभार सुनीता बैंगानी ने व्यक्त किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पूर्णिया के तत्वावधान में ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी के मूल्यांकन हेतु दिनांक 10.5.2015 को प्रथम टेस्ट लिया गयाा, जिसमें कुल 66 बच्चों ने परीक्षा दी। ज्ञानशाला समिति की देखरेख में ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा शिशु संस्कार बोध, भाग-1 से 5 तक एवं जैन विद्या, भाग-1 की परीक्षा ली गई। इस अवसर पर सभा के अध्यक्ष श्री भंवरलाल डागा ने कहा कि बच्चों के सुन्दर भविष्य के निर्माण तथा आध्यात्मिक एवं अनुशासित जीवन यापन की शिक्षा देने के लिए ज्ञानशाला एक उत्तम माध्यम है। ज्ञानशाला संयोजक श्री धर्मचन्द श्रीमाल ने अच्छी तैयारी कराने के लिए प्रशिक्षिकाओं को साधुवाद दिया। प्रश्न पत्र ज्ञानशाला समिति सदस्य श्री अभय बैद ने तैयार किए। ■

सभाओं में निर्वाचन

श्री जैन-श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी

अध्यक्ष	श्री सुनील कुमार सेठिया
उपाध्यक्ष	श्री कन्हैयालाल सुराणा श्री रायचंद पटावरी
मंत्री	श्री निर्मल कोटेचा
संयुक्त मंत्री	श्री राजेश जमड़ श्री राजकुमार बैद
कोषाध्यक्ष	श्री शांतिलाल खटेड

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सूरतगढ़

अध्यक्ष	श्री मांगीलाल रांका
उपाध्यक्ष	श्री भीखाराम श्रीमाल
मंत्री	श्री राजेन्द्रप्रसाद चौपड़
सहमंत्री	श्री पवन कुमार जैन
कोषाध्यक्ष	श्री मालचन्द रांका

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते।।

देवता, ब्राह्मण, गुरु और ज्ञानीजनों का पूजन, पवित्रता, सरलता, ब्रह्मचर्य से रहना, किसी जीव को न सताना - यह शरीरिक तप कहा गया है।

सभा संवाद

तेरापंथी सभाओं में विराजित चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में सभाओं के तत्वावधान में विभिन्न धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में समय-समय पर भिन्न-भिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं ताकि पूरे देश में संस्कारित समाज का निर्माण और आध्यात्मिक-वैज्ञानिक व्यक्तित्व का विकास हो सके। इसी क्रम में प्रस्तुत है विभिन्न सभाओं द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की संक्षिप्त जानकारी।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सिलीगुड़ी

भगवान महावीर जन्म कल्याणक कार्यक्रम

साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी के सान्निध्य में सिलीगुड़ी महावीर जयंती समारोह समिति के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन में महावीर जयंती का भव्य कार्यक्रम समायोजित हुआ। इस कार्यक्रम में पश्चिम बंगाल सरकार के उत्तर बंग विकास मंत्री श्री गौतम देव मुख्य अतिथि, सिक्किम हाई कोर्ट के पूर्व मुख्य न्यायाधीश तथा सिक्किम राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष श्री नरेन्द्र कुमार जैन विशिष्ट अतिथि तथा एनएचपीसी के महाप्रबंधक श्री प्रियरंजन मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। श्री दिगम्बर जैन समाज के वरिष्ठ श्रावक श्री प्रसन्न कुमार जैन, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र कुमार छाजेड़, साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष श्री सुभाष कुंभट, श्वेताम्बर मंदिरमार्गी समाज के अध्यक्ष श्री शांतिलाल नाहटा, महावीर जयन्ती समारोह समिति के अध्यक्ष श्री दिनेश कुमार ललवानी, मंत्री श्री बच्छराज बोथरा आदि अनेक गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

साध्वीश्री अणिमाश्रीजी ने अपने मंगल उद्‌बोधन में कहा कि संयम की धरती पर पराक्रम की मशाल जलाने वाली चेतना का नाम है भगवान महावीर। विश्वास की महफिल में ज्ञान की अखण्ड ज्योत जलाने वाली दीपशिखा का नाम है भगवान महावीर। समता के मानसरोवर में अहर्निश डुबकी लगाकर मंजिल से मुलाकात करनेवाली प्रदीप्त आभा का नाम है भगवान महावीर। साधना के समरांगण में ध्यान का कवच धारण कर कर्म कटक पर विजय प्राप्त करनेवाली विराट शक्ति का नाम है भगवान महावीर। आज समूचा जैन समाज चरम तीर्थंकर परम पिता भगवान महावीर का जन्म-कल्याणक बड़े ही उल्लासपूर्ण वातावरण में उमंग के साथ मना रहा है। साध्वी मंगलप्रज्ञाजी ने कहा कि भगवान महावीर के विचारों में वर्तमान की

समस्याओं का समाधान है। आज के युग में भी उनके सिद्धान्त एवं विचार बेहद प्रासंगिक हैं।

साध्वी कर्णिकाश्रीजी, साध्वी समत्वयशाजी, साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने अपने उद्‌गार वक्तव्य व स्वरलहरी के माध्यम से व्यक्त किए। मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र छाजेड़, महावीर जयन्ती समारोह समिति के अध्यक्ष श्री दिनेश ललवानी, मंत्री श्री बच्छराज बोथरा, संयोजक श्री करण जैन आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी सुधाप्रभाजी ने किया। कार्यक्रम के प्रांरभ में प्रातः दिगम्बर जैन मंदिर से भव्य प्रभात फेरी निकाली गई।

इस अवसर पर तेरापंथी सभा के मंत्री श्री बजरंग सेठिया ने कालिम्पोंग एवं रम्फु दो नवगठित सभा के पदाधिकारियों को पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई।

साध्वीवृंद के भूटान में मंगल प्रवेश पर कार्यक्रम

साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी का भूटान में एक दिवसीय प्रवास श्री खिंवराजजी, बसंत कुमार बांठिया के आवास में हुआ। इस प्रवास के दौरान साध्वीवृन्द का फुन्चिलिंग के प्रसिद्ध बौद्ध गुमा पेलदेन ताशी छोलींग छुलारवांग में रिनपोछे सामतेन से मिलन हुआ। साध्वीश्रीजी की रिनपोछे से वार्ता बड़ी संघप्रभावक रही। रिनपोछे के साथ अनेक बौद्ध लामा उपस्थित थे। वे सब प्रथम बार ही जैन धर्म का एवं भगवान महावीर का नाम सुन रहे थे। वार्तालाप के दौरान जब साध्वीश्रीजी ने श्रमण परम्परा की बौद्ध एवं जैन जीवित परम्परा के बारे में बताया तथा जैन साधु की चर्चा के बारे में जानकारी दी तो उन्हें बहुत ही आश्चर्य हुआ। उन्होंने अपनी जिज्ञासाएं भी प्रस्तुत कीं। साध्वीश्री अणिमाश्रीजी ने अपने वार्तालाप के मध्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की अहिंसा-यात्रा की अवगति दी तथा आचार्यवर के भूटान आगमन की सूचना दी। साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी ने बड़ी ही प्रभावी शैली में बौद्ध एवं जैन संस्कृति की समानता के बारे में बताया।

मोनेस्ट्री के प्रिंसिपल लामा ने स्वयं साध्वीश्रीजी के साथ चलकर मंदिर का अवलोकन करवाया। इस कार्यक्रम

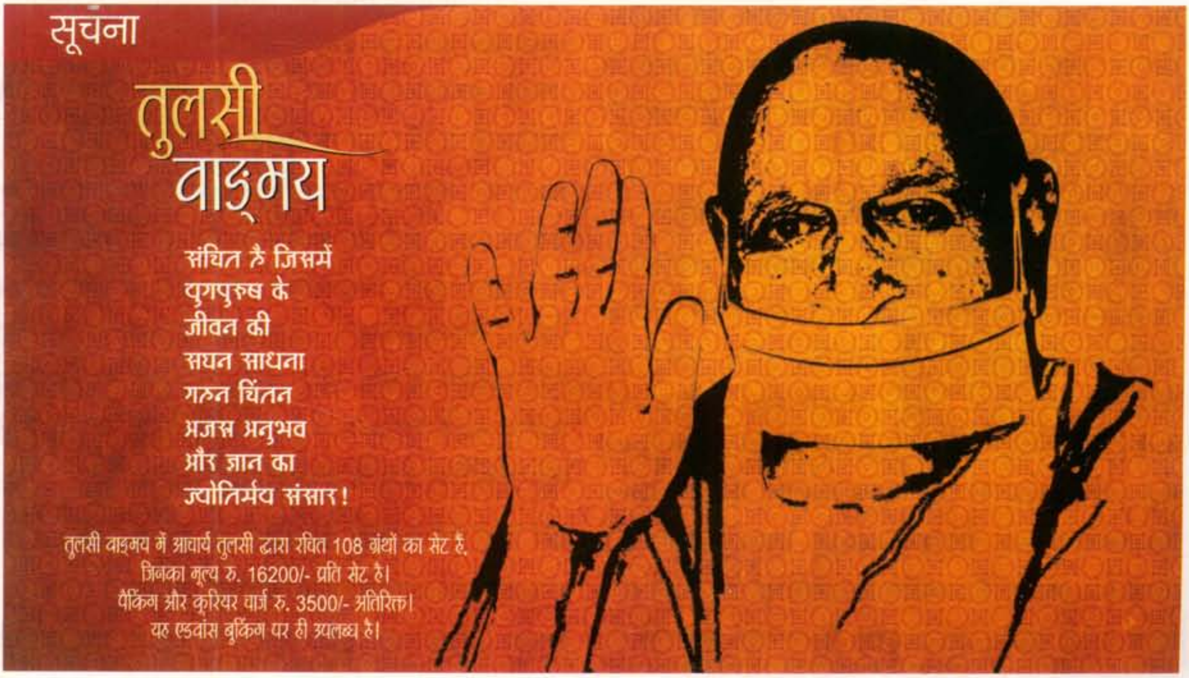

की आयोजना में श्री विनोद बोथरा की विशेष सक्रियता रही। कार्यक्रम में श्री पूनमचन्द बोथरा, श्री मांगीलाल बोथरा, श्री गणेश सरावगी, श्री विनोद बोथरा, श्री मनोज बरड़िया, श्री विजयराम बैद, श्री बसन्त बांठिया, श्रीमती विजयलक्ष्मी बांठिया आदि गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, जयपुर

अक्षय तृतीया महोत्सव

साध्वी रतनश्रीजी (लाडनूं) के सान्निध्य में जयपुर सभा द्वारा अक्षय तृतीया के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वीश्री ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय संस्कृति त्याग व तपस्या प्रधान रही है। अनेक महापुरुषों ने तपस्या के द्वारा जैन धर्म को उंचा उठाया है। हम भी यह कामना करें समाज व्यवस्था में परिवर्तन लाने वाले ऋषभ जैसे युगपुरुष फिर से पैदा हों। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी चैतन्ययशा द्वारा ऋषभाय नमः ऋषभाय नमः की स्तुति से हुई। साध्वी रमावतीजी, नेचुरोपैथी डॉक्टर सरोज मालू, साध्वी हिमश्रीजी, साध्वी मुक्तियशाजी आदि ने अपनी भावांजलि प्रकट की। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष श्री राजकुमार बरड़िया ने आभार ज्ञापन किया। अनेक भाई बहिनों ने तपस्या की अनुमोदना की।

आचार्य महाप्रज्ञ की छठी पुण्यतिथि पर कार्यक्रम

तेरापंथ धर्मसंघ के दशवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के छठे महाप्रयाण दिवस पर साध्वी रतनश्री (लाडनूं) के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, जयपुर में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा कि महापुरुषों का जीवन हमेशा प्रेरणा देने वाला होता है, जो आत्मकल्याण के साथ-साथ जनकल्याण का महान अवसर प्रदान करता है। कार्यक्रम साध्वी चैतन्ययशाजी द्वारा महाप्रज्ञ अष्टकम द्वारा प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर साध्वी रमावतीजी, साध्वी हिमश्रीजी एवं चैतन्ययशाजी तथा जयपुर तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री राजकुमार बरड़िया, श्री सुरेश बरड़िया, प्रेक्षा प्रशिक्षक श्री जैन विजय बोथरा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन करते हुए साध्वी मुक्तियशाजी ने कहा कि संसार समुद्र की समस्त समस्याओं के महानायक, जिनवाणी के परम प्रबल उपासक थे आचार्य महाप्रज्ञजी।

तप अभिनन्दन कार्यक्रम

शासनश्री साध्वीश्री अशोकश्रीजी के पावन सान्निध्य में जयपुर तेरापंथ सभा की ओर से वर्षीतप करनेवाले तपस्वी श्री कमलेश बरड़िया, श्रीमती शांति देवी चौपड़ा व सुश्री निर्मला बरड़िया का तप अभिनन्दन किया गया। साध्वीश्री जी ने तपस्वियों के प्रति हार्दिक शुभकामनाएं प्रकट कीं और तप अनुमोदना करते हुए कहा कि जिसका शरीरबल, मनोबल, आत्मबल एवं संकल्पबल दृढ़ होता है वह चेतना के क्षेत्र में आगे बढ़ जाता है। इन तपस्वियों ने तपस्या के साथ सामायिक, स्वाध्याय जप एवं समत्व भाव से अपनी साधना को पूर्ण जागरूकता के साथ आगे बढ़ाया यह सबके लिए अनुकरणीय, प्रशंसनीय एवं प्रेरणादायी है। साध्वी चिन्मयप्रभाजी, साध्वी चारूप्रभाजी एवं साध्वी इन्दुप्रभाजी ने भी तपस्वियों के प्रति हार्दिक शुभकामनाएं प्रकट कीं।

प्रारंभ में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री राजकुमार बरड़िया तथा मंत्री श्री राजेन्द्र कुमार बांठिया ने वर्षीतप करनेवाले सभी भाई-बहनों का हार्दिक अभिनन्दन किया। बहन निर्मला ने इस तपस्या के लिए पूरे परिवार को सहयोगी बताया और उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मंजुयशा ने बड़े व्यवस्थित ढंग से कुशलतापूर्वक किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, नोखा

भगवान महावीर जन्म कल्याणक कार्यक्रम

शासन गौरव साध्वीश्री राजीमती जी के सान्निध्य में

नोखा सभा द्वारा तेरापंथ भवन में आयोजित भगवान महावीर की जन्म जयन्ती के अवसर कहा कि भगवान महावीर के सत्य, अहिंसा, अनेकान्त, ब्रह्मचर्य के सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है। संयम-साधना, स्वाध्याय, ध्यान के द्वारा जीवन का निर्माण हो सकता है। हमें स्वयं तनावमुक्त शान्ति का जीवन जीना सीखना चाहिए। इस अवसर पर साध्वीश्री कुसुमप्रभा, साध्वीश्री समताश्री, साध्वीश्री कुसुमप्रभा, साध्वीश्री करुणाश्री, साध्वीश्री पुलकितयशा ने भावपूर्ण गीतिका एवं वक्तव्यों के द्वारा भगवान महावीर के प्रति अपनी प्रणति प्रकट की। कार्यक्रम की अध्यक्षता पाचून खाद्य व्यापार मण्डल के अध्यक्ष श्री जयदीश प्रसाद खत्री ने की। मुख्य अतिथि विद्या भारती जिला संयोजक एवं आर.एस.एस. नगर संघ के श्री शिवनारायण झंवर, नागरिक सेवा संस्थान के अध्यक्ष श्री आसकाण भट्टड़, डॉ. प्रेमसुख मरोठी, श्री इन्द्रचन्द बैद कवि, श्री हस्तीमल बैद, श्री गोपाल लुणावत, सुश्री पूजा चौपड़ा, सुश्री जयश्री भूरा, श्री खुशाल चौरड़िया, श्री प्रियांशु, सुश्री भावना मालू आदि ने भी महावीर के संबंध में अपने विचार प्रस्तुत किये। ज्ञानशाला के बच्चों ने मार्मिक ढंग से महावीर की जीवन झांकी, महावीर स्तुति प्रस्तुत की।

कार्यक्रम में पधारे हुए अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान सभा अध्यक्ष श्री हरखचन्द छाजेड़ एवं मंत्री श्री लाभचन्द छाजेड़ ने किया। सभा के मंत्री श्री लाभचन्द छाजेड़ ने स्वागत एवं आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन श्री निर्मल कुमार भूरा ने किया।

इस अवसर पर एक किचन किंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विजेताओं का सम्मान महिला मंडल अध्यक्षा श्रीमती जयश्री भूरा, श्रीमती लीला सुराना, श्रीमती सरला बांठिया आदि ने प्रदान किये।

आगम मंथन प्रतियोगिता में श्री तोलाराम घीया, श्री घेवरचन्द बैद, श्री मांगीलाल संचेती, श्री इन्दरचन्द मालू, श्री इन्दरचन्द बैद कवि, श्री सम्पतलाल डागा, श्री लक्ष्मीनारायण पारख, श्री हस्तीमल बैद, श्री सुनील बैद

सूचना

"तुलसी गाथा" आचार्य तुलसी के जीवन पर आधारित एनीमेशन फिल्म की डी वी डी (अवधि 25 मिनट लगभग) उपलब्ध है। विशेष दर रु. 100/- प्रति डी वी डी + पैकिंग एवं कोरियर खर्च।

ट्रिव्यूट टु आचार्य तुलसी डीवीडी में आचार्य श्री तुलसी के बारे में देश के विशिष्ट राजनयिकों, सार्वजनिक क्षेत्र के महानुभावों आदि के द्वारा प्रकट किए गए उद्‌गारों का समावेश किया गया है। विशेष दर रु. 100 प्रति डी वी डी+ पैकिंग एवं कोरियर खर्च।

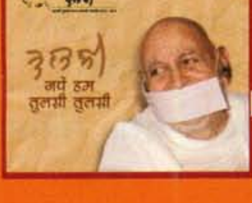

"जपें हम तुलसी-तुलसी" सीडी जिसमें आचार्य तुलसी के एवं उनके विषय में रचित गीतों को देश के विख्यात पार्श्वगायकों ने स्वर दिया, अब उपलब्ध है। विशेष दर रु. 30/- प्रति सीडी + पैकिंग एवं डाक खर्च।

उपर्युक्त सीडी मंगवाने हेतु महासभा कार्यालय को इमेल अथवा पत्र द्वारा यथाशीघ्र सूचित करें। सभी सभाएं विशेष ध्यान देकर अपने क्षेत्र की अपेक्षानुसार शीघ्र सीडी एवं डी वी डी का आरक्षण कराएँ।

आदि चौदह प्रतियोगियों को तेरापंथ सभा द्वारा पुरस्कृत किया गया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी

साध्वीवृंद का गुवाहाटी में मंगल प्रवेश

साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी व उनकी सहवर्तिनी साध्वीवृन्द साध्वीश्री कर्णिकाश्रीजी, साध्वीश्री मैत्रीप्रभाजी, साध्वीश्री समत्वयशाजी एवं साध्वीश्री सुधाप्रभाजी का असम प्रवेश गत 29 अप्रैल 2015 को बक्सीरहाट बोर्डर में हुआ। इस अवसर पर श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी के अध्यक्ष श्री सुनील कुमार सेठिया एवं मंत्री श्री निर्मल कोटेचा के अलावा कई श्रावक-श्राविका उपस्थित थे। साथ ही धुबड़ी से भी काफी श्रावक पधारे थे। इस अवसर पर अध्यक्ष श्री सेठिया ने कहा कि हम सौभाग्यशाली हैं कि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने महती कृपा करके विदुषी साध्वीश्री अणिमाश्रीजी एवं साध्वीश्री मंगलप्रज्ञाजी का चातुर्मास गुवाहाटी समाज को प्रदान किया है। साध्वीश्री अपने निर्देशित लक्ष्य को ध्यान में रखकर कोलकाता से जिस द्रुत गति से यात्रा करती हुई असम बोर्डर पधारी हैं यह आपके अदम्य साहस, कठिन परिश्रम का परिचायक है, जो सबको आह्लादित कर रहा है। उन्होंने पूर्वोत्तर के सभी क्षेत्रों से आह्वान किया कि इस धर्म यज्ञ में अपनी आहुति प्रदान करें एवं ज्यादा से ज्यादा लोग जुटकर साध्वीश्रीजी की सेवा में लगें।

गुवाहाटी सभा का निर्वाचन

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुवाहाटी के सत्र 2015-17 का चुनाव गत 12 अप्रैल को स्थानीय तेरापंथ भवन में शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न हुआ। मुख्य चुनाव अधिकारी श्री तारकेश्वर संचेती ने श्री सुनील कुमार सेठिया को अध्यक्ष निर्वाचित घोषित किया। 26 अप्रैल को नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री सुनील कुमार सेठिया एवं उनकी कार्यकारिणी समिति का शपथ ग्रहण समारोह प्रातः 9.30 बजे स्थानीय तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री सेठिया ने अपने पदाधिकारियों की घोषणा की। इस अवसर पर तेरापंथी सभा, महिला मंडल, युवक परिषद, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, आचार्य तुलसी महाश्रमण रिसर्च फाउंडेशन, अणुव्रत समिति, ज्ञानशाला, अर्हम भजन मंडली के अलावा पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी युवा मंच, लाडनूं ओसवाल परिषद, बाबोसा भक्त मंडल एवं बाबोसा महिला परिवार के पदाधिकारी आदि ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष एवं उसकी संपूर्ण कार्यकारिणी को अपनी शुभकामनाएं दीं। इस मौके पर अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री सुनील कुमार सेठिया ने अपनी विभिन्न योजनाओं के साथ ही आचार्य महाश्रमण के प्रस्तावित चातुर्मास के मद्देनजर संपूर्ण समाज को विश्वास में लेकर आगामी तैयारी करने की घोषणा की। मंत्री श्री निर्मल कोटेचा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन श्री अशोक सेठिया ने सफलतापूर्वक किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पाटण

भगवान महावीर जन्म कल्याणक कार्यक्रम

साध्वीश्री लब्धिश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ समाज पाटण द्वारा भगवान महावीर का जन्म कल्याणक हर्षोल्लास सहित तेरापंथ भवन में मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता वयोवृद्ध प्रोफेसर साहित्यकार, इतिहासकार श्री मुकुन्द भाई ब्रह्मक्षत्रिय ने की। साध्वीश्री हेमयशाजी ने अपने वक्तव्य में महावीर के आदर्शों को अपनाने की प्रेरणा दी। मुख्य वक्ता श्री अशोक भाई संघवी ने सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह को अपनाने पर बल दिया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गोनियाना मंडी

भगवान महावीर जन्म कल्याणक कार्यक्रम

तेरापंथी सभा, गोनियाना मंडी के तत्वावधान में साध्वीश्री

अमितप्रभाजी, ठाणा-5 के सान्निध्य में दिनांक 2.4.2015 को भगवान महावीर जयन्ती एवं तेरापंथ भवन उद्‌घाटन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा कि भारत की इस पुण्य धरा पर बिहार प्रान्त के क्षत्रिय कुण्ड ग्राम में लगभग 2600 वर्ष पूर्व जन्मे भगवान महावीर ने देश में व्याप्त अनेक बुराइयों को समाप्त करने में महनीय भूमिका निभाई। उस समय समाज में जाति प्रथा जोरों पर थी। पशुओं की भांति मनुष्यों को भी बेचा जाता था। दास-दासियों को स्वतंत्र जीवन जीने का कोई अधिकार नहीं था। धर्म के नाम पर पशुओं की बलि दी जाती थी। भगवान महावीर ने जैन धर्म के माध्यम से सभी को समान अधिकार देने की बात कही। जाति, वर्ण, लिंग, रंग की सीमाओं से परे व्यक्ति को समानता की सीख दी। जैतोमण्डी, भटिण्डा, कोट कपूरा, निहालसिंहवाला आदि क्षेत्रों से श्रद्धालु उपस्थित थे। इसी अवसर पर साध्वीश्री अमितप्रभा के बृहद मंगलपाठ से गोनियाना मंडी के नए सभा भवन का उद्‌घाटन हुआ। कार्यक्रम के प्रारंभ 15 मिनट तक नमस्कार महामंत्र का जप किया गया।

आचार्य महाप्रज्ञ की छठी पुण्यतिथि पर कार्यक्रम

गोनियाना मंडी सभा द्वारा साध्वी अमितप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित आचार्य महाप्रज्ञ की छठी पुण्यतिथि पर कार्यक्रम में साध्वीश्री ने आचार्य महाप्रज्ञ को प्रणति निवेदित करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ उच्च कोटि के विद्वान, महान दार्शनिक, ओजस्वी वक्ता, सफल साहित्यकार, अनूठे कवि और चोटी के चिन्तक थे। इस अवसर पर साध्वी कंचनवालाजी, साध्वी ध्रुवरेखाजी एवं साध्वी ऋजुप्रभाजी ने भी अपने भाव सुमन अर्पित किए। सभा अध्यक्ष एवं अन्य प्राधिकारियों की उपस्थिति में आयोजित इस कार्यक्रम की शुरुआत सुश्री अनु जैन के मंगलाचरण से हुई। अनेक लोगों ने अपने विचार एवं गीतिकाएँ भी प्रस्तुत कीं।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुलाबबाग

भगवान महावीर जन्म कल्याणक कार्यक्रम

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गुलाबबाग द्वारा दिनांक 2.4.2015 को भगवान महावीर की 2614वीं जन्मजयन्ती मनाई गई। इस अवसर पर प्रातः सात बजे

सूचना

सचित्र कॉइन युक्त स्मारिका

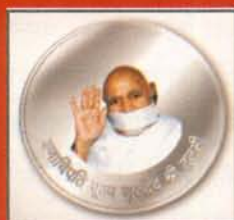

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में एक सुंदर, आकर्षक एवं उपयोगी स्मारिका आचार्यप्रवर के चित्र एवं जन्म शताब्दी के मीनाकारी युक्त लोगो सहित सिल्वर प्लेटेड कॉइन के साथ प्रकाशित की गई है। इस स्मारिका में कॉइन के साथ गुरुदेव के जीवन से जुड़े विशिष्ट प्रसंगों की सचित्र प्रस्तुति दी गई है। सचित्र कॉइन युक्त यह स्मारिका प्रत्येक परिवार हेतु एक संग्रहणीय निधि है।

इसे यथासंभव तेरापंथी समाज के सभी परिवारों के साथ-साथ जन-साधारण तक पहुँचाने की दृष्टि से प्रति स्मारिका (कॉइन सहित) मात्र 300 रु. की सहयोग राशि पर सुलभ कराया जा रहा है। इसकी अग्रिम बुकिंग हेतु महासभा कार्यालय से संपर्क करें।

आयोजित शोभा यात्रा में ज्ञानशाला के बच्चों ने भगवान महावीर के जन्मोत्सव व साधना काल की झांकी तथा आचार्य महाश्रमण की अहिंसा यात्रा के उद्देश्य सद्भावना, नैतिकता, नशामुक्ति को झांकी के द्वारा दर्शाया। नेपाल विहार सभा के अध्यक्ष श्री नेमचन्द बैद, सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री चांदरतन संचेती, मंत्री श्री मनोज पुगलिया, महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती चंदा दुगड़ आदि ने इस अवसर पर अपने विचारों के माध्यम से भगवान महावीर के प्रति अपनी भावांजलि प्रस्तुत की। ज्ञानशाला संयोजक श्री धर्मचन्द श्रीमाल ने ज्ञानशाला प्रशिक्षक परीक्षा व जैन विद्या परीक्षा के परिणाम घोषित किए। सभी झांकियों को सजाने-संवारने का काम ज्ञानशाला की मुख्य प्रशिक्षिका श्रीमती बवीता गिड़िया ने अन्य प्रशिक्षिकाओं के सहयोग से किया। इस अवसर पर तेरापंथ भवन में धम्म जागरणा का कार्यक्रम भी रखा गया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सूरतगढ़

आचार्य महाप्रज्ञ की छठी पुण्यतिथि पर कार्यक्रम

सूरतगढ़ सभा द्वारा तेरापंथ धर्मसंघ के दशम आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की छठी पुण्यतिथि पर दिनांक 15.4.2015 को स्थानीय तेरापंथ भवन में रात्रि को जप एवं संगीत संध्या का कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंगलाचरण के पश्चात श्री अनिल रांका द्वारा जप कराया गया एवं आचार्य महाप्रज्ञजी की जीवनी के बारे में जानकारी दी गई। तत्पश्चात आचार्य महाप्रज्ञजी के भजनों (गीतों) का समूह गान कर उन्हें भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, उधना

अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव

साध्वीश्री कैलाशवतीजी के मंगल सान्निध्य में अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव कार्यक्रम में 23 वर्षीतप तपस्वी भाई बहिनों ने साध्वीश्रीजी को इक्षि-रस का दान करके सामूहिक पारणा किया। कार्यक्रम में पधारे हुए सभी श्रावक/श्राविकाओं को सभा के अध्यक्ष श्री जयसिंह रांका ने स्वागत किया। सभी साध्वियों ने 23 तपस्वियों के नामों के साथ तप के गीतों से तपस्वियों को बधाई दी। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री श्री लादुलाल नंगावत ने किया। अन्त में सभी तपस्वियों को सभा की तरफ से तप अनुमोदना के रूप में स्मृतिचिह्न व साहित्य से सम्मान किया गया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गोगुंदा

आचार्य महाप्रज्ञ की छठी पुण्यतिथि पर कार्यक्रम

स्थानीय मगन ज्ञान मन्दिर में आचार्यश्री महाप्रज्ञ की वार्षिक पुण्यतिथि का आयोजन साध्वीश्री विशदप्रज्ञाजी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। श्रावक-श्राविकाओं ने तेरापंथ के दशवें अधिशास्ता प्रेक्षा प्रणेता के चरणों में श्रद्धायुक्त श्रद्धांजलि अर्पित की। साध्वीश्री विशदप्रज्ञाजी ने आध्यात्म के शिखर पुरुष को श्रद्धा सुमन अर्पित किए। साध्वीश्री प्रशमयशाजी, साध्वीश्री मंदानप्रभाजी गोगुन्दा तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री श्रीलाल खोखावत, श्री हीरालाल सुराना आदि ने आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति प्रणति निवेदित की।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, राजसमंद

आचार्य महाप्रज्ञ की छठी पुण्यतिथि पर कार्यक्रम

तेरापंथ धर्मसंघ के दशवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के छठे महाप्रयाण दिवस पर साध्वीश्री कनकश्रीजी (लाडनूं) के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, राजसमंद के तत्त्वावधान में राजसमंद स्थित अरिहंत पैलेस, ज्ञानचन्दजी मादरेचा के आवास पर एक कार्यक्रम श्रद्धा भक्तिपूर्वक मनाया गया। बहुश्रुत परिषद की सम्मान्य सदस्या साध्वीश्री कनकश्रीजी ने प्रज्ञापुरुष आचार्यश्री महाप्रज्ञ को अपनी असीम श्रद्धा समर्पित करते हुए कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जैसी आध्यात्मिक विभूतियां सदियों/सहस्राब्दियों बाद धरती पर जन्म लेती

हैं। महाप्रज्ञ विभिन्न विद्याशाखाओं के मर्मज्ञ विद्वान थे। इस अवसर पर साध्वीश्री द्वारा रचित भावपूर्ण गीत *लाखां आंखड़ल्यां ढूंढ रही, बै महाप्रज्ञ भगवान कठै* को मधुर स्वर देकर साध्वी मधुलताजी आदि साध्वियों ने जन सभा को भावविभोर बना दिया। बोधिस्थल राजसमंद के अध्यक्ष श्री सुरेशचन्द कावड़िया ने आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व और कर्तृत्व पर प्रकाश डाला। सभा के मंत्री श्री महेश लोढ़ा ने भावसुमन अर्पित किए।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, गंगाशहर

आचार्य महाप्रज्ञ की छठी पुण्यतिथि पर कार्यक्रम

तेरापंथ धर्मसंघ के दशवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के छठे महाप्रयाण दिवस पर साध्वीश्री कनकश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, गंगाशहर द्वारा शांतिनिकेतन सेवाकेन्द्र में कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञजी इस सदी के महान साधक और उच्च कोटि के संत मनीषी थे जिन्होंने अपनी साधना से सम्पूर्ण मानव जाति को अमूल्य अवदान प्रदान किये और उन अवदानों को आत्मसात कर जन मानस उनमें अपने जीवन की उज्ज्वलतम राह प्राप्त कर सकता है। साध्वीश्री जिनबालाजी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की पहचान महान योगी के रूप में हुई। उन्होंने आगमों का गहन अध्ययन करके ज्ञान का वह नवनीत निकाला, जिसकी आज महत्ती अपेक्षा है। उनका जीवन आलोक की रश्मियों से सरोबार था।

इस अवसर पर युवकरत्न श्री राजेन्द्र सेठिया साध्वीश्री निर्मलयशाजी, साध्वीश्री करुणाप्रभाजी, साध्वीश्री कुशलविभाजी, तेरापंथ महिला मंडल, तेयुप के श्री पीयूष लुनिया, श्री भंवरलाल डाकलिया, श्री चैनरूप छाजेड़ आदि ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री श्री किशन बैद ने किया।

तप अभिनंदन कार्यक्रम

गंगाशहर तेरापंथी सभा द्वारा शांतिनिकेतन सेवाकेन्द्र में साध्वीश्री कनकश्रीजी एवं साध्वीश्री जिनबालाजी के सान्निध्य में पिछले पूरे एक वर्ष से एकान्तर तप करने वाले भाई-बहिनों के लिए तप अभिनन्दन का कार्यक्रम

सूचना

तुलसी स्मृति ग्रंथ

जो समर्पित है...
उनकी प्रभावना को
उनके विचारों को
उनकी कहानियों को
और स्वयं उनको।

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष पर प्रकाशित तुलसी स्मृति ग्रंथ आगामी शताब्दियों के लिए अद्वितीय साबित होगा। अध्ययन और प्रेरणा का स्रोत बनेगा। ग्रंथ का आध्यात्मिक पहलू इसे अलौकिक बनाता है और संस्मरण जे जुड़ा भाग मानवीय पहलू दिखाता है।

तुलसी स्मृति ग्रंथ एडवांस बुकिंग पर ही उपलब्ध है। ग्रंथ का विक्रय मूल्य पैकिंग एवं कूरियर चार्ज सहित रु. 6500/- है।

कृपया स्मृति ग्रंथ के बुकिंग हेतु महासभा के प्रधान कार्यालय से संपर्क करें।

आयोजित किया गया। इस अवसर पर साध्वीश्री कनकश्रीजी ने तप की महता बतलाई। साध्वीश्री जिनबालाजी, साध्वीश्री निर्मलयशाजी ने तप की अनुमोदना की। आज के इस कार्यक्रम में एकान्तर तप करनेवाले कुल 11 ग्यारह जनों के पारिवारिक जनों ने तप अभिनन्दन के भाव प्रस्तुत किये। तेरापंथी सभा के मंत्री श्री किशन बैद ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखे।

सिवांची मालाणी क्षेत्रीय तेरापंथ संस्थान, बालोतरा

अक्षय तृतीया महोत्सव का भव्य समायोजन

साध्वीश्री कनकरेखा एवं साध्वीश्री संघप्रभा के पावन सान्निध्य में अक्षय तृतीया महोत्सव का भव्य समायोजन सिवांची मालाणी क्षेत्रीय तेरापंथ संस्थान में आयोजित किया गया। इस अवसर पर 90 तपस्वी भाई बहिनों ने उपवास व एकासन किया। साध्वीश्री कनकरेखाजी ने अपने संबोधन में कहा कि यह पर्व संस्कृति और अध्यात्म का पर्व है। कार्यक्रम में साध्वीश्री संघप्रभाजी ने भी अपने विचार व्यक्त किए। साध्वीवृन्द के मंगलगीत के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। भजन मंडली बालोतरा ने रोचक गीत की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला व कन्यामंडल, बालोतरा द्वारा भगवान ऋषभ की रोचक जीवन झांकी सुमधुर स्वरों के साथ प्रस्तुत की गई। सभा के अध्यक्ष श्री डूंगरचन्द भंसाली ने स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए संस्थान के बारे में जानकारी दी।

इस अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमण की सन 2012-13 की ऐतिहासिक यात्रा के संदर्भ में शासनसेवी श्री पुखराज तलेसरा द्वारा लिखी गई पुस्तक 'मरुधर में महाश्रमण' का विमोचन साध्वीश्री द्वारा किया गया। श्री तलेसरा ने पुस्तक के बारे में अपने विचारों की प्रस्तुति दी। सभी तपस्वी भाई बहिनों का बहुमान किया गया।

कार्यक्रम का संचालन मंत्री श्री गौतम बैदमुथा ने किया।

सिवांची मालाणी श्रावक सम्मेलन

साध्वीश्री कनकरेखा एवं साध्वीश्री संघप्रभा के पावन सान्निध्य में सिवांची मालाणी के श्रावकों का सम्मेलन संस्थान के भवन में आयोजित किया गया। साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र मंगलस्मरण के साथ कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। श्री अभयमति भंसाली ने तुलसी अष्ठकम की सुन्दर प्रस्तुति दी। साध्वीश्री कनकरेखा ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ विकासशील धर्मसंघ है। श्रावक श्रद्धाशीलता से, विश्वासपात्रता से एवं प्रयोगधर्मिता से जीवन में विकास के नये नये क्षितिज उद्‌घाटित कर सकता है। श्रावक अपने दायित्व का निर्वहण करते हुए स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकता है। साध्वीश्री संघप्रभा ने आदर्श श्रावक जीवन के घटनाक्रमों का उल्लेख किया। मुख्य वक्ता डॉ. सोहनराज तातेड़ ने कहा कि श्रावक वह होता है जिसकी चेतना में त्याग व संयम परिलक्षित होता है। इस अवसर पर संस्थान भवन में नवनिर्मित आचार्य तुलसी समवसरण का उद्‌घाटन किया गया, जो लगभग 10000 स्क्वायर फीट का है। साथ ही आचार्य तुलसी सभागार (2400 फीट) का भी मंगलपाठ के साथ उद्‌घाटन किया गया।

संस्थान के अध्यक्ष श्री डूंगरचन्द भंसाली ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। शासनसेवी श्री पुखराज तलेसरा व पूर्व अध्यक्ष श्री मांगीलाल भंसाली ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी। आचार्य तुलसी समवसरण के प्रायोजक शा. भेरचन्द नारायणचन्द गोगड़ परिवार की स्मृति चिह्न व चुन्दग आदि प्रदान कर सम्मानित किया गया। आचार्य तुलसी सभागार के प्रयोजक शा. डूंगरचन्द सुदेशकुमार गौतमकुमार भंसाली परिवार, जसोल को भी साफा चुन्दरी व स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। संस्थान के संरक्षकों को भी स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में संस्थान के सदस्यगण के साथ क्षेत्रीय सभा, जसोल, बालोतरा, असाडा, टापरा, आसोतरा, बाड़मेर, कानाना, पारलू, पचपदरा आदि के पदाधिकारी तथा तेरापंथ महिला मंडल, युवक परिषद के पदाधिकारीगण और संस्थान के पूर्व अध्यक्ष, संरक्षकगण, परामर्शक विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री श्री गौतम वेदमुथा ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, चेन्नई

साध्वीवृंद के चेन्नई में मंगल प्रवेश पर कार्यक्रम

दिनांक 6 मई 2015 को साध्वीश्री डॉ. पीयूषप्रभाजी, साध्वी भावनाश्रीजी, साध्वी सुधाकुमारीजी और साध्वी दीप्तियशा का चेन्नई में मंगल प्रवेश हुआ। इस मंगल अवसर पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्रावक समाज को सम्बोधित करते हुए साध्वीश्रीजी ने कहा कि इस चातुर्मास में हर श्रावक ज्ञान से, दर्शन से और तप से सम्पन्न बने। उपनगरीय यात्रा में त्याग-प्रत्याख्यान की लहर आए। समाज का हर सदस्य अध्यात्म के क्षेत्र में विकास करे, यही मंगलकामना है। साध्वी दीप्तियशाजी ने कहा कि आज जरूरत है प्रत्येक व्यक्ति मन और भावों का परिष्कार करे। सभाध्यक्ष श्री तनसुख नाहर, महिला मंडल अध्यक्षा श्रीमती कमला गेलड़ा, तेरापंथ एज्यूकेशन एण्ड मेडिकल ट्रस्ट के चेयरमेन श्री प्रकाश मुथा, अणुव्रत समिति के मंत्री श्री राजेन्द्र भंडारी ने अपनी संस्थाओं की ओर से साध्वीवृन्द के प्रति मंगलकामना अभिव्यक्त की। श्री अशोक मुथा ने

सूचना

केन्द्रीय उपासक प्रशिक्षण शिविर

(दिनांक 04 अगस्त से 14 अगस्त 2015)

परम पूज्य गुरुदेव के पावन सान्निध्य में एवं जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में आगामी 04 अगस्त से 14 अगस्त 2015 तक विराटनगर में उपासक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन होने जा रहा है।

नए उपासक बनने वालों के लिए

दिनांक 04 अगस्त को मध्याह्न में प्रवेश परीक्षा आयोजित होगी। प्रवेश परीक्षा में चयनित भाई-बहनों को ही शिविर में प्रवेश दिया जा सकेगा। प्रशिक्षण के पश्चात 12 अगस्त को चयन प्रक्रिया (परीक्षा) होगी।

सहयोगी से प्रवक्ता उपासक बनने वालों के लिए

जो सहयोगी उपासक दो बार या उससे अधिक पर्युषण यात्रा कर चुके हैं एवं प्रवक्ता उपासक बनना चाहते हैं उनके लिए निर्धारित पाठ्यक्रमानुसार लिखित, वक्तृत्व शैली व समूह-चर्चा (Group Discussion) इन तीन रूपों में चयन प्रक्रिया होगी। 12 अगस्त को लिखित परीक्षा संभावित है। प्रवक्ता उपासक बनने के इच्छुक भाई-बहन 08 अगस्त तक वहां पहुंचने का लक्ष्य रखें।

सम्मेलन व सेमिनार

दिनांक 12-13-14 अगस्त 2015 को उपासक सम्मेलन व 'अहिंसा दर्शन' पर सेमिनार का आयोजन किया गया है। इसमें सहयोगी व प्रवक्ता सभी उपासक भाग ले सकते हैं।

इस बारे में अधिक जानकारी के लिए उपासक श्रेणी के राष्ट्रीय संयोजक डालिमचन्द नौलखा - 09327071376 एवं सह-संयोजक महाबीर प्रताप दुगड़ - 09331019455 पर संपर्क किया जा सकता है।

कमल कुमार दुगड़
अध्यक्ष

विनोद बैद
महामंत्री

आगन्तुक लोगों का स्वागत किया एवं साध्वीश्रीजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की। सेवा प्रभारी श्री नथमल आच्छा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा के सहमंत्री श्री विमल चिप्पड़ ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, बल्लारी (कर्नाटक)

बल्लारी में साध्वीवृंद का मंगल प्रवेश

साध्वी कुन्थुश्रीजी तेरापंथ भवन से विहार कर श्री मंगल नाहर के निवास स्थान पर पधारीं। रात्रिकालीन कार्यक्रम में नगर परिषद के पार्षद श्री राजशेखर गोड़ा, श्री मलन गोड़ा, श्रीमती गोड़ा, भूतपूर्व पार्षद श्री रमेश गोड़ा, राईसमील एसोसियन के अध्यक्ष तथा गायक श्री गोविन्द आदि विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित हुए। सभा के उपाध्यक्ष श्री मंगलचन्द नाहर ने कन्नड़ भाषा में सभी अभ्यागत का स्वागत किया। श्री पारसमल खिवेंसरा ने जैन धर्म और तेरापंथ के विषय में कन्नड़ भाषा में जानकारी दी। साध्वीश्री कुन्थुश्रीजी ने कहा कि जीवन में ईमानदारी, प्रामाणिकता, सदाचार, नैतिकता, सद्भावना आदि गुणों का विकास हो। बल्लारी धार्मिक क्षेत्र है। लोगों में संतों के प्रति आकर्षण है, जिज्ञासा है, श्रद्धा भक्ति भावना से भरपूर हमारा प्रवास संघ प्रभावक रहा। साध्वी सुमंगलाश्रीजी, साध्वी सुलभयशाजी ने गीत के द्वारा अपने भावों की प्रस्तुति दी। सभा के उपाध्यक्ष श्री बसन्त छाजेड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया और धन्यवाद ज्ञापन श्री दीपक नाहर ने किया।

आचार्य महाप्रज्ञ का छठा महाप्रयाण दिवस

तेरापंथ सभा, बल्लारी के तत्त्वावधान में साध्वी कुन्थुश्रीजी के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ का छठा महाप्रयाण दिवस रामपुरा कॉलेज के विशाल मैदान में आयोजित हुआ। सभा के अध्यक्ष श्री निर्मल कोठारी ने सभी का स्वागत करते हुए अपने विचार प्रस्तुत किये।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा

तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन

14-15-16 अगस्त 2015 विराटनगर (नेपाल)

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में आचार्य श्री महाश्रमणजी के सान्निध्य एवं दिशानिर्देशन में **तेरापंथी सभा प्रतिनिधि सम्मेलन 2015** का त्रिदिवसीय आयोजन 14-15-16 अगस्त, 2015 को विराटनगर (नेपाल) में आयोजित किया जा रहा है।

सम्मेलन में सभी सभाओं के वरिष्ठ पदाधिकारियों की उपस्थिति सादर प्रार्थित है। सम्मेलन के विभिन्न कार्यक्रमों के दौरान संघीय व सामाजिक गतिविधियों के संबंध में विशद चर्चाएं होंगी।

उक्त अवसर पर महासभा से एफिलियेटेड तेरापंथी सभाओं में से निर्धारित अर्हताओं के आधार पर **एक श्रेष्ठ सभा** एवं **दो विशिष्ट सभाओं** का चयन भी किया जाएगा।

कमल कुमार दुगड़
अध्यक्ष

विनोद बैद
महामंत्री

साध्वी कुन्थुश्रीजी ने अपने मंगल उद्‍बोधन में कहा कि आचार्य महाप्रज्ञजी अध्यात्म जगत के उज्ज्वल नक्षत्र थे। साध्वी कंचनरेखाजी, साध्वी सुमंगलाश्रीजी, साध्वी सुलभयशाजी से सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। विशिष्ट अतिथि श्री चन्द्रशेखरजी, श्री मन्जनाश्री, प्रिंसिपल डी डी कॉलेज, श्री महाराजन आई.टी.आई. कॉलेज एवं रामपुरा कॉलेज के 300 छात्र एवं बल्लारी का तेरापंथी समाज उपस्थित हुआ। श्री पारसमल खींवसेरा, विशिष्ट अतिथि श्री चन्द्रशेखर ने कन्नड़ भाषा में आचार्य महाप्रज्ञजी के श्रद्धासिक्त विचार प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा के उपाध्यक्ष श्री बसन्त छाजेड़ ने किया। आभार ज्ञापन श्री संजय छाजेड़ ने किया।

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, हुबली

भगवान महावीर का 2614वाँ जन्म कल्याणक समारोह

तेरापंथ भवन हुबली में मुनिश्री ज्ञानेन्द्रकुमारजी आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में भगवान महावीर का 2614वाँ जन्म कल्याणक समारोह बड़े हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। समारोह में जालना, मैसूर, धुलीया, बैंगलोर, कोल्हापुर, बेलगांव, धारवाड, गदग, कोप्पल, गंगावती सवदत्ती से पधारे हुए मेहमान उपस्थित थे। मुनिश्री ज्ञानेन्द्रकुमारजी ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए फरमाया कि तीर्थंकरों के जन्म दिन को जन्म जयन्ती के नाम से नहीं पुकारा जाता, बल्कि जन्म कल्याण के रूप में मनाया जाता है। उनके पांच कल्याणक होते है। गर्भधारण, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान एवं मोक्ष। इन पाँचों समय पूरे लोक में दिव्य प्रकाश होता है। इस अवसर पर मुनिश्री विमलेश कुमारजी एवं मुनिश्री सुबोध कुमारजी ने रोचक एवं प्रभावक प्रस्तुति दी। बाहर से पधारे हुए मेहमानों का स्वागत सभा अध्यक्ष श्री पारसमल बाफना ने साहित्य प्रदान करके किया। आभार ज्ञापन सभा के सहमंत्री श्री महेन्द्र पालगोता ने किया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति के मंत्री श्री केशरीचन्द गोलच्छा ने किया। शाम को धम्म जागरणा का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें भगवान महावीर एवं आचार्य भिक्षु के गीतों का संगान किया गया। ■

जैन भारती का अभ्युदय के साथ संयुक्त रूप से प्रकाशन

महासभा द्वारा एक सर्वांगीण पत्रिका के रूप में **जैन भारती** का प्रकाशन मार्च, 2015 से किया जा रहा है, जिसमें जैन भारती और अभ्युदय दोनों को सम्मिलित कर दिया गया है। इसके प्रथम भाग में जैन भारती और द्वितीय भाग में अभ्युदय से संबंधित विषय शामिल हैं।

द्रष्टव्य है कि महासभा के आजीवन सदस्यों को मई, 2015 के इस अंक तक ही जैन भारती निःशुल्क भेजी जाएगी।

निवेदन है कि महासभा के सभी आजीवन सदस्य जून, 2015 से कृपया 200 रुपये का वार्षिक सदस्यता शुल्क या 2100 रुपये का आजीवन सदस्यता शुल्क प्रदान कर **जैन भारती** के ग्राहक बनकर इसकी आध्यात्मिक-साहित्यिक संपदा का लाभ उठाएँ और साथ ही संघीय गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करें।

कमल कुमार दुगड़
अध्यक्ष

महासभा की विभिन्न प्रवृत्तियों में अनुदान की राशि निम्नलिखित अनुदानदाताओं से अथवा उनके सद्प्रयासों एवं प्रेरणा से प्राप्त हुए। (दिनांक : 01.04.2015 से 30.04.2015)

नेपाल आपदा राहत सहायता कोष (19.05.2015 तक)

11,00,000/- श्री बुधमल दुगड़ परिवार, रतनगढ़-कोलकाता
11,00,000/- श्री मूलचन्द विकास कुमार मालू, सरदारशहर-दिल्ली
11,00,000/- श्री विनोद बैद, छापर-कोलकाता
11,00,000/- श्री सम्पतमल सचिन बच्छावत, सरदारशहर-जयपुर
11,00,000/- श्री सुरेन्द्र बोरड़ (पटावरी), बेल्जियम
5,00,000/- श्री नरेन्द्र कुमार सुराणा, कोलकाता
5,00,000/- श्री तेजकरण सुराणा, दिल्ली
3,00,000/- हरकचन्द कांकरिया चैरीटेबल ट्रस्ट, कोलकाता
3,00,000/- श्री रतनलाल बसन्त कुमार पारख, कोलकाता
2,00,000/- श्री बाबूलाल बोथरा, कोलकाता
2,00,000/- श्री भंवरलाल बैद, कोलकाता
2,00,000/- श्री भीखमचन्द पुगलिया, कोलकाता
2,00,000/- श्री रणजीत सिंह कोठारी, कोलकाता
2,00,000/- श्री कमल किशोर ललवानी, कोलकाता
2,00,000/- श्री हनुमान मल पींचा, कोलकाता
1,21,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, टोहाना
1,11,111/- श्री रमेशचन्द गोयल, कोलकाता
1,01,101/- श्री कुन्दनमल चोरड़िया, कोलकाता
1,00,000/- श्री हेमन्त कुमार दुगड़, कोलकाता
1,00,000/- श्री खेमचन्द रामपुरिया, कोलकाता
1,00,000/- श्री मानक नाहटा, कोलकाता
1,00,000/- श्री कन्हैयालाल पटावरी, कोलकाता
1,00,000/- श्री धर्मेन्द्र डागा, कोलकाता
1,00,000/- महाप्रज्ञ अध्यात्म एण्ड एजुकेशनल फाउन्डेशन, कोलकाता
1,00,000/- रतनलाल सिरोहिया चैरीटेबल ट्रस्ट, कोलकाता
1,00,000/- श्री जंवरीमल बैंगानी, कोलकाता
1,00,000/- श्री कुन्दनमल बैद, कोलकाता
1,00,000/- श्री नोरतमल बोथरा, कोलकाता
1,00,000/- श्री अमरचन्द दुगड़, कोलकाता
61,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, कुड्डालोर
60,800/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, दुर्गापुर
51,000/- सेठ सम्पतराम बी.दुगड़ चैरीटेबल ट्रस्ट, कोलकाता
51,000/- श्री नरेन्द्र बरड़िया, कोलकाता
51,000/- श्री विनोद मरोठी, कोलकाता
51,000/- श्री राजकरण दफ्तरी, किशनगंज
50,000/- श्रीमती चन्दादेवी विमल कुमार दुगड़, कोलकाता
40,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, भटिंडा
35,000/- श्रीमती नीलम पटावरी, कोलकाता
31,000/- श्री अभय भूरा, कोलकाता
31,000/- श्री शुभकरण दुगड़, कोलकाता
25,000/- श्री विमल कुमार फूलफगर, कोलकाता
21,500/- श्री शरद गोलछा, कोलकाता
21,000/- श्री राजकुमार प्रकाश विकास बरड़िया, चुरु-कोलकाता

21,000/- श्री रतनलाल अग्रवाल, कोलकाता
21,000/- श्री हंसराज बैद, कोलकाता
21,000/- श्री तुलसी राम प्रदीप कुमार खटेड़, कोलकाता
21,000/- श्रीमती नीलम जैन, कोयम्बटूर
21,000/- श्री चैनरूप हेमन्त कुमार हीरावत, कोलकाता
21,000/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रिसड़ा
16,751/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, सवाई माधोपुर
15,000/- श्री राजकुमार बांठिया, हावड़ा
11,000/- श्री जतनमल गेलड़ा, कोलकाता
11,000/- श्री बाबूलाल गंग, कोलकाता
11,000/- श्री नरेन्द्र कुमार भंसाली, हावड़ा
11,000/- श्री पी.आर. कुचेरिया, दिल्ली
11,000/- श्री आलोक कुमार दुगड़, कोयम्बटूर
11,000/- श्री प्रताप सिंह विकास कुमार चोरड़िया, कोलकाता
11,000/- श्री पंकज राय सेठिया, कोलकाता
11,000/- श्री नरेन्द्र कुमार सरला दुगड़, कोलकाता
11,000/- श्री विक्रम सिंह बैद, दुर्गापुर
11,000/- श्रीमती सरोज देवी दुगड़, उत्तरपाड़ा
11,000/- श्री नरपत सिंह दुगड़, बेलुड़
11,000/- श्रीमती विमला देवी पारख, चुरु-कोलकाता
10,000/- श्री हरीश नवानी, नई दिल्ली
9,000/- श्री शिवनारायण मल्ल, कोलकाता
7,000/- श्री केवलचन्द एन. बोहरा, भीलवाड़ा
5,500/- श्री ताराचन्द जैन, हावड़ा
5,100/- श्री बाबूलाल सुराणा, कोलकाता
5,100/- श्री सुरेन्द्र सेठिया, कोलकाता
5,100/- श्री धर्मचन्द श्यामसुखा, हावड़ा
5,100/- श्री मनोज कुमार लूनिया, हावड़ा
5,100/- श्री संजय कुमार अजय कुमार बाफना, हावड़ा
5,100/- श्री बच्छराज बोथरा, हावड़ा
5,100/- श्री रतनलाल सेठिया, कोलकाता
5,100/- श्री प्रवीण कुमार जैन, हावड़ा
5,100/- श्री रणजीत सिंह चोरड़िया, कोलकाता
5,100/- श्री संजय लूनिया, कोलकाता
5,100/- श्री ओमप्रकाश गोलछा, जोधपुर
5,100/- श्री मांगीलाल जीरावला, जोधपुर
5,100/- श्री दौलत सिंह भंडारी, जोधपुर
5,100/- श्री पदमचन्द कांकरिया, जोधपुर
5,100/- श्री उम्मेदमल सिंघवी, जोधपुर
5,100/- मेसर्स मारवाड़ एक्सपोर्ट एण्ड इम्पोर्ट, जोधपुर
5,100/- श्री दशरथमल भंडारी, जोधपुर
5,100/- श्री पोकरचन्द जीवराज जैन, जोधपुर
5,100/- श्री सुमेरमल अशोक कुमार दीपक कुमार जैन, जोधपुर
5,100/- श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, रायसिंहनगर
5,100/- मेसर्स क्वालिटी कार्पोरेशन, जोधपुर
5,100/- मेसर्स लेहरिया रिसोर्ट प्रा. लि., जोधपुर
5,100/- श्री मानचन्द चोधरी, जोधपुर
5,100/- श्रीमती आशा जैन, जोधपुर
5,000/- श्री विनय कुमार बैद, हावड़ा
5,000/- श्री पन्नालाल भंसाली, कोलकाता
5,000/- श्री विशाल जयसवाल, कोलकाता
5,000/- श्री दिलीप कुमार चोरड़िया, कोलकाता
5,000/- श्रीमती मंजू पारख, कोलकाता
5,000/- श्रीमती ट्विंकल बापना, झालरपाटन
2,100/- श्री राजेन्द्र कुमार सुराणा, कोलकाता

2,100/- श्रीमती कंचन भंसाली, कोलकाता

2,100/- मेसर्स जैन खेमका एण्ड एसोसिएट्स, दुर्गापुर

2,100/- श्री प्रकाशचन्द छाजेड़, जोधपुर

2,100/- मेसर्स भंडारी ब्रदर्स, जोधपुर

1,700/- श्री अशोक कुमार भंडारी, जोधपुर

1,100/- श्री राजेन्द्र कुमार पेड़िवाल, कोलकाता

1,100/- श्री ताराचन्द सुराणा, कोलकाता

1,100/- श्रीमती मंजूलता मुसरफ, हावड़ा

1,100/- श्री सुरेन्द्र गोगड़ (जैन), भिवंडी

1,100/- मेसर्स साईं ऑटो मोबाईल्स, दुर्गापुर

1,100/- श्री विमल लूनिया, जयपुर

1,100/- श्री नरेश कुमार नाहटा, कोलकाता

1,100/- श्री संजीव कुमार श्यामसुखा, विजयनगरम्

1,000/- श्री मनीष मणोत, कोलकाता

1,000/- श्री अरुण कुमार नाहटा, कोलकाता

501/- श्रीमती सुमन देवी बैद, हावड़ा

501/- श्रीमती मंजू कोठारी, हावड़ा

501/- श्री मनोज मुसरफ, हावड़ा

आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी समारोह

1,00,000/- श्री राजकरण संजय विकास जैन (पींचा), सिकन्दराबाद

स्मारक स्थल

1,11,000/- श्री अमरचन्द झब्बरमल दुगड़, कोलकाता

महासभा की विविध गतिविधियों हेतु

11,000/- श्रीमती चंचल देवी घोड़ावत, कोलकाता

7,100/- श्री महेन्द्र, महेश, कमल सुराणा, कोलकाता

5,100/- श्री विजय सिंह टांटिया, कोलकाता

5,100/- श्री पारस बोहरा, कोलकाता

शताब्दी अक्षय निधि कोष के अप्रैल - 2015 के सहयोगी

11,000/-श्री विमल कुमार जैन (खटेड़), कोलकाता
11,000/-श्री करण सिंह, पदम सिंह, नरपत सिंह चोपड़ा, कोलकाता

अप्रैल तक घोषित राशि रु. 5,25,25,224/-
अप्रैल तक प्राप्त राशि रु. 3,80,28,224/-

सचित्र कॉइन युक्त स्मारिका अप्रैल - 2015 तक 7796 नग बिक्री की गई है। सचित्र कॉइन युक्त स्मारिका से संगृहित राशि का नियोजन शताब्दी अक्षय निधि कोष में किया जा रहा है।

सूचना

केंद्रीय संवादों के आदान-प्रदान हेतु जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा का शिविर कार्यालय परम श्रेद्धय आचार्य श्री महाश्रमण की सेवा में संलग्न है। आचार्यप्रवर के नेपाल प्रवास के दौरान शिविर कार्यालय के संपर्क सूत्र इस प्रकार रहेंगे - श्री हेमन्त बैद - + 977 98010 96960

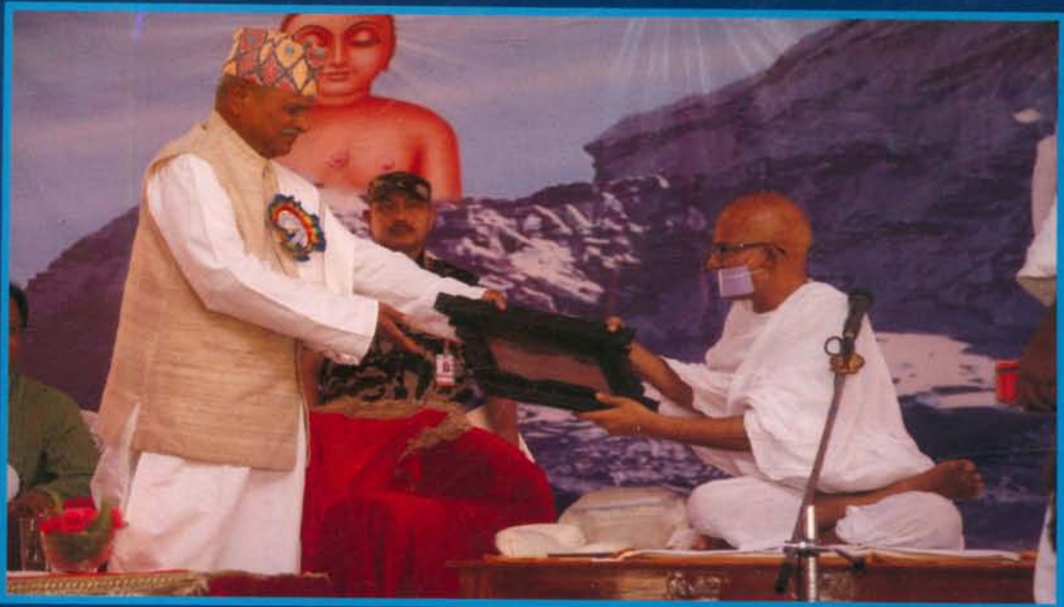

प्राचीन ऋषि परंपरा के संवाहक और प्रेरणास्रोत हैं आचार्य महाश्रमण

भगवान महावीर के सिद्धांतों के आधार पर आजीवन संन्यासव्रत धारण करने वाले आचार्य महाश्रमण हम सबके लिए प्रेरणा के स्रोत हैं। प्राचीन ऋषि परंपरा के वर्तमान संवाहक अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्य महाश्रमण का नेपाल आगमन नेपाली मानस में शांति का संदेश फैलाकर विकास की ओर अग्रसर करने में बहुत मददगार होगा, ऐसी आशा है। अहिंसा यात्रा के तीन मूल उद्देश्य मानव जीवन में करुणा, ईमानदारी और विवेक का विकास करते हैं, सुविचार का बीजारोपण करते हैं। हमारे समाज, देश और उसे संचालित करने वाले नेतृत्व और राजनीतिक दलों के लिए ये गुण अति महत्त्वपूर्ण हैं, ऐसा मैं अनुभव करता हूं। आचार्यश्री ने अहिंसा यात्रा में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति का संदेश दिया है। कम से कम हम और हमारी राजनैतिक पार्टियां भी सद्भावना के संदेश का मनन करें और हम सब नैतिक बनकर तथा नशामुक्त रहकर राष्ट्र का निर्माण करें। अहिंसा यात्रा से भारत और नेपाल के मैत्री संबंध और अधिक प्रगाढ़ होंगे तथा महाश्रमण के नेपाल भ्रमण से नेपाल में आध्यात्मिक पर्यटन के नए द्वार उद्घाटित होंगे। ईश्वर, ऋषि-मुनि, गुरुवर, समाजसेवी और सर्वसाधारण - इन सबका सम्मान करते हुए मानवीय मूल्यों को ही जीवनशैली बनाने का लक्ष्य लेकर चलनेवाला तेरापंथ जैन धर्म हम सबको आत्मशुद्धि की प्रेरणा देता है।

श्री रामवरण यादव
महामहिम राष्ट्रपति, नेपाल

अहिंसा यात्रा

सद्भावना • नैतिकता • नशामुक्ति

भारत नेपाल भूटान

WITH REVERENCE

urja

B. N. GROUP

VINOD ARIHANT BAID FOUNDATION

FORT® GROUP
The Fourth Dimension of Space

BMD
BMD GROUP OF COMPANIES
KBD Foundation
Budhamall Surendra Dugar Foundation
Budhamall Tulsi Dugar Foundation
Budhamall Kamal Dugar Foundation

Himachal Futuristic Communications Ltd.

BENGAL ENERGY

SUBHKAM VENTURES

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा
(ISO 9001 : 2008 प्रमाणित संस्था)

3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता - 700 001
दूरभाष : 2235 7956, 2234 3598, फैक्स : 033 2234 3666
email: info@jstmahasabha.org